
दत्त-वती
श्री सुरेन्द्र झा सुमन

दत्त-वती

(महाकाव्य)

●

(पूर्व खण्ड)

●

रचयिता

श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'

प्रकाशक—

मैथिली-मन्दिर

राजकुमारगंज, दरभंगा।

मूल्य— १५ (पन्द्रह टाका) मात्र।

मुद्रक—

मिथिला प्रेस, दरभंगा।

संस्करण १९७८

Scanned by CamScanner

उपादान—

द्रष्टा-स्रष्टा समन्वित रूपें कवि;
कविक शक्ति कवित्व,
कवि-स्फुरण कविता,
कवि-कर्म काव्य।

एना जँ विश्लेषित कयल जाय तँ क्रमहिं—

सुभाषितमे कवित्व-प्रतिभा,
मुक्तक-गीतमे कविता-व्युत्पत्ति,
ओ प्रबन्ध-काव्यमे कवि-कर्मक पूर्णता देखल जा सकैछ।

अव्युत्पन्नो विलक्षण उक्ति कहि सकैत छथि,
अनभ्यस्तो मुक्तकक मुक्तामाला गाँथि सकैत छथि,
किन्तु प्रबन्ध-काव्यमे तँ—'इति हेतुस्तदुद्भवे'—प्रतिभा, व्युत्पत्ति, अभ्यास तीनूक समन्विते व्यक्तित्व अधिकृत भऽ सकैत छथि।

... ...

पुरावृत्तक ऐतिहासिकता तथ्य-परक रहैछ, काव्यक कलात्मकता कल्पनाश्रित चलैछ। यदि दूहूक प्रयोजनानुसारी संगमन हो तँ

कोनो कृति रस-व्यञ्जकता प्राप्त कऽ लैछ। जेना आतपित दिवा ओ शीतशोलित निशा संगमित भेने सन्ध्या-प्रभातक रञ्जकता व्यक्त करैछ।

... ...

पात्र ओ घटनामे जें ओ अतीतकालीन अछि तें, तद्युगीन परिवेश रहब स्वाभाविके। किन्तु जाहि कालमे रचना प्रस्तुत होइछ, तदनुकूल समसामयिक भावनाक प्रतिफलनो समुचिते। कृति-कृतीमे जं सामंजस्य नहि रहय, अतीतमे वर्तमान प्रतिबिम्बित नहि होअय, अथच वर्तमानमे भविष्यक आभास नहि भेटय तँ कोनो कृतिकें कालजयी कहबाक लालसा गगन-कुसुमे सिद्ध होयत।

... ...

देश-स्वदेश-विदेश जेना एके मूल धातुक दिशा बोध दैछ, तहिना व्यष्टि-समष्टि-सृष्टि सभ एके प्रत्ययक शोध करैछ। तें यदि ओहि अनुगमें रचना-प्रक्रियाकें क्षेत्रीय-राष्ट्रिय-जागतिक सविशेष-निर्विशेष जाहि कोनो विशेषणसँ परिचय दी तँ ताहिमे कोनो असंगति नहि।

....

शास्त्रक लक्ष्य जं ज्ञान-विज्ञानक वैचारिक वैध शासन अछि, तँ काव्य-कला लोक-जीवनक व्यावहारिक अनुशासन-अनुपालन थिक। तें दुहूमे सामञ्जस्य रखनिहार कोनो कृतिकें शास्त्रीय काव्यक परिधान दी तँ ताहिमे कोन आपत्ति ?

साहित्यकें तँ शास्त्र-समुच्चये कहल जाइछ। साहित्य-काव्य तँ पर्याये थिक। तें तँ कहलो अछि—'न सा विद्या न सा कला जायते यन्न काव्याङ्गम्'।

... ...

कथा-वस्तुक आधारहुक प्रसङ्ग प्रयोजनीय रहल जे पुराणेतिहासक ख्यात वृत्त मान्य रहओ, परञ्च लोक-कथा--जे परम्परया 'न ह्यमूला प्रसिद्धि :' कहि ऐतिह्य रूपें प्रमाण कोटिमे गृहीत रहल अछि, तकर अमान्यता कोना ?

काव्येतिहास-रचयिता रामायण-महाभारतकार बाल्मीकि-व्यासक पंक्तिमे वृहत्कथाकार गुणाढ्यक आढ्यता पूर्वहु आर्यासप्तशतीकार आचार्य गोवर्धन कइए गेल छथि--'रामायण-महाभारत-बृहत्कथानां कवीन् नमस्कुर्मः।'

....

'दत्-वती' नाम भ्रामक नहि हो तें पहिने कहि देब आवश्यक जे ई कोनो कृदन्त क्रियापद अथवा नायिकाक नाम-विशेष्य नहि। ई तँ मृगाङ्कदत्त नायकक 'दत्त' एवं नायिका शशांकवतीक 'वती' नामान्त-खण्डसँ सम्पृक्त अछि।

पुनः शक्ति-शक्तिमानक क्रमें सीताराम, राधाकृष्ण, गौरी-शङ्कर जकाँ नायिका नामक पूर्वान्वयक आग्रही ई बुझि अनुग्रह करथि जे एहिमे मुख्यताक आधार पर नाम ख्यापित भेल अछि, जेना नल-दमयन्ती, विक्रमोर्वशीय, नर-नारी आदि।

एहि प्रसंग 'उत्तरा'मे नम्र निवेदन कय आयल छी जे जेना नाटिकामें नायिकाक प्रधानता रहैछ ओ नाटक मे नायकक, तहिना की क्षति जे खण्डकाव्यमे नायिका मुख्यता पाबथु ओ महाकाव्यमे नायक ? किन्तु दुहुक समन्वित 'तनु हिक दाहिन ओ वाम। दिनकर ओ हिमधाम' रहबो वांछिते।

× × × ×

एहि आदान-उपादानक दृष्टिएँ मादृश व्यक्ति रचना-सन्धानक से साहसो नहि होइत यदि च तत्कालीन घटना सब प्रेरक नहि बनैत।

स्वाधीनताक बादक दोसरे दशकसँ देशक अन्तरङ्ग ओ बहिरङ्गक स्थिति समीक्षकक समक्ष अछि—देशक सीमा-संकोच, राजनीतिमे पद-लिप्सा, राष्ट्रक प्रति कर्तव्यक स्थानमे अधिकार-लोलुपता तथा पड़ोसी देशक विद्वेषी बसात विदेशी शक्तिक छद्म आघात, अथापि प्रतिरक्षाक प्रसंग सुरक्षा-साधनमे शिथिलता ! सत्याग्रहक नामपर हठधर्मिता, अहिंसाक नामपर कायरता, धर्म-धारणाक स्थानमे साम्प्रदायिकता आदि तेना कुचक्र चंक्रमित होइत गेल जे आहत राष्ट्रक चेतनाकें सहसा झकझोरि देलक ! एक बेर पुनः राष्ट्रियताक जागरणक हेतु नागरिकताक भावनाकें, नव सांस्कृतिक चेतनाकें, पुनः अपन गौरवमय परम्पराक अनुकूल जगाओल जयबाक आवश्यकता जन-मानसक स्तर-स्तरमे अनुभूत भेल एहि लेल राजनीतिक, सामाजिक जे किछु विभिन्न रूपक योजना, विकास-साधना चलि रहल अछि ओहो संग शब्द-चेतनाक योग सेहो अपेक्षित, विभिन्न जन-जनपद, विभिन्न भाषा-साहित्य ओ विभिन्न कला विधाक समन्वित सहभागिता आकांक्षित । एहि सब गुनिधुनिमे एहन कथा-गाथा, पात्र-चरित्र एवं परिस्थितिक परिवेशक अन्वेषणमे छलहुँ । तावत् संयोगवश कथासरित्सागरक एक प्रसंग दृष्टिगोचर भेल जाहिमे नायक एहन भेटलाह जनिका भारतक चतुःसीमामे घुमाओल जा सकैछ, युद्धशास्त्रक सन्धि-विग्रहक स्थितिसें समन्वित कयल जा सकैछ, शासन-अनुशासनक, संगठनमे, राजनीतिसँ लय समाजरीतिमे हुनक व्यक्तित्वकें उभारल जा सकैछ । विदेशी आक्रमणक प्रसंगो 'अयोध्यामरुणद् यवनः' एहि पातञ्जल प्रयोगसँ, तत्कालीन परिवेशमे देखाओल जा सकैछ । तथा उक्त कालावधिमे, ईसाक पूर्ववर्ती शताब्दीमे, अवध-उज्जयिनीक प्रकर्ष-अपकर्ष दुहू संग संगत भऽ सकैछ । ओ देशद्रोही द्वारा विदेशी आक्रामकक आह्वानक परिणामो देखाओल जा सकैछ ।

तदनुकूले रचनाक प्रक्रिया सातम दशकहिमे प्रारंभ भेल । परंच दुर्योग वश मध्य-मध्य शैक्षणिक, सामाजिक एवं राजनैतिक

चंक्रममे चक्कर कटैत रहने, रचनामे रहि-रहि कऽ गतिरोध होइत रहल । बीचमे कदाच अवसर भेटने, कखनहु कने क्षण भेटने, रचना-कण बिछैत चुनैत रहलहुँ । परंच ओकरा पूर्णतापर पहुँचयबाक अवसर नहि भेटि रहल छल । अतएव एखन धरि जतबा जे भए सकल तकरे, अनेक सुहृद-सहृदक आग्रहें, तत्काल पूर्वखंड मात्रे, प्रकाशनमे दऽ देल अछि ।

पुनः उत्तरखण्डक संग एकरा पूर्ण करबाक भार ओही पूर्ण प्रभुपर समर्पित अछि जे अपूर्ण हुकें पूर्ण बनबैत छथि ओ पूर्णहुकें अवशेष रखैत छथि--

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।

विजया-पर्व, —श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'
१९७९ ई०



सर्गानुसारी विषयानुक्रम

[पूर्व खण्ड]

दलपती

(पूर्व खण्ड)

'पश्य देवस्य काव्यं
न ममार न जीर्यति ।'

([illegible])

दत्त-वती

[महाकाव्य]



प्रथम सर्ग

(आमुख)

चेतन अवचेतन चितहिक, तनुहिक दाहिन ओ वाम ।
परम ज्योतिहिक युग्म शिखा थिक दिनकर ओ हिमधाम ॥ १
शब्द अर्थ दुइ दिशा उक्तिहिक, दिन-रजनी मिलि काल ।
नर-नारी शिव-शिवा अर्ध-नारीश्वर जयतु त्रिकाल ॥ २
जयतु भारती भारत-वाणी कल्याणी जय देवि ।
पद पदार्थ हित कृतहु समस्त समर्थ अहँक पद सेवि ॥ ३
जयतु सभ्यता-संस्कृति-बाहिनि दाहिनि कवि सुरधेनु ।
सरस्वती रसवती भरथु स्वर दत्त-वती पद वेनु ॥ ४
मातृ-गिरा सत्कार हेतु ई थिक अर्चा उपचार ।
कवि पूजक, केवल केवल मैथिली सुमन उपहार ॥ ५

कथा कौतुकी कला रीति मत नव्य भव्य शुचि सार ।
पाबथु रस प्रसाद भावुक जन पूरथु सरुचि हकार ॥ ६
सगुण रूपहि क भजन करथि जे तनि' हित रस साकार ।
निर्गुण निष्कल गुनथि तनिक लग सहजहिँ शून्याकार ॥ ७
दीप्ति हेतु जनि' नयन अरुन तनिका तपन क अनुमान ।
तृप्ति लेल दृग चातक जनिक करथु स्वाति क सम्मान ॥ ८
कवि क कर्म थिक शशिकर शीकर रसिक चकोर क प्रान ।
दोषाकर बुझि मुद्रित दृग से पंकज स्वयं न आन ॥ ९
कवि क कर्म थिक दिनकर · किरणे जगत क दृग-आलोक ।
आतप वारण करथि छत्रधर अपनहि छायालोक ॥१०
स्वाति क बिन्दु पड़य शुक्ति क मुख मुक्ता झलकय अंग ।
फणि क बदन कण पड़इछ, भरइछ दुर्वह गरल तरंग ॥११
वचनावलि रचना मे हृदय क बिम्बित रस आदर्श ।
साधारणीकरण कवि भावुक तुलित भाव निष्कर्ष ॥१२

× × × ×

(अवतरणिका)

आर्यावर्त क मुकुटक मणि सन जगमग जकर इजोत ।
सप्तपुरी मे प्रथित अयोध्या इतिहास क न इरोत ॥१३
जतहि वंशधर मनु क प्रतापी आर्य – सभ्यता केतु ।
फहराओल, उल्लसित जाहि सँ आ-हिमगिरि आ-सेतु ॥१४
जतहि भानु-कुल उदित सभ्यता-प्राची क्षितिज क मूल ।
भेल विभासित जकर विभा सँ दिग्-दिगन्त अनुकूल ॥१५
धैर्य वीर्य औदार्य भरल जनिकर जग विदित चरित्र ।
रघुवंशी क वास सँ बासित कण–कण जकर पवित्र ॥१६

जे दिलीप सँ लालित पालित रघु क प्रताप प्रयुक्त ।
अज ओ इन्दुमती क प्रणय – रस स्रोत जतहि उन्मुक्त ॥१७
दशरथ रथ सँ पथ प्रशस्त जत परम पुरुष अवतार ।
राम राज्य आदर्श उपस्थित विश्व शासन क सार ॥१८
मैथिली क पति – भक्ति एतहि भरत क भ्रातृत्व अनूप ।
सौमित्रि क चारित्र्य चित्र सँ जगमग कीर्ति – स्तूप ॥१९
चरण पखारथि भक्ति भाव सँ सरयू पावन नीर ।
वन उपवन फल फूल चढ़ाबथि डोलबथि चमर समीर ॥२०
ईति भीति नहि एको व्यापित रोग शोक नहि रंच ।
प्रजा धर्मपथ चलथि स्वयं ने कनिञो कपट प्रपंच ॥२१
ने नक्षत्र गनथि वर्षा हित नहरि क बलें किसान ।
भदइ अगहनी रब्बी फसिलें भरल सतत खरिहान ॥२२

....

ई तहियेक कथा थिक जहिया शेष न अवध निरोध ।
कयने छल ने यवन विरोधी साकेत क अवरोध ॥२३
ई तहिये छल घटित भेल जकरा बुझि वृत्त पुरान ।
बृहत्कथा कें बृहत् गुणें भरि भेला गुणाढ्य महान ॥२४
उदयन - चरित लोकप्रिय तौखन विक्रम - कथा प्रचार ।
तन्त्र मन्त्र वेताल साधना छल पसरल अभिचार ॥२५
राज्य किरात क भिल्ल क चहु दिस छल विन्ध्याचल व्याप ।
उज्जयिनी क तहू दिन बढ़ले – चढ़ले रहय प्रताप ।२६

(जन्म)

छला अयोध्या – अधिपति तहिये अमरदत्त शुभ नाम ।
कृती मनस्वी तरुण तरस्वी रूपें गुणें ललाम ॥२७

सुरतप्रिया प्रियतमा हुनक छलि सरस वयस शुचि-मूल ।
जनिक प्रेम रस सिक्त नरपति क भाग्य-वृक्ष मे फूल ॥२८
दम्पती क प्रेम क तरु सँ पुनि फलित ललित सन्तान ।
नाम मृगांकदत्त कान्ति क तुलना मे चन्द्र समान ॥२९
अरुन बरन कर चरन न प्रस्फुट झक-झक गात इजोत ।
जननी-प्राची अंक मयंक न क्षितिज क गर्भ इरोत ॥३०
बितल प्रदोष जिनल तम-तति सब तरि प्रमोद आलोक ।
कुल-परिवार नखत बिच राजित शिशु शशि सुषमा-अंक ॥३१
प्रजा-कुमुद भेल समुद जनिक उदयेँ रिपु-तिमिर उदस्त ।
जे दम्पती चकोर क दृग केँ निश-दिन कयलन्हि मस्त ॥३२

गिरिवर-शिखर निवासी शिशु-शशि-शेखर शाली ।
भूधर-कन्या धन्या भरि निज अङ्क क पाली ॥
भाग्य-श्री तिलकित कुमार शिशु विबुध विनोदी ।
रुचि रोचित मृगांक तारक-जित तिमिर क अपनोदी ॥३३

(शैशव)

जेना पानि सँ धान बढ़य ओ स्वच्छ पच्छ सँ चान ।
मान-दान सँ प्रीति रीति, तहिना सुख सँ सन्तान ॥३४
दिनकर होइतहिँ उदित छने-छन ऊपर उठले जाथि ।
नव समुदित सुकुमार कुमारो नित-प्रति बढ़ले जाथि ॥३५
तोतर बोल अमोल, सभक मन सहजहिँ जाय बिकाय ।
माय-बाप जौहरी, हँसी हीरक केँ सहज जोगाय ॥३६
व्यंजन रहित कंठ सँ स्वर टा, अस्फुट वचन उचार ।
नहि भय सकथि ठाढ़, दाँतो नहि, बूढ़ क सब व्यवहार ॥३७
माँ माँ रटथि, चतुष्पद चलथि, करथि दूध क आहार ।
झपटब देखितहिँ ससरय मुसरी सरिपहुँ बाल बिलाड़ ॥३८

कखनहुँ चून तेपि कारिख केर कखनहुँ करथि सिङार ।
घर - घर घुमथि, चुमथि भूतल, अपराधिक सब व्यवहार ।।३९
कोरा पिंजड़ा बैसि रटथि किछु सुनि बिनु बुझनहुँ नाम ।
लाल ठोर तिलकोड़क फड़ सन शिशु सूगा अभिराम ।।४०
खन कानथि, चिचियाथि छने, बिनु हेतु हँसथि शत बेरि ।
हाथ - पैर पटकथि बताह जनु, शिशु ई कर्म क फेरि ।।४१
पुछथि आँख तेँ कान देखाबथि, बुझथि नाक केँ गाल ।
अज्ञानी नेनाक दशनेँ ज्ञानी जनक नेहाल ।।४२
झाड़ि - पोछि धूरा गरदा, तन तेल माय मलि दैछ ।
कत भामट पसारि पुनि रज - कन लेपि लगा चुप हैछ ।।४३
श्वेताम्बर नहि संप्रदाय छल, हिनक दिगंबर रूप ।
अपभ्रंस वचनहि मे जनिकर छल सन्देश अनूप ।।४४
शुद्धोदन माया सँ सहज सुजाते पायस पाबि ।
शुचि रुचि बनल प्रबुद्ध अबुद्धो पालिनिकायो भावि ।।४५
घुसकुनिआ सँ देल ठेहुनिआ ठाढ़ होइत पुनि दौड़ि ।
आब कुमारक क्रीडा देलक जननि - जनक सुख बौड़ि ।।४६
छल नूतन शुचि वसन यदपि नृप - दम्पती क बहु - मूल्य ।
धुरिआयल पैरेँ कय मलिन बनौलन्हि और अमूल्य ।।४७
परिचय अपन बन्धु-परिवार-समाज क क्रम - क्रम पौल ।
गाछ - पात, फल - फूल, विहग - पशु लग - पास क ठेकनौल ।४८
खेलहि मे व्यवहार नियम अनुशासन गेल सिखौल ।
संस्कार क बल सँ सुनि पद कत पढ़इछ विनहि पढ़ौल ।।४९
जहिना तन बढ़इछ छन - छन तहिना मनहु क उत्कर्ष ।
रवि नभ उठथि जते ऊपर हो तते प्रकाश प्रकर्ष ।।५०
धुरखेल क जत छल प्रकार से आब न रुचि शुचि दैछ ।
जनु टिकुला होइतहिँ सुखि नीरस सहजहिँ मजर झरैछ ।।५१
वसन पहिरि आभूषण भूषित रूपवान सुकुमार ।
बुझि पड़इछ जनु मीन - निकेतन लेल नवल अवतार ।।५२

Printing mistake in page set-up

स्वर व्यंजनमय मधुर कंठ मे वाणी बसली आबि ।
नव रक्त क अनुरक्त शक्ति भुज, श्री मुख कमलहि भावि ॥५३
कुटिल अलक श्यामल रेखा अंकित अछि चकचक भाल ।
मसि सँ करइछ अक्षर रचना भोजपत्र पर बाल ॥५४
सहित वयस्य कन्दुक क क्रीडा परिसर घुमथि उमंग ।
जनु कदंब वन पवन संग शीकर बिहरथि अनुषंग ॥५५
कखनहु धनुष बाण लय राम क छवि करइछ साकार ।
वेणु बजाय हरथि मन कखनहु श्रीकृष्ण क अवतार ॥५६
कत विध खेल क करथि विरचना घर - बाहर दुहु भेद ।
शब्द अर्थ - गत अलंकार शत जनु कवि रचय अखेद ॥५७
क्रीडा करथि सचिव - सुत सभ सङ जे दश छला प्रशस्त ।
ज्ञान कर्म दश इन्द्रिय लय जनु मन एकादश मस्त ॥५८
स्थूलबाहु ओ विमलबुद्धि, विक्रमकेसरी, गुणाकर ।
भीमपराक्रम, व्याघ्रसेन, दृढ़मुष्टि मेवबल तत्पर ॥५९
नवम प्रचंडशक्ति विदिते, दशमो विचित्रकथ नाम ।
दशो दिशा अवकाशी जनु आकाश तनल अभिराम ॥६०
बनल विशेष्य विशेषण छल जनु यौगिक बनले रूढ ।
बीज नाम संस्कार क अन्तर तरु गुण राखल गूढ़ ॥६१
सभ किशोर सभ गोर भोर जनु प्रतिबिम्बहि क समान ।
दश विध धर्म संग जनि राजित जीवन हो छविमान ॥६२
भानु बिम्ब प्रतिबिम्बित दश दिश अर्पित दर्पण बीच ।
रूप तेज मे सभ अनुपम, सम गुण न ऊँच ओ नीच ॥६३
संस्कार क हित गुरुकुल मे पुनि प्रेषित कयलन्हि बटुक समस्त ।
खानि खनित मनि रतन जेना जौहरी समीपे होय प्रशस्त ॥६४

—:::—

द्वितीय सर्ग

(गुरुकुल)

समतल थल, सरिता समीप वन - उपवन चारु कात ।
मंद सुगंध सुशीतल बहइछ जत अनुकूल बसात ॥ १
कल कूजन सँ करय विहंगम प्रमुदित मधुमय गान ।
बाध जतय निर्बाध, चरय कस्तूरी - मृग सन्तान ॥ २
तृण - पर्ण क कुटीर कत निर्मित उचित उपकरण युक्त ।
जतय पढ़ाबथि छात्र - वृन्द के अध्यापक सु-नियुक्त ॥ ३
स्वाध्याय क अनुकूल बनल अछि वातावरण समस्त ।
नहि प्रतिकूल भावना लेशो वेशो सुरुचि प्रशस्त ॥ ४
कतहु शारदा पुस्तक - हस्ता राजित वीणा पाणि ।
गणपति प्रतिमा वर-अंकुश कर लिखइछ अर्थ प्रमाणि ॥ ५
सुर - पूजित वाचस्पति बाँचथि कतहु रीति मत वेद ।
कतहु भार्गवी विद्या सिखबथि शुक्र नीति कत भेद ॥ ६
कतहु व्यास–बाल्मीकि क प्रतिमा गोतम कपिल कणाद ।
भरइछ अन्तेवासिक चित मे शुभ प्रेरणा समाद ॥ ७
संस्कारित उपनीत सकल बटु पटु मेधावि सुचित्त ।
आचार्य क सन्निधि लगले स्वाध्याय क हेतु प्रवृत्त ॥ ८
शुचि आचार विचार सुरुचि परिशुद्ध नीति व्यवहार ।
सिद्धान्त क संगहि कर्मठता सुपरिष्कृत संस्कार ॥ ९
पद क्रम पाठ सकल शाखा श्रुति - मूलक मौलिक ज्ञान ।
सहज जनिक करगत विज्ञान विराजित बदर प्रमाण ॥१०
वेदान्ती मीमांसक सांख्यक नैयायिक आचार्य ।
योगी पुनि वैदिक षट् शास्त्री दर्शनविद् प्राचार्य ॥११

दण्ड विना शासन, अनुशासन जनिक नयन संकेत ।
छात्र पात्र छथि विद्या-विनयक ऊर्ध्व-रेत समवेत ॥१२
ग्रन्थ-ग्रन्थि एको अविदित नहि धर्मपन्थ अज्ञात ।
मुक्त पृष्ठ पुस्तके स्वयं अछि प्रकृति जवय विज्ञात ॥१३
नियत समय, संयत इन्द्रिय जत परिचालित स्वाध्याय ।
अनध्याय पुनि कला-कौशल क हित नित नव अध्याय ॥१४
अति विनीत नवनीत-प्रकृति उपनीत उदार कुमार ।
प्रतिभा बल व्युत्पत्ति बढ़ल फल अभ्यास क अनुसार ॥१५
पावस घन सरिता कें, वन क लता कें जेना वसन्त ।
अनायास शिशु मति कें भरलन्हि गुरुजन ज्ञान अनन्त ॥१६
श्रुति छल श्रवण क आभूषण, स्मृति स्मरण क सरणि उदार ।
दर्शन दृष्टि क विषय, मुखे व्याकरण सूत्र आधार ॥१७
कोष अर्थ केर मूल प्रथित पर्याय शब्द समतूल ।
छंद बंध मात्रिक वार्णिक दंडक पिंगल-अनुकूल ॥१८
गणित फलित नक्षत्र राशि दिन लग्न करण तिथि योग ।
ग्रह-उपग्रह क गति-अनुगति ग्रहणहु ज्योतिष क प्रयोग ॥१९
स्वास्थ्यसूत्र शारीरक रोग निदान चिकित्सा-अंग ।
काय शल्य शालाक्य प्रभृति कौमार वृष्य रस संग ॥२०
स्वस्थ-वृत्त ऋतु-दिन-चर्या, कायिक आसन व्यायाम ।
मनोयोगहु क ध्यान-धारणा, प्राण क प्राणायाम ॥२१
छल इतिहास पुराण अतीत क दर्पण बिम्बित वृत्त ।
सूत्र वृत्ति कारिका बिन्दु मे तत्त्व सिन्धु संक्षिप्त ॥२२
भक्ति ज्ञान पुनि सांख्य योग गीता उपदेशल कर्म ।
महाभारते शान्ति संग अनुशासन पर्व क मर्म ॥२३
आदर्शक व्यवहार संग योगहि हो सफल समस्त ।
रामायणी कथा देलक चित कत प्रेरणा प्रशस्त ॥२४
उपनिषद क उपदेश किरण सन चमकाओल उर देश ।
आध्यात्मिक साम्य क ज्ञानें जगमग जीवन उद्देश ॥२५

ज्ञान भार थिक क्रिया विना ई कर्म - काण्ड कहि गेल ।
मीमांसा श्रुति जटिल समस्या समाधान कय देल ॥२६
श्रेय - प्रेय केर साधक धर्में, मर्म कथा सुझि गेल ।
लोक - वेद दूहू क कुशल, जीवन कौशल बुझि लेल ॥२७
अस्ति - नास्ति दूहुक परिचय हिय वैदिक दर्शन संग ।
शिक्षण चारुवाक ओ बौद्ध-जैनहु क दृष्टि प्रसंग ॥२८
अध्यात्म क सगहि भौतिक विज्ञान क विषय विकास ।
शिक्षा मे छल नैतिकता केर प्रचुर पाठ अवकाश ॥२९
नीति जीवन क रीति, जाहि सँ नहि कखनहु पथ भीति ।
राजनीति हरइछ शासन क जटिलता जन-मन जीति ॥३०
सीखल धनुर्वेद प्रायोगिक अस्त्र - शस्त्र सन्धान ।
बिनु शक्ति क शिव शव होइछ बुझि कयल सबल तन प्रान ॥३१
कतहु रथिक, गज-गतिक कतहु, पथ घुमथि तुरग-आरूढ ।
नाविक पादातिक पुनि वन गह्वर पाँतर गिरि गूढ ॥३२
घनल मल्लशाला छल, व्यायाम क हित विहित प्रसार ।
कोमल कलित कलेवर कयलन्हि श्रम-सहिष्णु बल-सार ॥३३
कला - भवन पुनि साज - बाज साजल संगीत विधान ।
तत, घन, सुषिर, वाद्य आनद्धहु जे जत चलित जहान ॥३४
मार्गी शास्त्र विदित, पुनि प्रचलित देशी मुख - संगीत ।
राग - रागिनी, तान - मूर्छना, लय - धुनि श्रुति - अनुरीत ।३५
पुनि आलेखन साधन हित पट कुची रंग शुचि थार ।
प्रकृति-अनुकृति क, व्यंग्य विकृतिहु क कला भाव संचार ॥३६
सीखल कत भाषा, लीखल जत लिपि प्रचलित जग बीच ।
परिचित विविध देश - व्यवहार क ऊँच रहौ वा नीच ॥३७
भाषण, लेखन, वाचन, गायन अभिव्यक्ति हित उक्ति ।
सुभाषित क उर हार पहिरि श्रुति-सूक्त सूक्ति रस उक्ति ॥३८

तर्क – वितर्क वाद – संवादहु अनुवादहु मे दक्ष ।
रहल कसरि नहि. असरि गुरुकुल क एतय भेल प्रत्यक्ष ॥३९
सर्वोपरि अनुशासन सैनिक दक्षता क नैपुण्य ।
विद्या कला समर - कौशल सँ सफल कयल तारुण्य ॥४०
राज्य - राज्य मे गुरुकुल संकुल शिक्षा हेतु प्रसिद्ध ।
राजा - प्रजा सभ क संतति पढ़इत छल जत अविरुद्ध ॥४१
जन्म कर्म गुण-प्रकृति निरखि, रुचि परखि पारखी विज्ञ ।
वर्गीकृत वर्णी क वरण जत करथि नित्य कृतविद्य ॥४२
जनम प्रथम गृहकुल मे पुनि गुरुकुल मे उद्गम अन्य ।
खनिज धातु मणि चढ़ि खराज पुनि मुकुट जडित हो धन्य ॥४३

पारस्परिक शैक्षणिक प्रसंग

नियत अवधि धरि अन्तेवासिक गुरुकुल नियमित वास ।
अनुमत तदपि अधीती विद्यातीर्थ क करथि प्रवास ॥४४
कखनहु पारस्परिक गतागत गुरुकुल बिच व्यवहार ।
होय जाहि सँ अंतेवासिक विकसित रुचि - संस्कार ॥४५
वाद - विवाद तर्क - शास्त्रार्थ वचन - रचना मे द्वन्द्व ।
युध - आयुध ओ शक्ति - पराक्रम मे के तिख के मन्द ॥४६
क्रीडा - कौतुक कला - कौशलहु मे अहमहमिक भाव ।
पारस्परिक चढ़ा - उतरी रहितहुँ सभ मे सद्भाव ॥४७
कहियो काशी - गुरुकुल वासी कुरु - पांचाल क बाल ।
तक्षशिला - मिथिला - गुरुकुलहु क पहुँचथि कहियो काल ॥४८
होय परस्पर परिचय - संचय गुणहु क उपचय मेलि ।
बीजु बीजतरु योगहि कलम लगबइछ क्यौ रुचि मेलि ॥४९
उज्जयिनी - गुरुकुल क छात्र - दल पहुँचल एतय सुबोध ।
अंकर सुषेण कुमार प्रमुख छथि नायक गुण - अनुरोध ॥५०
उज्जयिनी ओ अवध गुरुकुल क अन्तेवासि प्रसंग ।
गुण बल बुद्धि कला कौशल केर भेल प्रदर्शन संग ॥५१

दुहू कुमार प्रमुखता पौलन्हि मति बल गुण वपु रूप ।
इन्द्र – उपेन्द्र समान मृगांक – सुषेण विदित अनुरूप ॥५२
गुरु-जनक क आदेशहिँ किछु दिन विरमि सुषेण कुमार ।
अवधकिशोर संग रहि गहल एतहु शिक्षा - संस्कार ॥५३
कुल वैभव रुचि रूप वयस शुचि चरित आचरित तूल ।
दुहु कुमार सुकुमार बुझाइछ एक तरु क दुइ फूल ॥५४
मधु - माधव जनु, नभ - नभस्य जनु, तप-तपस्य जनु युग्म ।
एक ऋतु क दुइ मास प्रकृति गुण समगम किछु मृदु-तिग्म ॥५५
अवधि बिताय सुषेण स्व - गुरुकुल चलल अवंती अंत ।
अस्त - उदस्त मृगांकदत्त केर विरह क अमा दुरंत ॥५६

(शिक्षण-भ्रमण ओ नैपुण्यप्रदर्शन)

पुनि किछु दिन उन्मन बिताय स्मृति-बलित मृगांक उपांत ।
अवसर पाओल शिक्षण–भ्रमण प्रसंग अवंती प्रांत ॥५७
बुद्धि - बोध प्रतिभा - प्रबोध बल अपन प्रभाव बढ़ाय ।
अवधकुमार सहित सहचर छल प्रथित छात्र–समुदाय ॥५८
गुरुकुल सँ जनपद, जन मुख सँ राजकुलहु धरि सोर ।
आयल छथि क्यौ अद्भुत प्रतिभाधर इत अवधकिशोर ॥५९
जे पुनि विदित कुमार सुषेण क अंतरंग प्रिय मित्र ।
रूप अनूप, बुद्धि बल अद्भुत, शुचि रुचि शील-चरित्र ॥६०
अति उत्सुक जन-जन ! देख'क थिक के ई ? केहन महान !
बल क्रीडा कौतुक स्नातक–कृत रचि रुचि मंच-वितान ॥६१
उज्जयिनि क क्रीडा–परिसर लगले सहजहिँ सजि गेल ।
गुरुकुल तरुण परस्पर क्रीडन निरत नियत तिथि भेल ॥६२
पावस - परिसर उमड़ल जन - घन, विद्युत् उत्सुक-भाव ।
सावन–भादव उभय गुरुकुल क तरुण क सरस प्रभाव ॥६३
उज्जयिनी-गुरुकुल क प्रमुख छथि विदित सुषेण कुमार ।
दोसर दिस अवध क दल - नायक दत्त मृगांक उदार ॥६४

चान-सुरुज जनु निश-दिवस क हो द्योतक ज्योति तरंग।
वाम-दहिन दृगबिंदु यदनु पृथकहु रहि ऐकिक अंग ॥६५
छवि-छाया, जल वीचि, बिंब-प्रतिबिंब दुहू अनुमान।
द्वैताद्वैत दर्शन क जनु हो तत्त्व समक्ष प्रमाण ॥६६
दुहु दल कयल प्रदर्शन, दलपति जकर निदर्शन रूप।
करतल-ध्वनि आलोक-शब्द बिच शक्ति-युक्ति अनुरूप ॥६७
वाहन-चालन वहन-उद्वहन गमन-उत्प्लवन कर्म।
युध-संचालन आयुध-चालन जत बल-बुद्धि क मर्म ॥६८
गंग-यमुन जल संगत-रंगत दुहु उच्छल, दुहु श्रांत।
जनु सिंधु क तरंग रिंगत दक्षिण अतलांत-प्रशांत ॥६९
प्रबल-दबल के? जबर-जेर के? गुरु-लघु के? नहि व्यक्त।
किन्तु सूक्ष्म ईक्षक क परोक्ष न रहल तत्त्व अव्यक्त ॥७०
अवधकिशोर क जोर भोर जनु छन-छन छल वर्धिष्णु।
उज्जयिनी क युवा क जोश जनु साँझ क शमित सहिष्णु ॥७१

....

सहसा क्रीडन द्वंद्व बंद चौदिश आवेश अमंद।
युगल कुमार उपर बरिसय लागल प्रसून मकरंद ॥७२
ओही पुष्पवृष्टि क बिच अन्तःपुर सँ कोनहु बाल।
दत्तकुमार उदेशेँ अर्पल सरस मधूक क माल ॥७३
देखल स्वयं अवधनन्दन नृपनन्दिनि चंदिनि रूप।
स्निग्ध-मुग्ध दृग ताकि रहल किछु प्रीति क रीति अनूप ॥७४
हँसी सखी-मुख, सुखी सुषेणहुँ, पुलकित अवधकिशोर।
क्रीडन-मगन लोक उत्सुक उत्सव-अवसान क सोर ॥७५

× × × ×

एहि विधि ग्रंथ-पंथ व्यवहार-तंत्र विधि लौकिक।
अंतरंग-बहिरंग शिक्षण क क्रम प्रायोगिक ॥

गुरुकुल–ऋषिकुल–नृपकुल ग्राम्य–वन्य–नागर नय ।
सफल कयल छात्रक जीवन, नव अनुभव संचय ॥
प्रथम चरण जीवन क शुचि विद्या-तीर्थ क स्नान कय ।
शुद्ध बुद्ध स्नातक सफल शील चरित्र प्रमाण दय ॥७६

(समावर्तन)

गुरुजन सरुचि समापि सकल अविकल जत शिक्षा ।
ग्रन्थ-ग्रन्थि पुनि क्रिया - पन्थ, मुख लेख परीक्षा ॥
ज्ञान चरित सन्धान दक्षता सभक समीक्षा ।
देखि सकल स्नातक कें देलन्हि जीवन दीक्षा ॥७७
सत्य ध्येय शिव समाधेय सौन्दर्य साधना ।
जीवन काव्यादर्श प्रकृत रस गुण उपासना ॥
साध्य साधन क पावनता, तन मन क प्रवणता ।
सत्य तथा श्रम सँ सभ अर्थ क सिद्धि सफलता ॥७८

●

तृतीय सर्ग

(स्नातक)

सगर नगर छन भरि मे भेल पसार ।
आबि रहल छथि पढ़ि-लिखि राजकुमार ॥
डगर-डगर मे सजि-धजि वंदनवार ।
स्वागत हित उत्सुक छथि पुर-परिवार ॥ १
धवल महल छल सजल सुधा सँ स्फीत ।
अगरु धूप सँ अभ्यन्तर परिवीत ॥
केसर रंजित केतु वसन समुदाय ।
भवन-शिखर पर पवन वेग फहराय ॥ २
कनक कलश भरि सलिल सपल्लव डारि ।
राखल छल शत शत सजि धजि गृह-द्वारि ॥
पथ सिंचित चन्दन जल कुङ्कुम घोरि ।
नीरज, नीरज-स्रज लटकल तट डोरि ॥ ३
पढ़इत छथि श्रुति सस्वर बटु-समुदाय ।
वंदी मागध स्तुति युत छंद सुनाय ॥
दूर्वाक्षत लय गुरुजन आशिष दैछ ।
मंगल-गीत सुवासिनि मुदित गबैछ ॥ ४
स्नातक भय आयल छथि राजकुमार ।
संग सखा दस ओजस्वी सुकुमार ॥
रूप अनूप, शील शुचि, प्रकृति उदार ।
दश दिक्पाल संग जनु स्कन्द कुमार ॥ ५

जननी - जनक क चरण - रेणु लय माथ ।
परिजन–पुरजन कें पुनि कयल सनाथ ॥
स्मितमुख पहिनहिँ कयलन्हि कुशल-पुछारि ।
आयल जे जन बूढ़ – युवक नर – नारि ॥ ६

कय प्रणाम गुरुजन कें विशद–चरित्र ।
बन्धु मित्र सँ मिलि – जुलि प्रेम–पवित्र ॥
प्रजा – जन क अभिवादन कय स्वीकार ।
उत्सुक गृह दिस कयल चरण - संचार ॥ ७

मन्दिर – मन्दिर जाय देहली पूजि ।
स्तुति - मुख देवी - देव चरण - रज छूबि ॥
कुलदेवी पद – पद्म झुकाओल माथ ।
गृहदेवता अराधल भेल सनाथ ॥ ८

चानन कुङ्कुम सिंदूरें रचि भव्य ।
आङ्गन चित्रित अइपन शतदल नव्य ॥
पल्लव कलश दीप द्युति धूप सुगंध ।
दूर्वाक्षत साजल सुहागिनी वृन्द ॥ ९

गबइत मंगल – गीत रीति – मत भास ।
कयल चुमाओन मातृवृन्द सोल्लास ॥
लैल सभक आशीष शीश झुकबैत ।
बहरयला जत पुरजन बाट तकैत ॥१०

सभा – भवन छल सजल राजसी ठाठ ।
करइत छल वंदी विरुदावलि पाठ ॥
सचिव पुरोहित राजपुरुष सामन्त ।
सहित समुत्सुक महाराज श्रीमन्त ॥११

देसो सखा सङ्ग लय सुकुमार कुमार ।
सभा – भवन बिच पहुँचल प्रकृति-उदार ॥
अलि कोकिल मलयानिल सुम समुदाय ।
लय पहुँचय जनु वन वसंत ऋतुराय ॥१२
नृपति – चरण वंदन कय श्रद्धोद्‌गार ।
सविधि सभ क अभिनन्दन कय स्वीकार ॥
पुनि स्वर्णासन बैसि रूप – जित – मार ।
कहल विनय – युत वचन उदार कुमार ॥१३
परसि रेणु श्रीचरण क शीश कृतार्थ ।
दर्शन सँ नयन क आलोक यथार्थ ॥
सुनि शुभ वाणी, श्रवण आइ चरितार्थ ।
श्वास-श्वास विश्वास प्रभु क फलितार्थ ॥१४
प्रेम हेम अछि अमित महत्तम अंक ।
लघुतम उर – मंजूषा कत अति रंक ॥
अभिनन्दन स्रग्धरा कलय अति भात्र ।
लघु पद अनुपद हमर अनुष्टुप् पात्र ॥१५
आशिष सँ आ-नखशिख छी अभिषिक्त ।
रुख-तिख विरह क दुख सँ भेलहुँ रिक्त ॥
जनु तपि तपन ताप सँ जेठ – अषाढ़ ।
पबइछ जग साओन – भादव घन – गाढ़ ॥१६
गुरु-कुल थिक नेपथ्य विरचना लेल ।
लोक मंत्र जीवन अभिनय रुचि देल ॥
बिनु बीजें नहि तरु, न सिन्धु बिनु बिन्दु ।
अमा – रंजिते व्यंजित प्रतिपद – इन्दु ॥१७
गुरु क कृपा-घन सघन बरसि रस गेल ।
उर - मरु हमरा लोकनिक उर्वर भेल ॥

विविध ज्ञान – विज्ञान अंकुरित मूल ।
भेल आइ पल्लवित पाबि पद – धूल ॥१८
सत सुन्दर सुनि वचन सुमंगल मूल ।
जनु पीयूष रसाल यूप समतूल ॥
रुचि रचना आदर्श कल्पना युक्त ।
हृदय जुड़ाओल सभ क सभ्यता सूक्त ॥१९
कहल नृपति अति मुदित, वत्स ! जय जीव !
थीक सुशिक्षा जीवन - भवन क नीव ॥
पुनि आचार – विचार शील – व्यवहार ।
सुचरित स्थापत्य क थिक कला प्रकार ॥२०
जीवन शिक्षा – शून्य गाछ बिनु फूल ।
शिक्षा पुनि चरित्र – रस बिनु थिक धूल ॥
चरित लोक–हित रहित ज्योति बिनु दीप ।
लौकिक हित अविहित परलोक – प्रतीप ॥२१
विद्या थिक जे मुक्ति क हो सदुपाय ।
कला कलित जे शुचि रुचि मुक्ति सहाय ॥
प्रेय – श्रेय पुनि लोक – वेद दुहु संग ।
व्यक्ति समाज दुहु क हित विदित प्रसंग ॥२२
शिक्षा चरित क मूल, विनय थिक सार ।
शाखा सत् संकल्प, त्वचा व्यवहार ॥
किसलय सेवा - वृत्ति, प्रसून विवेक ।
फल थिक सुकृत सुरस देवत्व क टेक ॥२३
गुरु - कुल प्रचलित शिक्षा - पद्धति शुद्ध ।
बुझल, जतय स्नातक छथि एहन प्रबुद्ध ॥
तन निस्सन, मन निर्मल, मति परिशुद्ध ।
रुचि पवित्र पुनि शुचि चरित्र अविरुद्ध ॥२४

(यौवराज्य)

धन्य आइ हम, धन्य हमर परिवार ।
वंश क छथि अवतंस जनीक कुमार ॥
आइ प्रजा जन छथि भविष्य निश्चिन्त ।
जनिक भावि नृप एहन भविष्णु उदंत ॥२५
सचिव पुरोहित परिजन पुरजन संग ।
प्रजा जनपद क मन मे एक उमंग ॥
देखब, जीवन सुफल करब, रुचि एक ।
आइ सुदिन युवराज क शुभ अभिषेक ॥२६
सभ क मानि अनुरोध न करिअ विरोध ।
बल बुद्धि क फल सभ केँ दिअ अविरोध ॥
हमरहु भार क गुरुता केँ हलुकाय ।
युवराज क पद केँ सम्हारु अगुआय ॥२७
नहि पद गौरव-हेतु, न बुझि सम्मान ।
जन-सेवा हित राज-सूत्र सन्धान ॥
पद नहिं सुख-सुविधा वा भोग क तत्त्व ।
उत्तरदायित्वे अधिकार - महत्त्व ॥२८
तात ! आइए सुदिन गनित सुविचारि ।
पहिनहि सँ सभ प्रजा लेल अवधारि ॥
अवितहि युवा कुमार बनथु युवराज ।
स्नातक भय पहिरथु कर्तव्य क ताज ॥२९
पहिने छित संकुचित राज व्यवहार ।
पुनि आदेश क पालन बुझि आचार ॥
पाञ्चजन्य थिक पञ्च जनक आदेश ।
हरिमुख-निःसृत बुझि कहलन्हि सावेश ॥३०

यद्यपि छी नव निर्मित भाजन काँच ।
नहि पड़लहुँ कर्तव्य क कखनहु आँच ॥
अनुभव नहि भव-विभव क, कहबे साँच ।
भेल न अछि दुर्दशा क कखहु किछु जाँच ॥३१

गुरुजन पुर-परिजन क किन्तु आदेश ।
नहि मानब, ई नहि मानव-हित शेष ॥
बुझि-सुझि ई करइत छी शिरसा धार्य ।
आशीराशि क बल अछि सभ क आर्य ॥३२

सुनि-सुनि, जय-जय नादें भरल दिगन्त ।
जन मन बन मे सहसा फुटल वसंत ॥
पुलकित तन जनु मंजरि लदल रसाल ।
सुरभित मन गुंजित जन-गन अलि-माल ॥३३

पद्दिनहि सँ छल प्रस्तुत विधि संभार ।
पवितहिं शुभ संकेत उपस्थित द्वार ॥
पुरहित सहित प्रथित विद्वत्समुदाय ।
सविधि विविध सामग्री देल सजाय ॥३४

तीर्थ क जल, पीठ क मृत्तिका पवित्र ।
कुश समिधा तिल यव मधु घृत सपवित्र ॥
मणि सुवर्ण पुनि रत्न विहित अभिषेक ।
पल्लव कुसुम वनस्पति फल प्रत्येक ॥३५

कुल-दैवत, गृहदेवी, ग्रह दिक्-पाल ।
पितर-देवता, ग्राम-देव, वनपाल ॥
नभ वसुन्धरा नद नग सीमापाल ।
सकल देव पूजल प्रथमहि भूपाल ॥३६

श्रौत ऋचा पढ़इत ऋत्विक्-समुदाय ।
हवि चढ़बथि हुतवह मे होतृ-निकाय ॥

ज्वलित अग्नि यज्ञक शाला हवि गन्ध ।
फरइत वातावरण पवित्र अमन्द ।।३७
वैदिक मन्त्र, तन्त्र आगमक वितान ।
भूमि अन्न मणि रत्न धेनु धन दान ।।
वेद पुराण स्तोत्र शतचण्डी पाठ ।
स्वस्ति वाचनक प्रक्रम जत शुभ ठाठ ।।३८
कर्मकाण्ड विधि सँ नैमित्तिक नित्य ।
सिद्धि हेतु माङ्गलिक अनुष्ठित कृत्य ।।
जप-तप पूजा-पाठ, भोज नहि अन्त ।
पातरि नोत कुमारि कुमार अनन्त ।।३९
वैदिक तांत्रिक श्रौत गृह्य आधार ।
कत विध कौलिक सामाजिक व्यवहार ।।
घर – आङन मन्दिर – प्राङ्गण मे व्याप्त ।
वाद्य – गीत ओ नाट्य – नृत्य पर्याप्त ।।४०
कुङ्कुम मृगमद मलयज चंदन – पंक ।
राशि–राशि पल्लव प्रसून क्षिति – अंक ।।
सिन्दूराक्षत दूभि हरिद्रा रंग ।
लाजा उज्ज्वल छीटल मंगल अंग ।।४१

....

लिप्त मांगलिक द्रव सँ नख - शिख
तदनु तीर्थ जल स्नात ।
स्नातक केँ पुनरुक्त बनाओल
राजतन्त्र – निष्णात ।।
दिव्यांबर परिधान, लिप्त चन्दन
पुनि तिलक लगाय ।

राज - तिलक कय युवक-राज कें
　　　　पुनि युवराज बनाय ॥४२
बहुश्रुत क श्रुति - पुट मे पठिते
　　　　शत श्रुति - सूक्त सुनाय ।
अनुशासित स्मृतिशाली कें
　　　　स्मृति - शासन स्मरण कराय ॥
वन्दनीय सहजहिँ तनिके
　　　　बन्दी वन्दना गबैछ ।
स्तुत्य चरित अपनहि तनिको पुनि
　　　　स्तुति रचना सुनबैछ ॥४३

कुसुमाकर कें कुसुम चढ़ायब
बिन्दु सिन्धु कें अपब ।
भुवन - भानु कें दीप देखायब
वन कें दूभि समर्पब ॥
तपत कनक कें रौद देखायब
दीपित मणि कें माजब ।
राजित राजकुमार क तहिना
युवराज क पद साजब ॥४४



चतुर्थ सर्ग

(कर्मक्षेत्र)

अम्बर – पट कारी किट – किट्ट छल मैल ।
भरि निशीथ जनु बोरल हो तम – तैल ॥
कत पल धूलि छले चिट – चिट जमि गेल ।
तंतु – तंतु मे अंधकार बसि गेल ॥ १

भोरुकबा धोबी घर ऊस लगाय ।
शांत सलिल मे रहि रहि सम्हारि भिजाय ॥
खग – कल छल गल स्वर सँ श्रम बिरमाय ।
प्राची – दारु उपर पटकल छटिआय ॥ २

छटल तिमिर – मल झलकय लागल सूत ।
कने नील नभ लगा कयल परिपूत ॥
क्षितिज क परिसर मे विधि विहित पसारि ।
झक झक अबर कयल विशद रुचि धारि ॥ ३

प्रभा पोद दय शुचि रुचि कलप चढ़ाय ।
मसृण रश्मिए रस – रस घसि चिकनाय ॥
मलय गंधवह सुरभित वास बसाय ।
उषा धोबिनियाँ अम्बर देल सजाय ॥ ४

घन रेखा किंचित कुंचित चुनिआय ।
अरुन किरन मे छन मे देल सुखाय ॥
पुनि रवि कर गत सौंपल सपरि सहाय ।
पहिरल विश्व ओस जल प्रात नहाय ॥ ५

यद्यपि पुरानो अंबर शुचि रुचि भव्य ।
बुझि पड़इछ जनु सद्यः प्रस्तुत नव्य ॥
चिक्कन चुनमुन सरस परस नव रंग ।
ककरा नहि मन हो लगबी दृग - अंग ॥ ६

× × × ×

(दैनिकचर्या)

कय विधिवत् युवराज प्रभाते स्नान ।
शुचि भय पहिरल धवल धौत परिधान ॥
आसन पर आसीन कनक उपवीत ।
उत्तरीय कौशेय कान्ह परिवीत ॥ ७
सन्ध्या - वन्दन, चन्दन - चर्चित भाल ।
गायत्री - जप लय रुद्राक्ष क माल ॥
मुद्रा सहित सहस्र संख्यक जप - कृत्य ।
प्राणायामी कयल सकल विधि नित्य ॥ ८
रवि कें अर्घ्य चढ़ाओल, गणपति पूजि ।
देवी दुर्गा अर्चल आगम बूझि ॥
भस्म विभूषित पढ़इत रुद्राध्याय ।
कयल स्नपन शिव नियमित स्तुति समवाय ॥ ९
पुरुष सूक्त, तुलसी दल, शंख क पानि ।
शालग्राम शिला पूजल स्मृति मानि ॥
ग्रह दिक्पति पुजि देव प्रजापति अंत ।
हवि सँ हुतवह कें कय तृप्त अनंत ॥ १०
श्रुति स्मृति सूक्त पुराण सूत्र इतिहास ।
कयलन्हि स्फुट स्वर पाठ स्तोत्र कत रास ॥
दानपात्र कें देल धेनु सम्मानि ।
अतिथि साधु कें पूजल देवे मानि ॥ ११

निरय-कृत्य कय सविधि शास्त्र अनुसार।
पुनि जुटला सभ सखा सचिव सुकुमार॥
जनिक मध्य राजित छथि राजकुमार।
सुर बिच सुर-सेनानी जैना कुमार॥१२

लघु व्यायाम प्रसंग अंग श्रम स्वेद।
आनन कमल पर जेनु मकरन्द बिभेद॥
लम्बमान निःश्वास कंप उर रंच।
मलय पवन कंपित जनु सुरतरु मंच॥१३

किंचित् समय गमाय स्वरस श्रमहारि।
पुनि नव कल्पित तनु जनु नियम विचारि॥
जागृत रुचि पहुँचल सभ समय सम्हारि।
जलपान क गृह जननी लग शुचि वारि॥१४

सभ विभक्त अविभक्त चित्त समवेत।
आसन-अपन आसम पर बैसि निकेत॥
स्वास्थ्य शक्ति मति वर्धक स्मृति आधार।
शुचि आहार कयल अभिरुचि अनुसार॥१५

हित मित शुचि रुचि स्निग्ध सरल रस सार।
कनक पात्र मे लागल अमित सचार॥
भोज्य चोष्य पुनि चर्व्य लेह्य समुदाय।
रस मधु तिक्त लवण कटु अम्ल कषाय॥१६

पुनि जननी कत ममतें परसन देथि।
परसन मन रुचि रखइत किछु-किछु लेथि॥
वस्तु मधुरिमा बढ़ल जननि-आवेश।
राग-रंगिमा मधुर कंठ-परिवेश॥१७

सुरभित एला क्रमुक लवंग कपूर।
वासित ताम्बूली दल रुचि रस पूर॥

पुनि सुवासिनी धनि मुख शुद्धि क लेल ।
कनक क संपुट मे सजि-धजि दय गेल ॥१८

(राज-चर्या)

यावत् संपादित दैनिक आचार ।
बहरयला बहिरंग मंडप क द्वार ॥
नृप मन्त्री-मुख कहबौलन्हि—युवराज !
अनुभव हित देखिअ किछु राज क काज ॥१९
उन्नति मणि-रत्न क थिक श्रमे निधान ।
नहि विश्राम छनो भरि लेथि महान ॥
जन हित नीलकंठ पचबथि विष योग ।
नायक कें पल-पल खटबे क नियोग ।२०
कहय लोक भूपति कें चाहिअ भोग ।
बुझय न किन्तु हुनक पर-सुखहि प्रयोग ॥
कनक-मुकुट नहि मस्तक शोभा साज ।
तप कष्ट क प्रतीक ई काँट क ताज ॥२१
ई अवश्य जे गुरुकुल कटलहुँ क्लेश ।
पुनि अभिषेक संग छूटल सुख शेष ॥
हो श्रमिकहि कें सुख-विश्राम हुलास ।
संयोग क रस स्वाद वियोग तरास ।२२
यौवन नहि केवल इन्द्रिय सुख लेल ।
धन साधन काम क सङ्ग धर्महु लेल ॥
राजयोग थिक भोग त्याग युग धर्म ।
अधिकार क उत्तरदायित्वें मर्म ।२३
आदेश क पालने शिष्य सुत धर्म ।
सुख कर्महि मे—एतबे जीवन मर्म ॥

नहि निद्रा आलस कहुँय विश्राम ।
कर्मचक्र परिवर्तन मन क विराम ॥२४

मित शब्दहिँ आदेश कयल स्वीकार ।
चलला पुनि कार्यान्वित करय कुमार ॥
प्रथम राज-मन्त्रालय कयल प्रवेश ।
'जयतु' कहल सभ जन स्वागत-आवेश ॥२५

रस-रस देखल जत छल कार्य विभाग ।
दल जन क अनुगत कक्ष क कत भाग ॥
सब तरि यामिक दौवारिक क निवेश ।
नियत निरत जन मात्र क जतय प्रवेश ॥२६

सन्धि-विग्रहि क परराष्ट्र क अधिकार ।
राजदूत सबहि क जत हो संचार ॥
देश-देश केर पृथक्-पृथक् अछि सद्म ।
जतय न चलइछ कूटनीति केर छद्म ।२७

कतहु स्वराष्ट्र क अंतरीण व्यवहार ।
शान्ति व्यवस्था प्रजा बीच संचार ॥
शासन-तन्तु क संहत सुघटित पट्ट ।
एकत जनपद भाग, अपर पुर-हट्ट ॥२८

अर्थ व्यवस्था, आय क व्यय क हिसाब ।
भू-क्षेत्र क राजस्व, कर क प्रस्ताव ॥
कोष-कक्ष पुनि कुप्य-अकुप्य निधान ।
लक्षित रक्षित निधि असंख्य अनुमान ॥२९

कतहु लोक कल्याण क चिन्ता हेतु ।
धर्म विभाग विभाजित दान क सेतु ॥
मठ मन्दिर यज्ञालय पावन पीठ ।
तीर्थ तपोवन रक्षा हित पृथ दीठ ॥३०

करहु चिकित्सा, स्वास्थ्य स्वच्छता कार्य।
कृषि विभाग, वनभाग, नहरि अनिवार्य॥
गोधन संवर्धन क निमित्त निकाय।
पशु संरक्षण, खनिज बनिज समवाय॥३१
व्यवसाय क संवर्धना क उद्देश।
वाणिज्य क शुचि शोधना क आदेश॥
श्रमिक प्रशिक्षण चालना क सन्देश।
रीति नीति मत कत संस्थान निवेश॥३२
पुर दुर्ग क पथ खात क नव निर्माण।
योजित स्थापत्य क छल कत संस्थान॥
विविध कला कौशल संवर्धन लेल।
जे जत छल विभाग सभ बुझि सुझि लेल॥३३
गाम – गाम दल पंचायत क अभंग।
जाति वर्ग व्यवसायि मान्य जन संग॥
व्यवहार क पुनि उच्च समस्या सन्धि।
सोझराबथि मीमांसक स्मार्त निबन्धि॥३४
छल शिक्षा क विभाग न राज्य-अधीन।
ऋषिकुल गुरुकुल चौपाड़िए प्रवीन॥
केवल अर्थ – व्यवस्था रक्षा काज।
पुस्तक लेखन प्रोत्साहन हित राज॥३५
छल लघुए ई अवध राज्य तत्काल।
मनु पद्धति प्रशस्त शासन विधि पाल॥३६
असंकीर्ण पुनि समटल कीर्ण-विकीर्ण।
राज-तन्त्र मे प्रजा-तन्त्र अवकीर्ण॥३६

....

निरखि सकल मन्त्रालय सहित वयस्य ।
पुनि चलला देखय रक्षा क रहस्य ॥
जत सेना संभार, सैनिक क कक्ष ।
राज्य सुरक्षा हेतु शमित - प्रतिपक्ष ॥३७

अस्त्र - शस्त्र आगार बीच छल ढेर ।
कवच वस्त्र पुनि वाहन यान अनेर ॥
पंक्ति - बद्ध भट करइत छल अभ्यास ।
सम पद - गति सन्नद्ध बद्धकटि भास ॥३८

सभ अनुशासनशील सबल उर पुष्ट ।
द्रुतपद व्यायत - बाहु चित्त सन्तुष्ट ।
गत - परिवार क चिन्ता वेतन पुष्ट ।
देश - भक्त अनुरक्त, रिपु क प्रति रुष्ट ॥३९

अति विस्तृत रथ - वीथी द्रुतगति यान ।
घोड़सार क विस्तार अमेय प्रमान ॥
गजशाला सुविशाल मत्त मदगन्धि ।
समरोचित शिक्षित गयंद दलबन्धि ॥४०

दिन भरि राज्य क कार्य निरीक्षण
कय कुमार नित आबि ।
सायंकाल समापि पिता लगे
कहथि कथा सम्भावि ॥

पुलकित तन, हुलसित मन, भूपति
सुनथि शासन क रीति ।
कहल आब देखिअ प्रजा क प्रति
व्यवहार क की नीति ॥४१

कत दिन सभ किछु देखइत - सुनइत
राजनीति निष्णात ।
राजकुमार क मन – दर्पण मे
बिम्बित त्रुटि गुण जात ॥
श्रम न भ्रमन मे भ्रम नहि मन मे
मनन करथि मतिमान ।
यदि च प्रजा तन मन धन उन्नत
तखन विधान प्रमान ॥ ४२

× × × ×

(शासन - अनुशासन)

निरखि परखि कत राज - काज विस्तार ।
परिचित समुचित, संचित अनुभव सार ॥
भूपति पद रज प्रणत विनीत कुमार ।
कहल फुरल जे त्रुटि किछु मति अनुसार ॥४३
अछि केन्द्रित सभ राजतन्त्र संस्थान ।
सचिवायत्त बुझाइछ मन अनुमान ॥
जन भावना न बिम्बित राज्यादर्श ।
तखबा बुझबा मे आयल अपकर्ष ॥४४
शासन - शकट चलैछ यथावत् रीति ।
मन बिनु इन्द्रिय गति, बिनु ज्ञान प्रतीति ॥
चेतना क नहि उत्स, न उर गति प्रीति ।
निष्प्रवाह धारा जनु निष्क्रिय नीति ॥४५
रहितहुँ गुन सदोष यदि, बनइछ हेय ।
पयस कलश विष बुंदहु होय अपेय ॥

सुन्दर तन सित म्रण कण बनय अभव्य ।
तेँ सुधार हित कटु वचनहु थिक श्रव्य ॥४६
यदपि विधान क रेखा अछि सुव्यक्त ।
किन्तु व्यवस्था रंग न रंजन – शक्त ॥
अछि सिद्धान्त लिखित ग्रन्थहि मे उच्च ।
किन्तु क्रिया संकुचित, लोक - मत तुच्छ ॥४७
नहि विधान रचना हित बुध विनियुक्त ।
अबुध अनैतिक मुखपटु एतय नियुक्त ॥
अनुशासन भञ्जक केँ शासन शक्ति ।
अछि निरक्षर क आश्रित साक्षर व्यक्ति ॥४८
मित शब्दहिँ एतबा कहि मौन कुमार ।
नृपति चकित-चित चुप सुनि प्रथमहि वार ॥
मुख्यसचिव–मुख श्रीहत विरुचि मलान ।
उत्तेजित बाजल, बुझि निज अपमान ॥४९
शुचि सुकुमार कुमार न अनुभव प्राप्त ।
छथि बुझि सकल न नीति, रीति की आप्त ॥
क्यौ किछु कहि - सुनि देल, कयल विश्वास ।
निर्मल जल रङ्ग आइछ सहज प्रयास ॥५०
राजनीति अति जटिल कुटिल ओझरौत ।
बिनु अनुभव के व्यक्ति ग्रंथि सोझरौत ॥
प्रजा बीच किछु लोक गुप्त व्यवहार ।
राजद्रोही, तकरे थिक व्यापार ॥५१
छथि युवराज भविष्णु देश केर दीप ।
फहरयबा केर छन्हि प्रताप नव द्वीप ॥
तेँ मराल बनि दूध पानि फरिछाय ।
गुण गहि दोष न हुनक दृष्टि ओझराय ॥५२

नृप दिस ताकि चलौल जखन विषतीर ।
सभा स्तब्ध ! किछु माथ डोलौल अधीर ॥
तावत एक कोन बैसल क्यौ धीर ।
बाजल सभ्य भव्य गुरु गिरा गभीर ।।५३

कहलन्हि जे कुमार नहि अनुभव – हीन ।
बुझि-सुझि घुमि-फिरि राज्य परिस्थिति छीन ॥
सीमा अछि संकुचित अवध केर आइ ।
चाही किछु प्रतिरोध; न शान्ति दोहाइ ।।५४

विद्वानहि क नाम विदिते दोषज्ञ ।
अमृत–करे दोषाकर जनइछ विज्ञ ॥
गुण दोषाभावे गुनि गुणी कहैछ ।
पहिल ज्ञान तें दोषक कृती करैछ ।।५५

विन्ध्य हिमाचल दुहु दिस सीमा छाँटि ।
उत्तर दच्छिन कोशल देलन्हि बाँटि ॥
गंगा यमुना पृथक् आइ बँटि गेल ।
सरयू गंडक मे पुनि उठल झमेल ।।५६

अवध राज्य केर सीमा अवधि जतेक ।
सन्धि बन्ध अति शिथिल, न रहल ततेक ॥
उज्जयिनी किछु दाबल निज बल दाप ।
किछु पुनि शबर – नरेश क पड़ले चाप ।।५७

विग्रह कें ग्रह क्रूर मानि कय दान ।
शान्ति पाठ करबे की उचित निदान ?
शनैश्चर क संक्रमण काल विकराल ।
टीपनि टिपने की टरइछ ग्रह जाल ।।५८

रिपु रुज भेषज टेबल केवल साम ।
टारल संकट करइत किछु भूदान ॥

दण्डे उद्दण्ड क थिक खण्डनकारि ।
थिक उपाय अन्तिम बिभेद उपकारि ।।५९
राजनीति - रथ शान्ति - क्रान्ति दुहु चक्र ।
कखनहु सरल पंथ कखनहु पुनि वक्र ।।
साम दान केर जतय न हो गति लेश ।
दण्ड बिभेद क ततय उचित सुनिवेश ।।६०
तेँ सम्प्रति थिक उचित शत्रु संहार ।
ताहि लेल चाही सैनिक संभार ।।
रोग जखन हो उचित तकर परिहार ।
पुनि बिकास – बृंहण केर करब विचार ।।६१
युवराज क ई उचित विचार बुझाय ।
करिअ संगठित प्रथमे प्रजा समुदाय ।।
अनुशासन - निबद्ध जन - शक्ति प्रबुद्ध ।
करइछ शासन – तन्त्र लोकमत शुद्ध ।६२
नगर-नगर ओ ग्राम-ग्राम जत लोक ।
जेना स्वयं संघटित बनय बिनु रोक ।।
प्रथम कृत्य बुझि देश - सुरक्षा काज ।
हो प्रवृत्त से करिअ बिहित महराज ।६३
सकल सभ्य समुदाय पाबि चैतन्य ।
कयल समर्थन संघटना जन – सैन्य ।।
नृपति मुख्य सचिव क दिस कय दृक् पात ।
कहल करिअ जे किछु कहइत छथि तात ।।६४
कुंचित - मुख को बाजथु सचिव प्रधान ।
माथ झुका' आदेश क कयलन्हि मान ।।
अन्तर द्वेषानल धधकैत महान ।
ज्वालामुखी उपर जनु हरित वितान ।।६५

●

पंचम सर्ग

तावत बीतल उमस समय उत्ताप ।
सघन उमड़ि आयल धरती केर भाप ॥
अनुकम्पित करइत बहि उठल बसात ।
प्रकृति क जीवन मे भाग्य क बरिसात ॥ १
सदय सघन घन उमड़ल प्रथम अषाढ़ ।
भीष्म ग्रीष्म केर घटल प्रताप प्रगाढ़ ॥
श्यामल छाया छनहि सुलभ भय गेल ।
मरुथल मे जनु वनस्थली सजि गेल ॥ २
प्रथम बिन्दु पड़ितहि भू भरि रसगन्ध ।
घर – घर पहुँचल सुरभि समीर प्रबन्ध ॥
दिग – दिगन्त सँ पहुँचल मेघ क दूत ।
सुनबय प्रिय सन्देश सरस अनुभूत ॥ ३
जकर प्रतीक्षा करइत छल संसार ।
तृषित नयन, उमड़ल नव जलद उदार ॥
बिन्दु – बिन्दु सँ प्रकृति क जीवन धन्य ।
जनु पौलक म्रियमाण प्राण – चैतन्य ॥ ४
जीर्ण-शीर्ण तृण हरित, भरित जत चास ।
पसरल भू-परिसर नव हरिअर घास ॥
लता गुल्म तरु सब तरि पल्लव भास ।
केवल पत्रहीन छल अर्क – जवास ॥ ५

जेत छल प्रजा जनक उर मे संताप।
उड़ि-उड़ि मस्तक मे बनइत जे भाप॥
शीतल शील स्वभाव कुमारक पाबि।
घनीभूत रस भाव बरसि गेल आबि॥ ६
सभक हृदय मे सहज सत्य जे भाव।
राज्यक प्रति स्वदेश गत प्रेम प्रभाव॥
उमड़ि-घुमड़ि घन सघन द्रवित रस बिन्दु।
भेल प्रवाहित सरिता भरइत सिन्धु॥ ७
जे किछु छल मन मे अभाव-अभियोग।
पूरल क्रमहि समाहित नीति प्रयोग॥
जन-जन मे व्यापल उत्साह उमंग।
अंग-अंग मे विद्युत् शक्ति तरंग॥ ८
पहुँचथि जतय कुमार ततय जन लक्ष।
घन धुनि सुनि शिखि-गण नाचय प्रत्यक्ष॥
दृष्टि-वृष्टि पड़ितहिँ जनपद उल्लास।
हरित भरित, जन-वन मन-तरु क विकास॥ ९
नित-नूतन उत्साहक तरल तरंग।
व्यक्ति जाति-हित, जाति समाजक अंग॥
पुनि समाज राष्ट्रक चिन्तन मे मग्न।
राष्ट्र संगठित विश्व-प्रेम संलग्न॥१०
विश्व उदय तखनहि यदि राष्ट्रक क्षेम।
देश प्रेम द्योतित प्रदेश प्रति नेम॥
पुनि प्रदेश भूषित यदि गामक हेम।
व्यक्तिक स्नेहेँ बरय समाजक टेम॥११
व्यक्तित्वक विकास हित, उदित समाज।
पुनि समाज-संगठनहि व्यक्तिक साज॥

राजा निर्मित राज्य – सागर क सेतु ।
राजित राजा प्रकृति – रंजन क हेतु ॥१२
सुनि प्रेरक सन्देश संगठन – मंत्र ।
नृप प्रतीक लय संयोजित जन – तंत्र ॥
व्यक्ति घटक सामाजिक घटना मेल ।
व्यक्ति समाज क वाद न भेद क लेल ॥१३
जन – जन मे सामाजिक सेवा – भाव ।
बढ़ल स्वयं सेवा क प्रेरणा आब ॥
विघटित नहि क्यौ, स्वयं संघटित लोक ।
यम नियम क बन्धनहु मुक्त आलोक ॥१४
कण - कण वाष्पित जन गगन क घन भाव ।
बिन्दु - बिन्दु परिणत ऋतु रुचिर प्रभाव ॥
सरस लोक परिसर तृण - तृण उल्लास ।
आइ पावसी संघटना क विकास ॥१५

× × × ×

(वर्षा - शरद : त्याग - तप)

छल वसु संपत्ति जते संचित ।
धरती माता कैं कय अर्पित ॥
नहि राखल किछुओ सलिल शेष ।
घन निर्मल अंबर मात्र वेश ॥१६
बलिदानी दानी दिव्य जलद ।
गलि स्वयं लोक हित वर-द बल-द ॥
जनि रक्त सिक्त सुजला सफला ।
श्यामल धरणी जननी सबला ॥१७

कयलन्हि जगत क उत्ताप नाश ।
निज तन अर्पण करइत सहास ॥
सहि माथ ताप - आतप प्रहार ।
जग कें देलन्हि छायोपहार ॥१८

तपन क कठोर कत दमन सहल ।
पवन क झकोर कत जोर बहल ॥
कत उषम उमस, कत पवन दमस ।
सहि सहि जग कें कय सफल सरस ॥१९

जड कें सजीव कय जीवन दय ।
आन क हित नित तन-मन बलि कय ॥
बलिदानी पावस मृत्युञ्जय ।
भरि कय पाओल अमृत क परिचय ॥२०

....

अछि त्याग-तप क उज्ज्वल प्रभाव ।
बीतल तीतल समय क स्वभाव ॥
अछि स्वच्छ सलिल, निर्मल अकास ।
जग मे शोभित शरद क विकास ॥२१
अछि पथ प्रशस्त, नहि पंक शेष ।
तपन क उत्ताप न अछि विशेष ॥
निष्कलुष सरित धारा अशेष ।
निर्मेघ नील अंबर क देश ॥२२

चहु दिस झलकय कास क विकास ।
भरि चर-चाँचर शालि क सुवास ॥
सर - सरसी बिच कुमुद क हुलास ।
राका रजनी सजनी विलास ॥२३

सरिता - रशना, सैकत - वसना ।
पंकज - चरणा, हंसी - गमना ॥
खंजन - नयना, शशिधर - वदना ।
शरद क ललना, जगत क अङ्गना ॥२४
सर - सरिता तट सद्यः-स्नाता ।
श्रृङ्गार - हार उर, शुचि - गाता ॥
चन्द्रिका धौत अम्बर धवला ।
छतवन-वन घुमथि शरद नवला ॥२५
निर्मल अकाश, शीतल बतास ।
कास क विकास, खंजन क लास ॥
शेफालिका क महमह सुवास ।
चान क प्रकाश शरद क हुलास ॥२६
दुर्दिन नहि, निर्मल भाग्य - गगन ।
नहि पंक रोध, नहि समय सघन ॥
सब तरि सुख-सरसिज केर विकास ।
उत्साह शरद उतरल सुहास ॥२७

....

(संघ-शक्ति)

छल अवध अवधि जन-पथ अपंक ।
समुदित संगठन क नव मयंक ॥
नक्षत्र क्षुद्र स्वार्थ क समस्त ।
अज्ञान - तिमिरहि क संग पस्त ॥२८
जनपद उपवन मे सुरभि - मूल ।
जत छल विकसित नव तरुण फूल ॥
संगठन - सूत्र मे भय निबद्ध ।
शक्ति क पूजा यलि हित पिनद्ध ॥२९

प्रतिदिन नियमित व्यायाम योग ।
आसन पद संचारण प्रयोग ॥
कते विध दंडक चापक नियोग ।
करइत शरीर सारिल निरोग ॥३०

बुद्धिक विकास हित शुभ विचार ।
चर्चित वर्चस्वी उक्ति सार ॥
व्यक्तित्त्व क उत्कर्ष क नियोग ।
हो जकर समष्टिक हित प्रयोग । ३१

हो शक्ति हेतु अहिँ क्रान्ति इष्ट ।
पुनि क्रान्ति भावनात्मक विशिष्ट ॥
भावना कर्मयोगेँ गरिष्ठ ।
कर्महु धर्म क मर्मेँ वरिष्ठ ॥३२

जत पर्व गर्व पूर्वज क प्रथित ।
जेहि सँ समाज देश क चिर हित ॥
उत्साहेँ श्रद्धेँ आयोजित ।
भरइत छल नव प्रेरणा बलित ॥३३

बूढ़हु मे देखिअ नवोत्साह ।
जड़ - मूढहु चैतन्य क प्रवाह ॥
शिशुअहु मे नव प्रेरणा प्राण ।
सेवा संघटना सम क ध्यान ॥३४

तन बल न्यूनहु, मन बल अनून ।
अनुभव वानी बल बढ़ल दून ॥
वन प्रस्थित करइछ नित प्रवास ।
प्रेरित करइत गृह - गृह प्रकाश ॥३५

संन्यासी देलन्हि ज्ञान - योग ।
से हरल कर्म - जडता क रोग ॥

गुरुकुल चौगाड़िक जते छात्र ।
संघटन भावना भरित पात्र ॥३६

नगर क चत्वर, गाम क परिसर ।
वन आश्रम बाहर – अभ्यन्तर ॥
सभ तरि संगठन क मंत्र – ध्वनि ।
आत्माहुति यज्ञ कँ विधि हित जनि ॥३७

जय जन्मभूमि जय जगदम्बा ।
जय आर्य संस्कृति क अवलम्बा ॥
सब तरि व्यापित हो एक घोष ।
जय राष्ट्र चिरन्तन दलित–दोष ॥३८

× × × ×

(शक्ति–पूजा)

तावत देवी – पूजा क पर्व ।
आर्य क अनार्य पर जय क गर्व ॥
आसुरी प्रवृत्ति क दमन दर्प ।
दैवी विभूति केर विजय पर्व ॥३९

युग – युग मधु – कैटभ उत्पाती ।
जुटइछ प्रजापति क संघाती ॥
रहइछ यदि निद्रित पुरुष मुग्ध ।
जगबय चैतन्य प्रबुद्ध शुद्ध ॥४०

अछि काम – क्रोध रिपु अंतरंग ।
बनले जे शुम्भ – निशुम्भ अंग ॥
हति दैवी संहति शक्ति युक्त ।
मेधा बल सुरथ समाधि मुक्त ॥४१

अछि बढ़ल आसुरी अहंकार ।
महिषासुर अधिनायक विकार ॥

विघटित समाज सुर संघ बद्ध ।
युग – युग हतइछ रिपु रन अबद्ध ॥४२
घर – वर अर्चित चंदन चर्चित ।
मानस कलशोपरि सुमन ललित ॥
मंगला जयन्ती भद्रवती ।
काली लक्ष्मी जय सरस्वती ॥४३
विजया क पर्व प्रेरणा देल ।
आयुध पूजा मन्त्रणा भेल ॥
सभ जुटल शक्ति साधक जन गन ।
अर्पित करइत निज तन–मन–धन ॥४४
ऋषि मुनि सुर पितर क लैत नाम ।
जग कल्याण क पथ बुझि ललाम ॥
जननी ओ जन्मभूमि रक्षण ।
जीवन व्रत संकल्पित तत् क्षण ॥४५
पत्रं पुष्पं श्रद्धानुसार ।
बलि – वेदी पर चढ़बय उदार ।
सर्वस्व समर्पण केर प्रतीक ।
दक्षिणा सविधि अर्पित अभीक ॥४६
शुभ विजय – वैजयन्ती ललाम ।
फहराय जननि पद कय प्रणाम ॥
स्तुति कयल साश्रु गद्गद वाणी ।
जय मातृभूमि जय कल्याणी ॥४७
शक्ति–स्रोत हे शक्तिमयी जननी !
हम अहँक अमर सन्तान ।
अहिँक चरण - रज जीवन अर्पल ।
सफल करिय दय आशिष दान ॥४८

प्राणि मात्र मे प्रसूत चेतना,
थित-गति परा प्रकृति परिणाम ।
राष्ट्र रूप सँ जीवित जागृत
देश - मातृका चरण प्रणाम ॥४९

शक्ति प्रवृत्तिमयी ! माँ भक्ति निवृत्तिमयी
शुचि - रुचि अभिराम ।
व्यक्ति-व्यक्ति मे व्याप्त जाति हे !
राष्ट्र-निकेतिनि ज्योति प्रणाम ॥५०

सुहृद-सुमति हित कुसुम - कोमला
रिपु - दुर्मद लय वज्र पषान ।
राम - कृष्ण जननी - चिरन्तनी
विश्व - मातृका चरण प्रणाम ॥५१

बल अजेय, शुभ शील, विमल उत्साह,
चरित आचरित शुभ-द ।
जननि ! योग्य सन्तान कहाबी
जगद्गुरु क पुनि पद - संपद ॥५२

स्वीकृत सेवा - पथ दुर्गम
स्वयमेव साधनें सहज बुझाय ।
बल रक्षण कृत, ज्ञान कर्म हित,
संपद पर - आपदहि लगाय ॥५३

प्रेय - श्रेय लौकिक - वैदिक
भौतिक-आध्यात्मिक सिद्धि क हेतु ।
एक मात्र साधन सर्वोपरि
सेवा व्रत वलिदान क केतु ।५४

हृदय - हृदय मे निहित ध्येय
निष्ठा क स्फूर्ति अति तीव्र बनय ।
पल-पल तिल-तिल वलिदान क हित
अन्तःकरण क शिखा बरय ।५५

●

षष्ठ सर्ग

छल समय निशीथ क अन्धकार जग व्यापल ।
निश्चिन्त निशापति विरत कतहु अस्ताचल ॥
तारा-दल टिम-टिम करइत नभ केँ छापल ।
रवि-शशि क इजोत इरोत देखि दुति दापल ॥ १

सभ लुप्त चेतना सुप्त जीव संसारी ।
अछि जागल केवल दस्यु चोर व्यभिचारी ॥
नहि जकरा रुचइछ दिव्य ज्योति से निश्चर ।
वासना विवश भूख क वश घन-वन संचर ॥ २

शुक कोकिल हंस मयूर जतेक विहंगम ।
करइछ से दिव्य प्रकाशहि मे स्वर-संगम ॥
अछि किछु पुनि जे ज्योति क विरोध रुचि रखइत ।
घन तिमिरहि मे उलूक दल कटु रव करइत ॥ ३

हिंसक पशु वन घुमइछ उद्दीपित लोचन ।
करइछ निरीह लघु जीव क प्राण विमोचन ॥
झिंगुर क झनक, फुफुकार फणि क, कहुँ सुनबे ।
चमगादरि बादुरि फड़क-धुड़क, कत गनबे ॥ ४

दुर्गम रात्रि क दुर्ग स्थित तिमिर क कारा ।
पहरा पर जागल केवल गगन क तारा ॥
झनकय झिंगुर बेड़ी, दृढ़ निद्रा बंधन ।
संसार बंद, भय सकय न ककरहु स्पंदन ॥ ५

दृग मे निद्रा तनिकहि जे जीतल चिन्ता ।
टकटकी राति भरि मन मे जनिक छगुन्ता ॥
स्वार्थ क इंधन, पर-द्रोह क आगि लगाबथि ।
से चिन्ता चिता पजारि स्वयं कें जारथि ॥ ६

....

(षड्यन्त्रणा)

जहियै सँ सचिवायत्त शासन क टीका ।
मुख भेल राज्य-परिषद मे सचिव क फीका ॥
ज्वाला उर मे छल दबल एते दिन कहुना ।
से भड़कि उठल संगठन क सुनि-सुनि रचना ॥ ७

नहि सकथि व्यक्त कय युवराज क प्रति रोषे ।
नहि दै सकैछ किछु बुझि-सुझि नृपमति दोषे ॥
राजा क संग पुनि प्रजा-जन क व्यवहारो ।
अनुरक्त, कुमार क सब तरि छल संचारो ॥ ८

छन्हि मन मे धह धह स्मरण क ज्वाला जरइत ।
कहियो कुमार कोठा लग हम किछु गुनइत ॥
फेकल केओ पान क पीक ठिका कय टीके ।
हँसि कहल, छमब अनजान सखा, मन नीके ॥ ९

छल विमतिदत्त मन्त्री प्रधान उर ताडित ।
युवराज क नव नेतृत्व प्रभावें ज्वालित ॥
सन्तप्त द्रोह अनलें दिन-राति विखिन्ने ।
नहि दिन मे चयन, नयन मे राति न निन्ने ॥१०

कुसुमाकर अबितहिँ जड चेतन जत विकसित ।
हो तदपि अभागल पात करीर क निपतित ॥
दाख क परिपाकेँ रसना सभ क जुड़ाइछ ।
केवल काक क मुख व्रण-वेदनेँ पिड़ाइछ ॥११

उचिते उलूक केँ नहि दिन जोति सोहाइछ ।
राका रजनी दिस की चोर क चित जाइछ ॥
शुचि-शील कुमार क सत् संकल्प क धारा ।
नहि विमति क उर-मरु मे बहइछ शुचि सारा ॥१२

जे छल सुनगैत द्वेष-अग्नि क अंगारे ।
से भड़कि उठल संगठन पवन संचारे ॥
चाहय डाहय घर बसल चुपहिँ अविचारी ।
कयने छल तेँ किछु गुप्त मन्त्रणा जारी ॥१३

निस्तब्ध राति, निःशब्द जगत निद्रा मे ।
अन्तर्गृह बंद कपाट कूट मुद्रा मे ॥
षड् दल बनाय अभिचार कर्म अभिमंत्री ।
शव-वाहिनी क आवाहक जनु षड्यन्त्री ॥१४

करइत छल मोहन वशीकरण उच्चाटन ।
विद्वेषण मारणहि क कटुतम उद्घाटन ॥
नहि शान्ति-कर्म हित सत विचार परिपोषित ।
होइत छल केवल उत्क्रान्ति क पथ घोषित ॥१५

क्यौ बाजि उठल, अछि सोझ विचार हमर ई ।
नहि चलत अन्यथा कथा, विचित्र कुमर ई ॥
तेँ उचित बुझाइछ हुनके वश मे लाबी ।
बनि अंतरंग हुनि अंग चलाबी दाबी ॥१६

दोसर विचार देलक, ई बुझिअ असंभव ।
छथि स्व वश कुमार, न वश मे आनब संभव ॥
किन्तु करिअ काज रचि व्याज, जेना महराज क ।
हो मन उच्चाटित लटकि जाल मे राज क ॥१७

तेसर जन कहलन्हि क्रूर, उपाय न दोसर ।
अछि सोझ बात जे रचिअ साहस क अवसर ॥
छल - बल सँ ककरहु हाथ कुमार क घाते ।
अछि उचित, आब नहि दोसर सुझइत बाते ॥१८

नहि - नहि, ई थिक उत्पात अशान्ति क धारा ।
पड़बे सब संभव बध-बन्धन ओ कारा ॥
अछि अभिमत शांतिक पथहि चलिअ तजि हिंसा ।
करु असहयोग अभियोग, चारिम क मन्सा ॥१९

बाजल पुनि पाँचम जे छल किछु मन गुनइत ।
छल-बल प्रयोग फल, स्त्र-बल अबल सभ जनइत ॥
ता' धरि राजा नहि मोह - मूढ़ भय जाइछ ।
ता' धरि युवराज क कंटक नहि बहराइछ ॥२०

सुनि कथन समर्थन सभ क कुटिल षड्यंत्री ।
बाजल- मध्यस्थ महंथ बनल खल मंत्री ॥
अछि इष्ट सभ क जहि सँ हो इष्ट क साधन ।
कंटक अनिष्ट केर सहजहिँ हो पुनि बारन ॥२१

जत कहल प्रयोग अपाय - उपाय व्यवस्था ।
नहि अछि विरोध, सब संगत समय अवस्था ॥
संहृत रूपेँ जे कहल, प्रयोग सभ क हो ।
षड् मंत्रित षड यंत्रित षट् तंत्र सफल हो ॥२२

करबे सभ शान्ति क नाम जपन जनता मे ।
पुनि असहयोग अभियोग कार्यकर्ता मे ।।
अनुरक्तहु मे करबे प्रयुक्त उच्चाटन ।
कत कपट जाल रचि ओझरायब अनुशासन ।।२३

मारण प्रयोग नव संगठना लय करबे ।
किछु रचि दुर्योग दमन रचना रुचि धरबे ।।
यदि मूल उपटि जायत शाखा-दल झरते ।
निर्झर स्रोतक रुकितहिँ प्रवाह नहि बहते ।।२४

नृपति क वित केँ अनुकूल करिअ सभ यतनेँ ।
स्वयमेव बनथि जे वशीभूत प्रभु अपने ।।
पुनि भेद-नीति वश तनुज बनथि प्रतिकूले ।
तखनहि विद्वेष क वृक्ष लदत विष-फूले ।।२५

रागहि सँ होइछ विद्वेष क उत्पादन ।
तपन क तापे बनइछ की नहि घन सावन ।।
काम क ललाम भूमिहि क्रोध क उर्वरता ।
उन्नति क शिखर सँ पतन क बेग प्रबलता ।।२६

अवध क सुविदित रिपु उज्जयिनी-नृप-कन्या ।
जे जगत विदित लावण्यमयी रुचि-धन्या ।।
तनिकर सौन्दर्य क चर्चा लहरि बहायब ।
धीरहु कुमार केर चित्त-तरणि भसिआयब ।।२७

निश्चय नव वयस बिहाड़ि बहय अति उद्धत ।
सौन्दर्य क झंझा झरी, कामना विद्युत ।।
उद्दाम काम करका, ठनका प्रभु सत्ता ।
झकर न मन केँ कंपित करैछ रसवत्ता ।।२८

अखनहि हुनि मन मे प्रणय · तरंग उमड़ते ।
नहि गुनि रिपु-तनुजा, तनि' परिणय चित धरते ॥
पुनि प्रणय-प्रीति कें रिपु हित रीति प्रवादें ।
हम भेद नीति कें सफल करब छल-वादें ॥२९

नव संगठना कें विद्रोह क दय नामें ।
गुपचुप साधब बहुविध प्रमाण परिणामें ॥
रिपु उज्जयिनी-नरेश कें कसि उकसायब ।
निज सिद्धि हेतु जत कूटनीति अपनायब ॥३०

पुनि सकल सफल होयत जे किछु अछि मन मे ।
नृप कें कठपुतरी बना' नचायब छन मे ॥
युवराज वृक्ष केर जड़ि उपाड़ि यदि लै छी ।
पुनि प्रजा-संगठन लता स्वयं मुड़ि लै छी ॥३१

संगठन - हीन जन मे नहि शक्ति निरोधक ।
उघड़त तृन तन्तु न रासि अश्व गति रोधक ॥
उन्मुक्त अश्व जत चाहय चक्र घुमाबय ।
पुनि रथी नृपति निपतित न राज्यपथ आबय ॥३२

छाया सम अनुगत सहमत सचिव-विचार क ।
हुअकारी भरय शिवा जनु मुख्य शृगाल क ॥
उत्पात क सूत्रपात कय जाल पसारल ।
बंधन बिच कोना फसत खग, वधिक विचारल ॥३३

× × × ×

(कूट - कपट प्रयोग)

सुनइत छल केवल नखत गगन - गत दूरे ।
कंपित उर चिन्ता ज्वलित डुबल कत पूरे ।।
मुख लाल आल प्राची क कोप वश सुनितहिँ ।
तामसी तामसेँ बिदा भेलि, अटकल नहिँ ।।३४

चलि देल सबहिँ अन्हरोखहिँ गुप्त विधानेँ ।
लय अपन - अपन सिर काज भार अवधानेँ ।।
तनइत छल कपट क जाल, अर्थ कन छिटइत ।
घुरि फिरि देखइत जे कत कपोत अछि फँसइत ।।३५

क्यौ बनल यती वक व्रती दीन मीन क क्षति ।
क्यौ श्रमिक श्रमण बनि दल बटोरि बल बढ़बथि ।।
क्यौ तर्क कर्कश क कंटक जनपथ बिछबथि ।
पुनि क्यौ समाज गति सहज बक्र-पथ चलबथि ।।३६

दक्षिण अनुकूल पक्ष जत बुझिअ विपक्षे ।
मत घोर अघोरि क वाम काम - पथ स्वच्छे ।।
रक्षक थिक राक्षस मूल वयं रक्षामः ।
थिक देव दैओ यजमान न उचित यजामः ।।३७

प्रीति क नामेँ छल कपट प्रपंच पसारय ।
कहि कला कलित वासना विषय रस गारय ।।
संघटित रूप सँ विघटित करइत जन-जन ।
मुख मधुर-मधुर उर माहुर जनु गनिका गन ।।३८

जत चारुवाक जन तनिका ताकि बटोरल।
जत जे प्रचार-पटु सभ कें संग सङोरल॥
कत रचल कुतर्क वितर्क भ्रम क उत्पादक।
जे जन-समाज मे बुद्धि-भेद सम्पादक॥३९

कहइछ क्यौ, ज्ञान-कथा थिक भंडक धूर्तइ।
पुनि भक्ति लोक-मानस कें दासे बनबइ॥
अछि कर्मकाण्ड पाखंड पंडित क जारी।
चकमक ऊपर भीतर कारी महकारी॥४०

संसार थीक भौतिक तत्त्व क संघटना।
नहि कर्ता क्यौ, जड प्रकृति सहज संकलना॥
एहि पार सागर क जीवन भूमि हरितिमा।
ओहि पार शून्य क्षितिज क अछि नील मलिनिमा॥४१

'माता भूमिः' श्रुति सूक्त नित्य जपइत जे।
माटि क धरती केर पुत्र स्वयं बनइछ जे॥
नहि थिक से चेतन, जड भावहि क पुजारी।
अछि वस्तु-जगत सँ दूर कल्पनाचारी॥४२

प्रत्यक्ष चक्षु जे देखइछ से सत रूपे।
आन्हर खसइछ आगम अनुमान क कूपे॥
थिक मुक्ति भुक्तिहि क नाम न चिन्ता धारी।
इन्द्रिय-सुख स्वर्ग, नरक थिक रोग-बुढ़ारी॥४३

स्वच्छन्द प्रणय; परिणय थिक दुर्वह बंधन।
की पुत्र? पिता की? सब काम क अनुबंधन॥
अछि काम सभ क उद्देश्य; अर्थ पुनि साधन।
थिक शून्य मोक्ष, धर्महु कामार्थ क बाधन॥४४

जीवन थिक जहि मे नहि किछु नैतिक बंधन ।
साध्ये जे किछु साधन क न किछु प्रतिबंधन ॥
संघर्ष परस्पर थिक विकास केर सीढ़ी ।
उत्कर्ष सुकर अपनाय शासन क पीढ़ी ॥४५

आपात - मधुर परिणाम-विधुर सुनि नारा ।
बहि गेल बहुत सहजहिँ लोकायत धारा ॥
यम-नियम त्याग-तप मर्यादित तट बंधन ।
टुटि खसल कलुषता मलिन प्रवाह चिरंतन ॥४६

स्वच्छंद बाढ़ि बढ़ि दहा देल वन - बाधो ।
डुबि गेल विचार क शस्य क्षेत्र निर्बाधो ॥
टुटि गेल समाज क बंध, दहल घर - आङन ।
भरि गेल पाँक स्वार्थ क जीवन पथ जन-जन ॥४७

नैतिक पतन क ई पर्व जखन परिपूरित ।
अन्तर्बल साधक तेज गर्व दूरीकृत ॥
जत छल पुर-गाम क मुख्य लोक किछु काजुल ।
तकरा मिलाय लेलक दय-लय किछु फाजुल ॥४८

पहिने विरोध कयलक समाज-सेवी केर ।
पुनि कहल व्यर्थ थिक चर्च मातृ-वेदी केर ॥
श्रद्धान्ध युवक-जन मूढ़ धूलि वंदन मे ।
सुख वंचित संचित करओ सुरभि नंदन मे ॥४९

थिक शान्ति हेतु अनुशासन विदित विचारे ।
जगती क बीच सद्भावना क विस्तारे ॥
सहयोग परस्पर राज्य - राज्य मे समुचित ।
कर्तव्य न संघर्ष क हित जन उद्वेजित ॥५०

थिक उचित पठाबी देश – देश सन्देशे ।
श्रमण क मण्डल सँ साम्य शान्ति उद्देशे ।।
बुद्ध क वाणी क प्रचार सभ क उपचारे ।
जेहि सँ होयत अविलम्ब सुखी संसारे ।।५१

अस्त्रालय जे तकरा विहार मे बदलब ।
हिंसक सैनिक सभ शान्ति-दूत हो अभिनव ।।
हम देश-देश कें एक सूत्र मे आनब ।
अवधेश्वर कें शान्ति क अखिलेश्वर मानब ।।५२

जे काज न शस्त्र कयल से वस्त्र कषाये ।
पूरित करते साकेत क शान्ति - निकाये ।।
जत देश - देश मे पसरल द्रोह क ज्वाला ।
निर्वापित करते विश्व - बन्धुता पाला ।।५३

जे काज इष्ट हो तकर करिअ तैआरी ।
अपनहि जोड़िअ पहिने विश्व क भैयारी ।।
तें प्रथम निरस्त्रीकरण योजना जारी ।
अवधहि सँ अद्यावधि कार्यान्वय कारी ।।५४

आपात – मधुर ई निर्णय भेले घोषित ।
सैनिकता यौद्धिकता क भावना दूषित ।।
देश क खंड क संकोच क करिअ न चिन्ता ।
थिक उचित रचिअ पुनि विश्व क कोनहु नियंता ।।५५

अवधेश्वर आइ न अवध-अवनि केर नायक ।
ई बनथु शान्तियुग–स्रष्टा विश्व विनायक ।।
हिनकहि नेतृत्व क बल साकेत क नामो ।
पुनि जगत बीच हो विदित शान्ति केर धामो ।।५६

हो मुक्त-द्वार साकेत, न किछु अवरोधे ।
सभ करथु सार्वभौमी सभ्यता क शोधे ॥
सभ लेथु विश्वबन्धुत्व क नृप सँ दीक्षा ।
राष्ट्रिय समाधि पर अन्ताराष्ट्र समीक्षा ॥५७

मंत्री मंडल क विचार चाह बुझि भूपति ।
दय देल नीति परिवर्तन हित निज अनुमति ॥
किछु न ति बोध अनुरोधल यद्यपि बुध जन ।
नहि छनहु परस तैलाक्त गात जनु जल-कन ॥५८

रक्षक दल आपस भेल राज्य सीमा सँ ।
सैनिक सभ केँ अवकाश युद्ध खीमा सँ ॥
अत शस्त्रालय खुजि गेल धर्मशाला तत ।
सरसी चिमटा गढ़ले गलाय भाला जत ॥५९

एहि विधि संपूर्ण अवध मे युद्ध-विरोधी ।
जनमत प्रस्तुत छल अर्थ-काम अनुरोधी ॥
नहि तरुण रण क उपयोग योग्य उत्साहित ।
सब तरि देश क चौदिश जन रक्षा बाधित ॥६०

....

राज्य क सीमा जे किछु दिन सँ निरुपद्रव ।
सुनि पड़ल कतहु आक्रमण, कतहु जन विप्लव ॥
नहि बुझि पड़इछ सहसा उज्जयिनि क ढाढस ।
बढ़ि गेल कोना अवध क अवरोध क साहस ॥६१

जखनहि पहुँचौल क खबरि गुप्तचर सत्वर ।
तखनहि पुनि शवर-नरेश क पहुँचल अनुचर ॥
छल अभियोग क आरोप अवध केर ऊपर ।
धन-कर संग्रह करइछ अनुचित अवधेश्वर ॥६२

वन देश अशेष हमर थिक वन्य प्रजामय ।
पुर ग्राम पौर ग्रामीण क जेना अनामय ॥
थिक उचित उभय दिस हो निर्धारित सीमा ।
अन्यथा युद्ध ज्वाला संभावित भीमा ॥६३

× × ×

(शान्ति विडम्बना)

व्रण पर कटु लवण जकाँ अति दुःसह पीड़ा ।
शान्ति क प्रसून केँ कतरय जनु कटु कीड़ा ॥
जनु तरु विहंग पर बाज सर्प दुहु दिस सँ ।
झपटल, पुनि व्यापल तनु जनु रुज ओ विष सँ ॥६४

नृप मन मे जागल रोष, दोष थिक अपने ।
हम छी जगितहुँ दृग झपने देखइत सपने ॥
आबहुँ थिक उचित विचार दंड उद्दंड क ।
खड्ग क धारा मे डुबा देब अरि बंड क ॥६५

बजबाय सभा मंत्री ओ जत दरबारी ।
कहलन्हि नृप, की कर्तव्य समय अनुसारी ॥
मुख देखि परस्पर मुख्य सचिव उठि बाजल ।
हे महाराज, नहि अछि अवध क किछु बाधल ॥६६

जतबा उज्जयिनी केर दाबा सीमा पर ।
से अछि निर्जन मरुधरा मात्र नहि उर्वर ॥
किछु योजन कय दी दान नीति अनुसारे ।
नहि दंड विभेद क कार्य पड़त व्यवहारे ॥६७

वन देश भालु मर्कट प्रदेश, जन मूढ़े।
नहि उत्पादक, रक्षा क भार अछि गूढ़े।।
थिक न्याय, न्यायपति नृपति क मत व्यवहारे।
कय दी स्वतंत्र वन कें समय क अनुसारे।।६८

भय जायत एतवहिं रुष्ट तुष्ट, रिपु मित्रे।
सब तरि शान्ति क सद्भाव क रंजित चित्रे।।
पुनि मित्र पड़ोसी बनि कृतज्ञ नत भावें।
संगत, अवध क शान्ति-प्रियता क प्रभावें।।६९

अभिनव प्रयोग ई राजनीति मे थापित।
होयत पुनि जग भरि अवधेश क यश व्यापित।।
शासन सँ हिंसाभाव मेटायत सहजहिं।
राजा ऋषि होइछ कोना, देखओ जग अबअहिं।।७०

सुनि वचन नृपति निष्प्रभ, सभा क मुख देखल।
निस्तब्ध मौन जन, तदपि श्रुतधि मुह खोलल।।
जत आगि मिझायब लोक उमलि जल-धारा।
तत उचित कहाँ धरि ढारब घी भरि टारा।।७१

नहि दान भीति वश, अहिंसा न बल-हीना।
अनका स्वाधीन करत की स्वयं अधीना।।
दमने थिक रिपु केर शमन, शम न रिपु-दमना।
शान्ति क लतिका हित वीरत्व क तरु पलना।।७२

रोकल सचिव क सहचर बीचहि रुचिहारी।
के बाज़ि रहल बिच सभा न जे अधिकारी।।
थिक राजनीति अति गूढ़, मूढ़ अविचारी।
जतबे मति-गति ततबे धरि ज्ञान बघारी।।७३

शान्ति क समता केर दूर रहओ मधु धारो ।
नीतिहु क दृष्टिएँ आइ सन्धि व्यवहारो ॥
दुहु दिस रिपु संगहिँ तनल जखन अभियानी ।
अवध क वध करबायब न वीरता मानी ॥७४

जे साम दान केर बान्ह बान्हि रिपु बाढ़ि क ।
कराइछ निरोध, पट बचबथि फटितहुँ पाढ़ि क ॥
जे व्यर्थ न सैनिक रक्त समर बढ़वै छथि ।
संकट मे देश क नाव खेब नृप लै छथि ॥७५

सभ जन चुप, देखिअ नृप-मंत्रि क नय नूतन ।
रिपु कोना परावर्तित होइछ बिनु प्रयतन ॥
सीमा विवाद हित पंचायतन नियोजित ।
वन देश हेतु नव संविधान संयोजित ॥७६

नहि आइ व्यर्थ क्यौ युद्ध क वाद्य बजाबथु ।
नहि रघु राघव नामेँ जन केँ उकसाबथु ॥
जे दुइ देश क बिच रिपु-भावना बढ़ौता ।
शान्ति क द्रोही से राज्य क शत्रु कहौता ॥७७

यदपि देश भरि सन्धि योजना सँ सभ आदृत ।
शांति क नामेँ छल अशांतिहि क बीज समाहित ॥
जे जन समर क चर्च करय से दण्डनीय थिक ।
हिंसा नामहि वीर्य ओज बल खण्डनीय थिक ॥७८

●

सप्तम सर्ग

(क्रिया-प्रतिक्रिया)

कन्या राशि क योगहिँ तरुण तरणि किरणावलि ।
चमकि-दमकि भरि पोख सोखि रस कयल स्वतनु वलि ॥
क्रमहि क्षीण हेमन्त वात कम्पित कर दुर्बल ।
ओढ़ि गाढ़ अम्बर थर-थर कटइछ दिन कलबल ॥१

नहि ओ रहले ओज खोज की कमलक करता ?
घटल प्रतापक दाप आब की जडता हरता ?
सब तरि पसरल जाल कुहेस क नहि किछु सूझय ।
गाढ़ जाड़ अछि ठाड़ सलिल नहि रवि कर छूबय ॥२

राति अराति क सभ तरि बढ़ि-चढ़ि व्यापित सीमा ।
थर थर कँपइत खग नीरव बसि नीड क खीमा ॥
पाला मारल चान गगन मे पियरायल अछि ।
सन-सन पवन क बान सघन वन घबरायल अछि ॥३

घटल सुख क दिन, बढ़ल राति पीडा क जगत भरि ।
हिमपात क वश गलल सुकृत दल कमल क जड़ि धरि ॥
नहि शरीर मे शेष उष्णता, शीत क त्रासी ।
प्राण त्राण हित तकइत तूल तरनि अगियासी ॥४

अपमानित दिन-मान, प्रमानित निशा महाने ।
चान कुहेस-मलान भानु खद्योत क भाने ॥
पवन प्रेरणा पाबि प्रकृति जड़ जाड़ बनाओल ।
छल पाला मुह जाबि कमल कत दूर गलाओल ॥५

यद्यपि सीमा संकट विकट प्रकट से टरले ।
अनं प्रदेश मे अवध-नरेश क सत्त्व निघटले ॥
किन्तु प्रजा बिच अन्तर्ज्वाला धधकि रहल छल ।
दृश्य बाहरी हरित-भरित सन बुझि पड़इत छल ॥ ६

शान्ति घोषणा सुनितहिँ जन मन मे अशान्तिहि क ।
स्वर, शासन प्रति असन्तोष; भावना क्रान्तिहि क ॥
यदपि सचिव-मंडल करइत छल सन्धि क मंडन ।
किन्तु स्वाभिमानी जन मन मे सहजहि खंडन ॥ ७

बाजथि सभ, पति राखि सकल नहि से की भूपति ?
सोचि सकल नहि जे भविष्य से विकल सचिव मति !
जे न रोकि सकले हिंसा से कोना अहिंसा ?
शान्ति भ्रान्तिए करय मृत्यु केँ जे कि प्रशंसा ॥ ८

आबहुँ उचित शक्ति संघटना, सैन्य विरचना ।
सन्धि-बन्ध भेदक विग्रह केर ग्रह क अर्चना ॥
नहि राज्य क विस्तार यदपि अवध क आकांक्षित ।
वांछित अछि मार्जन परन्तु जे अंचल लांछित ॥ ९

जत संस्कारी लोक बोधमय जते विज्ञ जे ।
आयल द्वार कुमार क, कहु कर्तव्य भव्य जे ॥
की अपमान क गरल मातृभूमि क पचाय ली ।
जतबा पूर्व क गर्व-पर्व तकरा अँचाय ली ॥१०

कहलन्हि सोचि कुमार स्वयं मन मे जे आहत ।
धैर्य राखु, निज राज्य क पुनि गौरव अव्याहत ॥
केवल अपन भावना अंचित कृतियहु व्यंजित ।
कय, देश क हित नित करबे बल-वैभव संचित ॥११
....
....

आयल प्रतिनिधि वर्ग निवेदन नृप कें करबे ।
अपन भावना सत्य रूप मे आगाँ धरबे ।।
किन्तु समुद्धत अधिकारी बिद्रोही नामें ।
नृप क बिस मे भरल गरल कटुता परिणामें ।।१२

भेल घोषणा, सन्धि योजना जन–हितकारी ।
जे विरोध करइछ से देश क ध्वंसक भारी ।।
खण्डनीय जे उक्ति सामरिक क्षोभ जगाबय ।
दण्डनीय से व्यक्ति शान्ति–पथ रोध कराबय ।।१३

सभ अवैध जन–सभा समिति वा युवा योजना ।
करओ न क्यौ चर्चा सीमा संक्रान्ति क घटना ।।
राजनीति थिक राजा सचिव नियत अधिकारि क ।
अनुशासन पालन टा जनता हित व्यवहारिक ।।१४

जत प्रबुद्ध अवरुद्ध; लोकमत दाबल चापल ।
घर बाहर छल गुप्तचर क दल सब तरि व्यापल ।।
जाल पसारि मीन बझबय जनु धीवर पीवर ।
आ–कुमार–पामर छूटल नहि संशय – सीकड़ ।।१५

राज–गुप्तचर करइत छल जे किछु उद्घाटन ।
सचिव विमति मन मे होइत छल सुख–उत्पाटन ।।
अमरदत्त नृप कें बढ़ि चढ़ि घटना क सूचना ।
पहुँचाबय करइत विपरीते समालोचना ।।१६

राज नाम पर सचिव–दल क उच्छृङ्खल शासन ।
डोलि उठल स्वयमपि भूपतिहु क संयत आसन ।।
राज प्रजा मृत्तिका, मंत्रि–मंडल कुलाल जनु ।
जन-गन मन तृन-तनु, अधिनायक अनल-अनिल मनु ।।१७

क्रमहि प्राप्तबल सचिव – मुख्य प्रतिशोध बुद्धिएँ ।
तरु-कुमार मूलोच्छेदन हित कपट युक्तिएँ ॥
नृप चित मे अनेक विधिएँ उपजौलन्हि शंका ।
छथि युवराज राजपद-लुब्धक पथ धय बंका ॥१८

ओम्हर कुमार क चित्त व्यथित छल अवध निरोधें ।
उचित प्रतीकार क उपायहु क पुनि अवरोधें ॥
ओम्हर मातृभूमि क अपमान क क्रिया सह्य नहि ।
एम्हर विवश शव-शान्ति क्लीव-प्रक्रिया ग्राह्य नहि ॥१९

करथु किन्तु की ? राज-सूत्र अछि जकर हाथ मे ।
से कयने अछि नरनाथहु कें विवश नाथ मे ॥
किन्तु बैसि रहने नहि होयत अवध क रक्षा ।
शक्ति भक्ति अनुसार देश हित बान्हब कक्षा ॥२०

अछि अवैध सामरिक संगठन, किन्तु साधना ।
व्यक्ति समाज क आत्मबल क जेहि सँ न बाधना ॥
भाव – बीज कें करब सुरक्षित नव नियोग सँ ।
शवर-नृपति उज्जयिनी-पतिहु क सन्धि योग सँ ॥२१

एतय उचित देश क प्रति बलिदानी क गठन हो ।
ओतय सुचित रूपें रिपु-देश क वृत्त कलन हो ॥
किछु युव-जन वन-देश जाय नव परिचय पाबथु ।
पुनि किछु उज्जयिनि क रहस्य उद्देश्य सुनाबथु । २२

गुनि धुनि दिन कत, लय विचार निपुण क पुनि अविरत ।
भय नवीन मति-गति प्रवीन तरुन क दल संहत ॥
किछु शबर क प्रदेश दिश, किछु पुनि चलल अवंती ।
किछु अवध क पुर ग्राम टोल वीथी पथवंती ॥२३
....

दिन-दिन घटना-चक्र क गति द्रुततर संचालित ।
पहुँचल दूरान्तर भेद क रथ भ्रम-पथ धावित ॥
तावत घुरि-फिरि दूत पूत-चित प्रत्यावर्तित ।
कहलक अरिपुर-समाचार जे बुझल अनावृत ॥२४

शबर-राज अछि सगर विन्ध्य पर्वत वन व्यापित ।
यदपि व्यवस्था-हीन साहसिक अति बल दापित ॥
केवल पशु शिकार वा फल-मूलहि क आश टा ।
तें समस्त वन-सीमा धरि चाहिय सुपास टा ॥२५

नहि खेती, परती पराँत, उपजा न अन्न कन ।
कठिन समस्या जीविका क बनचर बिच दिन-दिन ॥
यदपि पूर्व मे अवध-राजहि क आश्रित-रक्षित ।
किन्तु आइ उद्भट भट बल लय समरोत्साहित ॥२६

उज्जयिनि क आक्रमणहु नहि पुनि सैनिक रोधक ।
लखि सहजहिँ ओकरहु साहस अछि अवध-निरोधक ॥
पुनि उज्जयिनी-नियत गुप्तचर बचन उचारल ।
विदित वृत्त आदिहि सँ घटना-सूत्र पसारल ॥२७

भारत-भवन क कनक दीपिका शिखा ज्वलन्ती ।
जगमग जग मे जनपद सब तरि विदित अबन्ती ॥
कीर्ति विजयिनी रजधानी जानिय उज्जयिनी ।
कर्मसेन नृप कर्म मर्म सद्भाग्य उदयिनी ॥२८

जतय सुखेन समथ बितबथि नागर संयोगी ।
जतय सुषेण सेन सजबथि कुमार उद्योगी ॥
वणिक धनद इष्टापूर्ति क हित जन-उपयोगी ।
भोगी श्रमिक अरोगी जीवन्मुक्तहु योगी ॥२९

दुर्ग दुर्गमा या'वत् अरि क 'अयोध्या' सहजहिँ ।
मधुान 'मधुरा' मन-हर 'द्वारवती' शत अपनहिँ ॥
महाकाव्य शिव वास गुणेँ 'काशी' जे धन्या ।
एक 'पुरी' पुनि सप्त पुरी जे विदित अनन्या ॥३०

पुर परिखा शिप्रा कटि 'काञ्ची' जकर बनल अछि ।
रम्य क्षेत्र परिधान मालव क हरितांचल अछि ॥
अवध अवधि विस्तार शासन क जकर तनल अछि ।
धर्म मर्म थिक 'कर्म से न' कखनहु बिसरल अछि ॥३१

कर्मसेन – कन्या गुणधन्या जगत अनन्या ।
सरस वयस, रूप क प्रतिमा निरुपम-लावण्या ॥
नाम शशाङ्कवती युवती रसचन्द्र चकोरी ।
भुवन भवन बिच छथि रमणी मणि-शिखा किशोरी ॥३२

तनिक पाणि-पल्लव क ग्रहण के करत भूमितल ।
रुचिर चन्द्रिका बिनु न मृगांक क अंक संग भल ॥
नृप विचारि शुचि रुचि अवध क प्रति दूत पठाओल ।
किन्तु विमति मति-कुटिल कल्पनेँ तुरित फिराओल ॥३३

नहि पहुँचल संवाद अवधपति धरि, अभियोगेँ
मन्त्रि-मुख्य सम्बन्ध बाध कयलन्हि छल योगेँ ॥
अवध – अवन्ती दृत्त-वती संगति यदि संभव ।
सफल न होयत अवधाधिप पद, मन्त्रि क अनुभव ॥३४

छन्हि मन मे छल – छद्म राज-सत्ता हथियाबी ।
अपन पुत्र विधृतिहि केँ अधिकृत पद बैसाबी ॥
तखन अवन्ती – नृप कन्या केँ वधू बनायब ।
तनि बलेँ जग मे प्रभुसत्ता दृढ़ कय अपनायब ॥३५

अपमानित नृप कर्मसेन पुनि सेना सजि-धजि ।
कयलन्हि अवध निरोध मुख्य कारण एतबे बुझि ॥
आयल छी कुमार ! एहि मे नहि किंचित संशय ।
विमति मुख्यमंत्री सभ पातक जड़ि अछि निश्चय ॥३६

सुनितहिँ युवराज क हृदय,
क्रोध घृणा उद्वेग ।
व्यापल, पुनि छन मे बसल
अनुराग क आवेग ॥३७

अनुराग क संसार सार सुषमा क प्रमाने ।
क्लान्त कर्म जीवन मे सुख-विश्राम समाने ॥
सहसा घन निशीथ तम में जनु समुदित चाने ।
गेल जगमगा अन्तर्जीवन गगन विताने ॥

स्मृति क रश्मि कोमल विशद मुद कुमुद क दल स्फुटित कय ।
भरि पराग अनुराग नव सुरभित मानस देल कय ॥३८

मन पड़ले उज्जयिनि क कौतुक क्रीडा-परिसर ।
अवध-अवन्ती गुरुकुल अन्तेवासि क परिकर ॥
मचल द्वन्द्व निर्द्वन्द्व कुमार सुषेण क संगहि ।
उत्सुक दर्शक वृन्द क जय ध्वनि विजय प्रसंगहि ॥

अन्तःपुरिका दर्शिका – दल क कक्ष सँ मालिका ।
कोना हमर गर अरपले भावाकुल क्यौ बालिका ॥३९

कने अचोकहि छने अभोकहि चमकलि चपला ।
नागरिका घन बीच जगमगायलि क्यौ नवला ॥
रूप वयस रस लावनि जगती बीच अनन्या ।
विधि-रचना क नमूना रूपसि उर्वसि धन्या ॥

पुरुरवा क सौन्दर्य रस शौर्य क वश बिच-अप्सरहिं ।
प्रेम-हार उपहार लय ठाढ़ि भेलि क्यो घन-पथहि ।४०

बिनु कहनहुँ बुझलहुँ अपनहिँ, के छथि कुमारिका ।
की चकोर केँ चिन्हबै पड़इछ कतहु चन्द्रिका ॥
की वसंत सुषमा कोकिल केँ सुझय न अपनहि ।
सिङरहार सजइछ सहजहिँ ऋतु शरद क सपनहि ॥

सहजहिँ नव कादंबिनी, उमडलि दूरहु गगन मे ।
तरु कदंब पुलकित स्वयं, नर्तित कलापी विपिन मे ॥४१

देखल छनहिँ कनहिँ कंचन-बरनी मृगनयनी ।
सुनल मधुर धुनि मधु वसंत मातलि पिकनयनी ॥
गुनल अवंती रसवंती रति-रूप जयंती ।
मदन-वैजयंती वय-मलयज सुरभि स्रवंती ॥

बुझल कर्मसेन क मन क मर्म सुषेण क सुख खबरि ।
नव अनुराग क परस रस कोमल भाव क की असरि ॥४२

तहिए सँ सुख स्वप्न जकाँ धय रूप ध्यान धनि ।
तहिए सँ मुख हुनक हमर नभ उर क चान बनि ॥
अंकित नाम शशांकवती उर-पट तहिए पुनि ।
दत्त मृगांक क मन-वन राग-पराग भरल जनि ॥

अखन-तखन निश-दिवस बिच, उमड़ि पड़ै छ मधु स्मरण ।
मन उन्मन कय दैछ जनु, दूरागत गीत क श्रवण ॥४३

रातु क गति विधि सुनिय हमर, मन छल उचटायल ।
प्रिया स्मरण सँ विगलित मन निन छल बिलमायल ॥
स्वप्नहि घन वन बीच सिंह पर बैसलि कन्या ।
गजासीन हमरा दिस दृग फेरलि रस-धन्या ।

की तकरहि संकेत ई, ताकल विहँसि वयस्य दिस।
राजनीति गृहनीति दुहु संगति प्रकृति रहस्य मिष ॥४४

कहलन्हि सचिव सखा गन सपना सुख परिणाम क।
वन दर्शन, गज सिंह, कन्यका दृग संमधान क॥
वन प्रवास, पुनि द्वन्द्व, रंगमंच क छवि छाया।
वीरवधू क वरण, विजय-श्री कीर्ति – सहाया॥
अपन-अपन सपना क सभ कथलन्हि फल क विचार कत।
अचिरहिँ विरह प्रवास मे दुख, अन्तिम सुख सार सत ॥४५

●

अष्टम सर्ग

(पूर्वानुराग)

(१)

कमलिनी अरुणोदयहि सँ भेलि उन्मुख दिनपति क दिशि ।
शशि क उगितहिँ पहिल साँझहि मतलि उन्मद कुमुदिनी निशि ॥
प्रथम दिवस अषाढ़हि क घन गगन लखि नाचथि मयूरी ।
पुनिम चान क किरन पान क हित तृषित दिवसहि चकोरी ॥

(२)

मधुप मधुमुख कयल उन्मद कतहु कल - गुंजन निकुंजहि ।
सरसि मानस कनक-कमल-कली क पुलकन सुरभि–पुंजहि ॥
मलय पवन क परस वश फुलवन वसंत क हास जखनहि ।
कलित - कंठ पिकी क रस - संगीत धुनि उल्लास तखनहि ॥

(३)

उज्जयिनि पुर - परिसर क के बिसरि सकते रंग - शाला ।
जतय स्नातक-शिविर सज्जित ललित कलित उमंग–वाला ॥
अवध - मालव नृप - कुमार युयुत्सु उत्सुक खेल · कौतुक ।
जय · पराजय जत अनिश्चित ततहु जयमाला क यौतुक ॥

(४)

क्षितिज रंजित उदित नवल मृगांक सहसा कतहु दूरे ।
तिथि चतुर्दशि कला ज्योत्स्ना संचरित अंबर अदूरे ॥
छनहि नयनहि मे लिखित संकेत किछु तँ भेल पढ़लो ।
लक्षणहु लक्षित कतो, रूढ़ो कतो पुनि गेल गढ़लो ॥

(५)

प्रयोजन विनु योजनहु लक्षण उपादानहु प्रसंगो ।
असंलक्ष्यहु लक्ष्य ककरो क्रमहि पुनि अक्रमहिं व्यंगो ॥
रस क अभिनव सृष्टि, अनुराग क पराग क वृष्टि कम नहि ।
अंतरित उर - भूमि मे नव भाव - बीजहु दृष्टि प्रथमहि ॥

(६)

अंकुरित नव प्रेम तहिए, स्फुरित पुलक कदंब जहिए ।
नव - नवा अनुराग - वल्लि क मंजरित नव वृन्त तहिए ॥
अवंती क चतुर्दशी जे कांतिवंति शशांक बाला ।
आब पुनिम क पर्व चान क भरल पान - मखान डाला ॥

....

(७)

राजभवन क गगन, सखि-गन नखत बिच बस चान ई की ?
उपवन क जाही–जुही बिच विकच चंपक - दाम की ई ?
घन - घटा मे विद्युत क द्रुत छवि - छटा द्युतिमान ई की ?
छंद–कवित क पद - वितान क बीच गीत क गान की ई ?

(८)

सप्ततार सितार वीणा वेणु वाद्य वितान पूरे ।
ताल संगि मृदंग मंजिर स्वरहु भरइत तानपूरे ॥
सुनि पड़य केदार - वागीश्वरी रागिनि ध्वनि धुरीना ।
तदनु सहचरि - अनुचरि क बिच कुमरि कोमल वय-नवीना ॥

(९)

आइ पल्लविनी लता स्मृति–सिंचने जीवन जोगायल ।
पूर्व अनुराग क प्रवाल क लालिमा लहु लुहलुहायल ॥
बुझि पड़ैछ सखी सुमुखि बिच श्याम मे मग्ना किशोरी ।
मालती मुकुलित झुकलि जनु रसाल क सौरभ विभोरी ॥

(वयःसन्धि : नख-शिख)

(१०)

सरल शैशव सरस यौवन दुहु क मिलन क बिंदु-सीमा।
दिवस-निशि केर सन्धिवेला धवल-अरुणिम समय-सीमा॥
वयस संगम तीर्थ शिशुता-जाह्नवी केर धार उज्ज्वल।
संग रंजित यौवन क यमुना क उच्छल सलिल कज्जल॥

(११)

रंग धुपछाँही छनहि धूपित तरुन शिशु धूसरित अङ्ग।
चंचला चपला यदि च पुनि कला चन्दिर चंद्रिका सङ्ग॥
यदि लता मे नवल पल्लव फूल अभिनव रंग संगत।
विशद शरद क संग संभव यदि कदा च वसंत रंगत॥

(१२)

द्रुत-विलंबित छंद, अतल प्रशांत सिंधु कुमारिका हो।
कहब तखनहि उचित विधि चित्रित कुमारि अवंतिका हो॥
वयःस्नाता छोड़ि शिशुता यौवन क परिधान पहिरलि।
अलकनन्दा उथर पथ चलि उत्तरोत्तर गहिरि उतरलि॥

(१३)

बढ़ल वाद-विवाद शैशव वय किशोर क बीच जखनहि।
सन्धि हेतु क गेल सोंपल सुतनु-तनु, छल पंच मदनहि॥
कयल नापी कच-कलाप क गुल्फ धरि जे जुल्फ बढ़ले।
स्वयं वरवर्णिनि सुवर्णें तुलित आभूषणहुँ गढ़ले॥

(१४)

नापि-जोखि घटा-बढ़ा, किछु काटि-छाँटि करैत विनिमय।
अदल-बदलहुँ अंग-अंग क रूप-गुण केर उचय-अपचय॥

चरण चंचलता नयन मे, पद क गति मे मंदता पुनि ।
कुटिलता श्यामल भृकुटि केर बढ़ल रंजकता वचन धुनि ।।

(१५)

काटि कटि कें उर - नितम्ब क भरल परिसर संतुलित रुचि ।
नाभि - कूप उराहि लावण्य क सलिल नित संकलित शुचि ।।
त्रिवलि बंधित कृशोदरि केर उदर अंबर अंतरित भय ।
रोम - राजि बिराज काम क पाश श्यामल रश्मि रसमय ।।

(१६)

बिनु ओगारलि गोरि बाला, वचन - रचनहु मधु क बोरल ।
बिनहु गहनहु गात भूषित, नयन वङ्किम बिनु सङोरल ।।
मदिर यौवन मत्त करइछ चित्त बिनु मद-रस क पानें ।
निकष विनु कसनहुँ, अयतनहुँ, वरन कञ्चन रुचिर वानें ।।

(१७)

हास लहु-लहु, सखि क सङ परिहास बहु सञ्चलित कत खन ।
ललित कोमल कला सिखइत निपुणता सङ्कलित तन-मन ।।
बुझि पड़य नवकल्प रूप क, अभिनवा नव–यौवना ई ।
शशिकला दुतिया क की परिणत स्वयं अछि पूर्णिमा ई ।।

(१८)

चमरि पशु चमरी क, शिखि - पिच्छहु बिहंग क पुच्छ तुच्छे ।
भमर पुनि कटु–दंश वंश क, श्याम कज्जल कलुष रुच्छे ।।
जल क मल सेमार, उमड़ल घन सघन पुनि शून्य गगने ।
तखन कथि लय युवति केश क पाश उपमित कवि क वचनें ।।

(१९)

भौंह खिचल कमान काम क, कान धरि दृग बान तानल ।
नासिका शुक–चंचु जानल, अधर बिम्ब समान मानल ।।

दन्त दाड़िम बीज साजल, कम्बु कण्ठ प्रमान राजल।
भुज - लता जनु हो मृणाल क रूप - सरसी मे विराजल॥

(२०)

चक्र चारु नितम्ब, कदली थम्भ जघन क रुचि अधूरे।
जंगमा कञ्चन - लता तनु धनि क हित उपमा अपूरे॥
लकुच कुच उपमा न रोचित, नाभि कूप प्रमा न समुचित।
शून्यता कटिहु क सटीक न; रोम - राजि न भुजग उपमित॥

(२१)

मन्द - मन्द हँसी क रेखा अधर - पत्र क उपर अंकित।
धनिक मदन क आय - लेखा रूप खाता - बही संचित॥
वंक लोचन कोटि लक्षहु अर्थ भाव समर्थना हो।
जानिक हित से धन्य, धनि मनि प्रेम मूल्य प्रवर्तना हो॥

(प्रेम - अभिलाष)

(२२)

प्रथम दर्शन दिन हृदय बिच बीज प्रेम क अंकुरित।
स्मृति - सलिल सँ नित्य सिंचित भेल सहजहिँ पल्लवित॥
किन्तु कुसुमित करथि जे से दूर कतहु वसन्त छथि।
प्रेम - घन जीवन - लता केर कंत दूर - दुरंत छथि॥

(२३)

लक्ष्य कय प्रतिमा अलक्षित पूजि चरण क धूलि नित।
सुतनु जीवन - यौवन क फल–फूल अर्पल प्रीत - चित॥
यदपि नभ गत नखत कत, नहि यामिनी श्यामा रुचिर।
कतहु क्षितिज इरोत एखनहु उदित नहि शशि कर सुचिर॥

(२४)

ब्रज सरोवर मलिनि कुमुदिनि, मधुपुरहि ब्रजचन्द कहुँ ।
मैथिली गिरिजा पुजथि फुलहर, अवध रघुनन्दनहुँ ॥
शिव समाधि निमग्न, भग्न-मनोरथा गिरिजा कुमरि ।
पुजथि अन्हरोषहि तुषारी, शिव द्रवित नहि एखन धरि ॥

(२५)

तदपि चलइछ प्रणय - पथ पथिका क अविरत साधना ।
हृदय - मन्दिर विराजित प्रतिमा क प्रेमाराधना ॥
जे कला नवला पुरातन कलामयि तनि माध्यमें ।
करथि आत्म - समर्पण नित जे धनि क अछि साध्य मे ॥

(२६)

पशुपति क पति लाभ हित हठि कयल तप जे पार्वती ।
तकर महिमा गीत गाबथि प्रथित जन्मान्तर सती ॥
रचथि अभिनव गान विरह क श्याम-सुन्दर नाम दय ।
राधिका केर अमर प्रेम क रस परस परिणाममय ॥

(२७)

लिखथि नल - दमयन्तिका क पुरातनी प्रेम क कथा ।
वन्य - कन्या संग दुष्यन्त क प्रणय - वरण क प्रथा ॥
उषा - अनिरुद्ध क मिलन हित चित्ररेखा तूलिका ।
करथि छवि अङ्कित हृदय - गत नव मृगांक क अङ्किका ॥

(२८)

तरु - लता सङ्गति करथि रचि वन - महोत्सव रङ्गिनी ।
करथि सहस विनोद - व्यंग्यहु सङ्ग लय निज सङ्गिनी ॥
जखन कुसुमित लता, पादप पल्लवित कोनहु निकट ।
घेरि - वेदि रचाय रंग - निकुंज मिलबथि संग झट ॥

(२९)

जते जे किछु कला-कौतुक काव्य-कौशल हुनि ललित।
सभक एके लक्ष्य छल प्रत्यक्ष कुमरक स्मृति कलित॥
नाम मृग क्यौ लैछ अखनहि चौंकि उठथि कुरंगि जनु।
अंकहुक वा दत्तहुक पद उच्चरित रोमांच तनु॥

(३०)

स्वप्न मे कखनहु उठथि कहि नाथ देखु अनाथिनी।
कंठ दय भुजबन्ध करिअ उपासिनीहु सनाथिनी॥
जागि सहसा पुछथि सखि जनि सँ, कथी केर थिक हँसी।
सलजि सपनयबाक घटना गढ़थि कहि किछु अतिरसी॥

(३१)

यदि कतहु क्यौ तीर्थ-यात्रिणि महाकालक दर्शिनी।
नगरि पहुँचथि, करथि हुनि अभ्यर्थना प्रिय-दर्शिनी॥
बुझथि की साकेत-धामहु जाय सरयु नहाय नदि।
कयल सीता-राम दर्शन, अवध बसलहुँ कत अवधि॥

(३२)

यदि भ्रमण-निपुणा श्रमणि, दैवज्ञ जनि, विदुषी प्रवणि।
राज-अन्तःपुरी प्रविशथि, पुछथि कत विधि प्रश्न धनि॥
अछि मृगांक-शशांक पद-पर्याय एकहि अर्थ-गति।
लग्न राशिक दत्त नाम उपाधि युक्तिवती स्वमति॥

(३३)

हरहु-हरिहुक प्रकृति एक विभेद प्रत्यय नाम पुनि।
पुरी उज्जयिनी अयोध्या शक्ति-मुक्तिक धाम गुनि॥
महाकालक दर्शनक उत्सुक कते अवधक प्रजा।
सरयु जल चढ़बैछ कामरु कान्ह लय पथ श्रम रुजा॥

(३४)

महाकाल क पूजकहु पुनि कते अवध क यात्रिकहु ।
राम दर्शन हित गतागत पथ भेटथि कत लोक, कहु ॥
सरयु सँ शिप्रा क तुलना, अवंति क साकेत सँ ।
अवध - मालय जन - जन क रुचि भेद कत संकेत सँ ॥

(३५)

बुझथि पुनि कत माटि - पानि क उभय बिच अछि अंतरे ।
मालवी मैथिली ललना तुलित की दृग - अंचले ॥
अवध मे मिथिला क ललना भाव - भाषा भिन्नतहु ।
यदि प्रथित, तँ की न उज्जयिनी जनी क प्रसन्नतहु ॥

× × × ×

(३६)

उचटि चित खन मौन बैसलि लेथि दीर्घ निसास उन्मनि ।
ऊठि सहसा बुलय लागथि प्रमद - वन वीथी उछटि पुनि ॥
नोर बहबथि बोल गद्गद कहथि नहि किछु व्यक्त वानी ।
पुलक कंपन तन मनहु किछु स्मृति सचित कपोल पानी ॥

(३७)

पूर्व राग प्रगाढ रंजित देखि नृप - बाला क गति - विधि ।
बुझि असह विरह क दशा विवशा प्रणय-परिणय विहित विधि
जाय रानी कें देखाओल चित्रपट पुनि कवित - गीतो ।
जतय चित्रित चित्तवृत्ति क चरम - केन्द्रित मन क मीतो ॥

(३८)

छने सहमलि चकित विलमलि जननि तनुजा मनक थिति बुझि ।
देखि रूप अनूप अवधकुमार नाम मृगांक बुझि - सुझि ॥
मनहि सोचल रूप रोचित उचित भाजन प्रणय-अमृत क ।
कमलिनी दिनपतिक उन्मुख, सुमुखि कुमुदिनि शिशिर किरणक

(३९)

माधवी क लता ओलड़ि गहलन्हि रसाल क सुरभि शाखा ।
कंचन क आभरन मे अछि खचित समुचित रत्न पाखा ॥
जननि मन-मन गुनि सगुनि कुलदेवता पद ध्यान धयलन्हि ।
कते कबुला पाति पातरि गोसाउँनि सिर मन अरपलन्हि ॥

(प्रणय-अर्चा : परिणय-चर्चा)

(४०)

देखि हुनक बपु - रूप रम्य वय सखी - सहचरी धन्य ।
किन्तु जनक - जननी क हृदय मे चिन्तन परिणय जन्य ॥
देखि गगन कादम्बिनी क रुचि रम्य कलाविद धन्य ।
किन्तु किसान धान रोप क हित बनइछ श्रमिक अनन्य ॥

(४१)

चिन्तन करइत वर वरण क हित कुल अभिमत संपन्न ।
शील - स्वभाव प्रभाव रूप - गुण वय - बपु चरित प्रपन्न ॥
विभव अचिन्त्यहु चिन्तित कन्यादानी पिता अशेष ।
पुछल गृहिणि कें, जें माय क कन्या हित बुद्धि विशेष ॥

(४२)

कहलन्हि रानि, वानि सुनु, अयलहुँ सखि-मुख सँ जे जानि ।
सुता अहँक चित्रित करइत छलि जे छवि, देखलहुँ आनि ॥
देखिअ के छथि युवा अजूबा, आँकलन्हि राजकुमारि ।
नोर बिन्दु सँ पद धोयबा हित जनि दृग बहइछ वारि ॥

(४३)

मन मे खचित चित्र किछु पूर्व क स्नातक अवध-कुमार ।
आयल छला सुषेण क संगी अंगी सबहि प्रकार ॥

किन्तु तत्क्षणहि मन मे आयल अवध · मालव क द्वन्द्व ।
तखन कोना पुनि योजित होयत मधुर मालिनी छन्द ॥

(४४)

मरु ज्वलन्त जत कलह क सैकत व्यापित कन-कन हाय !
सतय कोना वन सघन उमड़ि रस बरिसय भूमि जुड़ाय ॥
की सम्भव थिक द्रोह क दावानल दगधल वन देश ।
प्रणय - कुसुम सौरभ सँ पुनि की सुरभित करत प्रदेश ॥

(४५)

चिन्तित दम्पति सुता - प्रणय प्रति नहिं मन रति - विश्राम ।
कयल यतन कत सखिमुख दुख-सुख कहि, हो प्रीति विराम ॥
कत अछि जगत रतन मनि भूषन रुचि मत वर वरणीय ।
उचित न हठ कय सहिअ पराभव जे नहि सम्भवनीय ॥

(४६)

किन्तु जखन गिरि-शिखर उपर सँ सरिता जल परिवाह ।
चलय सिन्धु दिस, तखन कोना रुकि सकइछ उमत प्रवाह ॥
यौबन - ज्वालामुखी जखन हो स्फुटित अन्तर क ताप ।
तखन झाँपि सकइछ के ज्वलित मुख क लावा उद्गार ॥

....

(४७)

राजनीति गृहनीति क आगाँ झुकल प्रेम लग क्रोध ।
सम्बन्ध क अनुबन्ध यदि च तँ कतय विरोध क बोध ॥
प्रेम - रवि क किरणेँ गलइछ द्रोह क हिम जमल तुरन्त ।
स्नेहिल दीप - शिखा सँ छँटइछ कलुषित तिमिर दुरन्त ॥

(४८)

जे सभ वर मे वांछित रहइछ से सभ सहजहिँ उक्त ।
केवल स्वीकारथि अवधेश्वर ततबे संशय - युक्त ॥

किन्तु युद्ध वा युद्ध क।। हित समगम बल कुल वित्त।
देखि - लेखि होइछ प्रवृत्त क्यौ, तखनहि यश रस चित्त ।।

× × × ×

(४९)

पुरहित - नापित - दूत संग भय प्रस्थित समय विचारि।
जाय अवधपति कें सन्देश कहल प्रेम क संचारि।।
किछु त्तण छला चकित नृप पुनि वैरि क ई सुनि अनुरोध।
बुझल उचित गृहनीति विषयहु क राजनीति सँ शोध।।

(५०)

विमतिदत्त कें कहल बजाय बेजाय - नीक सब सोचि।
कहिअ, करिअ की रिपुसुता क सङ सुत क विवाह अरोचि।।
कहल कुटिल-उर, प्रभु! जे हरलन्हि अहँ क भूमि अन्याय।
से सम्बन्ध क योग्य कोना छथि ? आगि न पानि समाय।।

(५१)

पहिने बल देखाय ओ लेलन्हि सीमा दखल जमाय।
तखन विवश कय झुका कुमारहु बनबय चाह जमाय।।
अपमान क ई विषय असह विष सक के आन पचाय।
पशु वा पशुपति, नर - वानर वा नारायणहु बराय।।

(५२)

सुनि गुनि वचन रचन विमति क मतिगति विचलित नृपती क।
कय न सकल स्वीकार कथा प्रस्तावित प्रेम - प्रतीक।।
कहबाओल सचिवहि सँ उज्जयिनि क सम्बन्ध - निबन्ध।
होयत तखनहि जखन राज्य - सीमा क हटत प्रतिबन्ध।।

(५३)

अथवा अवध - निरोध विरोध क स्मृति हो विस्मृति गर्भ।
तखनहिं अवध - अवंति क सम्बन्ध क सम्भावित पर्व।।

क्षत्रिय जाति विवाह खड्ग-बल, जखन तकर संयोग ।
बुझिअ न आयल अछि मुहूर्त परिणय-विधि केर विधि योग ।।

(५४)

सुनि उत्तर असमंजस, जत सामंजस्य क नहि लेश ।
उज्जयिनि क संदेश क वाहक कें मन बढ़ल कलेश ।।
तत् क्षण घुरल सबहु घुरियैले पैरे अपन स्वदेश ।
सद्यः अपमान क ज्वाला सँ ज्वलित जनिक उर देश ।।

× × × ×

(५५)

जखनहि सुनल, अवधपति फेरल उज्जयिनि क अवदान ।
रत्न स्वयं अन्वेषणीय जे तकरहु ई अपमान !!
कर्मसेन मन मे अभिरोष, सुषेण क चित्त भमान ।
रानि क मन क मनोरथ पथ गति रोकल नियति पखान ।।

(५६)

प्रजा-जन क बिच क्रोध बोध छल राजपुरुष बिच रोष ।
सब तरि व्यापल क्षोभ, अवध प्रति असंतोष संतो क ।।
सखी-सहचरी केर अभिलाष क उपवन उजड़ल हंत !
स्वयं कुमारि क प्रेम-वसंत क अंत निदाघ दुरंत ।।

(५७)

कमल वन मे पड़ल पाला गलित-दल, नहि सुरभि-रस ।
शेष नाल मृणाल, नहि दिनपति क दर्शन नियति वश ।।
प्रेम-हेम क जाँच हित जनि विरह-हुतवह आँच पड़ि ।
तपि रहल, पुनि गलि रहल हिम, मधु मिलन हित काँच कलि ।।

●

नवम सर्ग

(निर्वासन)

झुकि गेल तपी दिनकर, नहि किरण प्रखरता ।
भय गेल सुगम नयन क, लहि क्रमहि मृदुलता ॥
जनु ओजस्वी रचना सँ उर उद्दीपित ।
पुनि अनुराग क प्रसंग वश द्रुत रस मज्जित ॥ १

पल - पल उद्गत उद्धत जनि उन्मद सिन्धुर ।
झुकि गेल नम्रमुख कमल - बन्धु रतिबन्धुर ॥
ढरि गेल प्रभाकर मृदु - कर द्रुतपद धावित ।
सुनि प्रतीची क रुचि राशि दिगंत प्रसारित ॥ २

किछु संग किरण दल जे दश दिश उद्भासित ।
दूरहु सँ तिमिर निकर कें करइत शासित ॥
नभ गिरि दिस सघन गहन दिस व्यापित रहितहुँ ।
पुनि समटल-सहटल अंग संग नहि छुटितहुँ ॥ ३

अंगना पश्चिमा लाज लाल मुख रोचित ।
अंचल पसारि आरक्त ठाढ़ि स्वागत हित ॥
अनुरक्त भानु, प्रियतमा प्रतीची रक्ता ।
क्षितिज क कौतुक-गृह बिदा भेलि संसक्ता ॥ ४

सन्ध्या सुमुखी सहचरी संग अगुआबय ।
विहग क कल कूजन बटगबनी धुनि गाबय ॥
सजनि क सौन्दर्य, बयस - सन्धि क मादकता ।
प्रणय क माधुर्य, मान - मिलन क रंजकता ॥ ५

पुनि छनहिं साँझ बीतल, नभतल तम व्यापल ।
निशि अंधकार जगत क दृग-दीपक झाँपल ॥
काँपल समीर, चुप कीर नीड़ बिच निद्रित ।
संचर द्विजिह्व, रव घूक, चेतना मुद्रित ॥ ६

अधिकार अंधकार क बिच सब तरि व्यापल ।
दृग अंध, बंद गति जोति, तत्त्व सत चाँपल ॥
झाँपल पुनि मंत्री नृपति-नेत्र भ्रम जालहिँ ।
एखनहु अछि किछु मंत्रणा दैत भूपालहिँ ॥ ७

श्रीमन्‌! बाजब अनुचित, न सुचित बिनु बजने ।
तेँ करब निवेदन; निर्णयकारी अपने ॥
सम्पूर्ण राज्य मे प्रजा-द्रोह दावानल ।
अछि पसरि रहल जे भस्म करत शासन-बल ॥ ८

हम मिझा दितहुँ दमन क जल सँ सभ ज्वाला ।
पनपैत अशान्ति-लता पर दंड क पाला ॥
छथि किन्तु मूल मे स्वयं कुमारे द्रोह क ।
तेँ किछु कहइत बनइछ नहि, महिमा मोह क ॥ ९

चरहु क विवरण अछि प्राप्त कते विपरीते ।
अवध क आन्तरिक दशा अछि द्रोह-परीते ॥
पुनि दूत कुमार क रिपु-पुर अबइछ-जाइछ ।
की हेतु एते छल! किछु न रहस्य बुझाइछ ॥ १०

बजला राजा, हम सोचि स्वयं छी चिन्तित ।
गति-विधि सन्दिग्ध कुमार क नीति अनन्वित ॥
आश्चर्य! अमृत-तरु मे विष-फल उपजल की?
दुग्ध क कलशी मे दुर्जर गरल भरल की? ११

अवध क नृपकुल-चन्दन तरु मे जनु विषधर !
अछि उचित दूर करबे विष दूषण सत्वर ॥
यद्यपि एके सुत कत वांछा सँ पालित ।
जनिका मे जीवन रस सर्वस्व निगालित ॥१२

दुर्भाग्य विवश हा हन्त! मनोरथ भाङल ।
छी पड़ल प्रेम-कर्तव्य द्वन्द्व बिच टाङल ॥
अछि एम्हर पिता केर पुत्र क प्रति अति ममता ।
पुनि प्रजापाल राजा क निठुर कर्मठता ॥१३
× × × ×

बजबाओल गेला कुमार द्वार अविलम्बे ।
पुनि पूछल गेला, विरोध क की अवलम्बे ॥
की सन्धि-विरोध कयल रचि समरोत्साह न ?
राजाज्ञा केर विपरीत लोक-मत साधन ॥१४

नत-शिर पद परसि विनत स्वर, उर पुनि निर्भय ।
कयलन्हि स्वीकार, बुझी अनुचित नय निर्णय ॥
देश क सीमा टुटइछ विनु सैनिक खीमा ।
व्रत मुनि क अहिंसा, राजनीति बल भीमा ॥१५

रिपु भक्ष्य भूमि नहि बनय दिअय, से शासन ।
देश क अखण्डता जहि सँ से अनुशासन ॥
पौरुष संचार प्रजा मे करब उचित थिक ।
एहि हेतु बनब अपराधी धरि समुचित थिक ॥१६

पहिनहि सँ भूपति चित्त सचिव मति बेढ़ल ।
सुत अपन समतहि बाजि रहल; नहि टेरल ॥
तेँ धधकि उठल क्रोधाग्नि पड़ल जनु घृत हो ।
जनु तप्त तेल मे शीतल जल उद्धृत हो ॥१७

कहलन्हि—सुत बुझि नहि दण्डनीय थिक त्याग क ।
हम एखन पिता नहि, राज-धर्म प्रतिपालक ॥
यदि हो विषाक्त निज अंग तकर पुनि भंगे ।
थिक चिकित्सा क विधि, नीति क रीति प्रसंगे ॥१८

यदि अंगज धरि हो राजतन्त्र अपराधी ।
थिक दण्डनीय अविलम्ब नीतिपथ – बाधी ॥
तेँ उर पर पाथर राखि करब विज्ञापित ।
अवध क सीमा सँ हो कुमार निर्वासित ॥१९

....

एतबा कहितहिँ राजा मूर्च्छित शय्याश्रय ।
आज्ञा-पालक सुत नतशिर चलल बिदा लय ॥
सचिव क चिर प्यासल चित्त जुड़ायल जहिना ।
पल भरि मे अवध क प्रजा मुड़ातल तहिना ॥२०

घेरल कुमार केँ दसो सखा चिर – संगी ।
जे चलइत छाया जकाँ पाछु धय अंगी ॥
मुख छवि मलान जनु दिवा चान सहचर-गन ।
छल सहज तेज पुनि दिन समान नृपसुत मन ॥२१

पुर-नगर ग्राम-जनपद वन – पल्ली सभ तरि ।
बिजुरी बजरल जनु खबरि पलहि मे दुख भरि ॥
छल बहइत सबहि क नयन-नयन जल धारा ।
अन्तर मे पजरल क्षोभ क आगि क ज्वाला ॥२२

जनु छन मे भूमि क कम्प करय विध्वंसन ।
जनु कन मे आगि जराबय सूखल तृन वन ॥
जनु पल मे पाला कमलालय उपटाबय ।
जनु सेतु भंग सँ बाढ़ि खेत भसिआबय ॥२३

मचि गेल लोक मे हलचल, क्षोभ क कारण ।
जंचि गेल लोक कें अवध क मंगल आब न ॥
जे छथि भविष्य राज्य क नव मंगल दाता ।
तनिकहि पर तानल विपति-जाल हत धाता ।।२४

किछु लागल कौसेय केहन कठिन-उर भूपति ।
थकुचल जे कमल-कली कें लोढ़ि क संहति ॥
क्यौ कहइछ यदि निर्दोष राम सन पुत्र क ।
दशरथ हाथें निर्वासिन, हत विधि सूत्र क ॥२५

सुनि भाग्यवाद केर उक्ति कुपित क्यौ बाजय ।
ई थिक सभ सचिव क युक्ति कुटिल छलबा लय ॥
तनिका किछुओ पौरुष विचार शुचि बाँचल ।
से चलिअ, कुमार क पक्ष करिअ, कटि बान्हल ॥२६

कपटी मन्त्री मण्डल क मुण्ड केर माला ।
गाँथिअ अपनहि हाथें गुहि लौह क भाला ॥
बन्दी-मन्दिर मे थापित कय अविचारी—
राजा क गराँ पहिराबिअ उतरी कारी ॥२७

छल क्षुब्ध क्रुद्ध जत लोक, रोक नहि मन मे ।
बुझि पड़य मचत विद्रोह कोनहु पल छन मे ॥
तावत अनर्थ वारण करबा क विचारें ।
घोषित शान्ति क सन्देश उदार कुमारें ॥२८

अछि देश अपन अन्तर-बाहर उद्वेजित ।
घटना क चक्र वात्या गति सँ उत्तेजित ॥
कन भरि यदि क्षोभ कहुँ अनल कतहु मन तृन मे ।
अवध क भविष्य कें करत भस्म पुनि छन मे ॥२९

उचित न थिक छोभें करिअ काज किछु अविहित ।
स्थिति पर विचार करइत पद बढ़बिअ समुचित ॥
दूरहुँ बसि अवध क रक्षा चित नित धरबे ।
जे जखन विहित हम सुविदित सभ कें करबे ॥३०

अछि विदित पिता-अनुशासन सँ बसि जंगल ।
अवध क कुमार कयने छथि पहिनहु मंगल ॥
इतिहास आइ दोहराय रहल अछि ओहिना ।
भरत क पद-पद्धति सबहुँ निबाहब तहिना ॥३१

दूध क उफान कें जनु शीतल जल-धारा ।
तपन क तपान कें जनु पावस घन-माला ॥
जनु उन्मद गजवर कें अंकुश अनुशासित ।
तहिना विक्षुब्ध लोक कें कयलन्हि प्रशमित ॥३२

मानि पिता राजा क वचन
अवध क त्याग क हित प्रस्तुत ।
मन मे नहि विषाद कन किंचित
संचित – साहस नृप - सुत ॥
संग दसो निज सचिव सखा जे
छाया सन नित अनुगत ।
निर्वासित वन हेतु चलल जनु
मुक्त विहग नभ अभिमत ॥३३

जत जनि रनिवासे, पाबि वार्ता हताशे ।
गप करय उदासे, दैव ! की कैल नाशे ॥
पुनि जननि अचोकें, स्नेहिनी सूनि लोकें ।
वन गमन सुतो कें, मूर्छिता भेलि शोकें ॥३४

जनु जल विनु दीना, मीन हो जीव हीना ।
फल कुसुम विहीना, हो वनी कांति खीना ॥
अमृत किरण छीना, यामिनी ज्योति दीना ।
पति रति परिहीना, कामिनी प्रान हीना ॥३५

तरु रहित वनानी, भानु तप्ता हिमानी ।
विनु नृप रजधानी, रुग्न नीरक्त प्रानी ॥
विनु रस कवि-वानी, रत्न निःशेष खानी ।
विनु सुत महरानी, हन्त हा ! अंत जानी ॥३६

छल कत छन मूर्छा, सुप्त संलुप्त · भावा ।
हत विधि अनुयोगें, चेतना पौल भोगें ॥
दृग बहल पनारा, शोक शैलोच्च धारा ।
कुहरि उठलि रानी, कंठ कुरी क बानी ॥३७

मधु ऋतु बिति गेले, ग्रीष्म दुर्भाग्य भेले ।
सुख · तरु मुरुझैले, सोखि कासार गेले ॥
दव दहन क ज्वाला, दग्ध कैले रसाला ।
प्रिय सुत क प्रवासें, हा ! मसानो निवासे ॥३८

छल कत शुभ कांछा, पूरते लोक वांछा ।
वर गुन युवराजा, राजते वाजि - राजा ॥
गुनवति परिनीता, सद् वधू गेह नीता ।
जन – जन सुखदाता, पोसले पुत्र माता ॥३९

सखि कहु पति कें जा' ने पिता मात्र राजो ।
अजहुँ बुझि बचाबी, माय–बेटा क लाजो ॥
फनि मनि छिनि गेने, मीन कें छानि लेने ।
प्रवसित सुत कैने, माय निष्प्रान भेने ॥४०

सखि कहिअ कतै ओ चन्द्र पीयूष पानी।
गहन क तम तोमें तामसी राजधानी॥
मुद कुमुद मुनैले अन्ध साकेत भेले।
अवध क राका मैं अन्धकारे समैले॥४१

अपन नयन - तारा, जीवनानन्द धारा।
तन क मरुधरा मे, प्राण-धारा अधारा॥
सकल रतन पारा - वार संसार सारा।
युग - युग उर हारा, स्नेह धारा कहाँ ओ।४२

सुत यदि वनवासी, माँ मसाने निवासी।
मरु अवनि प्रवासी, तों मरी जाय काशी॥
सुरसरि क सुपासी, तों धसी कर्मनासी।
सुत बनल उदासी, माय नाशे क राशी॥४३

धानी रानी क जे क्यौ सुनलक
तकरो धैर्य गाम्भीर्य भग्ने।
हाहाकारौ क नादें, विष विषम-
विषादें दिशान्तो निमग्ने॥
दासी सेवा प्रयासी सुत विरह
शिखा दग्ध संज्ञा विहीना।
दीना रानी क हीना स्थिति बुझि
सहसा कैल शय्या अधीना॥४४

●

दशम सर्ग

(वन-प्रवास)

गगन नगन, न कन जलदहु क, किरन निकर अखंड छल ।
उषम ग्रिषम क विषम दुपहर तपन ताप प्रचंड छल ।।
पथिक पथ के चलत ? दृग-रथहु क न गति रति रंच छल ।
जीव छल निर्जीव; जीवन कन न सर-सरि संच छल ।। १

बालु-कन जनु तपत ताम क शलाका क प्रखंड हो ।
दूभि दल जरि डाँट काँटे तपत आयस खंड हो ।।
ढेर माटि क कतहु यदि परसथि कने जन साहसी ।
बुझा पड़ते धूर पजड़ल वा धुआँयल बोरसी ।। २

कतहु किंचित जल-कनहु यदि कूप मे हो संचिते ।
जनु निरंतर चूल्हि चढ़ल इन्होर तपते – तपबिते ।।
पाँक पघिलल लोह-द्रव सन नहि परसि सकबे कने ।
बनल जगत प्रयोगशाला जरय अणु-भट्ठी मने ।। ३

जीव - जन्तु हँफैत छाँह तकैत सघन निकुंज मे ।
वैर भाव क त्याग कय शरणार्थ वृक्ष क पुंज मे ।।
सिंह लग सँ नहि पड़ाइछ गज निमीलित-लोचने ।
साप पुच्छ मयूरहि क छाहरि जुड़ाइछ सोच ने ।। ४

कतहु मंडुक फुदुकि फन तर फनि क पहुँचल किछु न भय ।
कीट कतहु चढ़ै छ बेङ क पीठ ढीठ फुदुकि अभय ।।

हरिण बाघ क आगु आयल आतपें तापित तृषित ।
नकुल व्याकुल अहिकुल क लग अचल बैसल तप लुलित ॥ ५

दूर वन कें दवानल - ज्वालावली लपटय भने ।
तरु हरित रहितहुँ जरय जनु काठ हरनाठल मने ॥
विनु गिरि क ज्वालामुखी उत्ताप पसरल चहुँ दिशा ।
दग्ध होइछ चर - अचर जड़-जन्तु ज्वाला-परवशा ॥ ६

× × × ×

दूर पाँतर बीच प्रश्न क चिह्न सन तरु एक टा ।
ठाढ़ पुछइछ ग्रीष्म सँ उत्तर, अनुत्तर शेष टा ॥
नहिं जतय लुह-लपट, तपन क ताप कें न प्रवेश अछि ।
लगहि पर्ण-कुटीर निर्मित जतय लोक-निवेश अछि ॥ ७

कदलि दल चंचल, सघन कुंज क सुखद वातावरण ।
लता गुल्म वितान तानल, दूभि भूमि क आवरण ॥
भरल जल वापी गभीर सनीर कूप समीप तत ।
कुटज पाटल लघु विटप उटज क निकट अछि तत-वितत ॥ ८

बसि एतय एकान्त क्यौ साधक करै छथि साधना ।
दूर गाम नगर डगर के आबि करते बाधना ॥
चिर दिवस सँ युवक योगी बैसल एकाकी अभय ।
मन-दमन मे लग्न वा संलग्न लोक क अभ्युदय ॥ ९

नहिं बुझा' पड़ले एते दिन तरुण मन केर लक्ष्य की ?
ज्योति तपन क लक्ष्य ? अथवा अन्धकारे भक्ष्य की ?
आइ पहिले-पहिल होयत तप - रहस्य अनावरण ।
अप्रतीक्षित अभ्यागत क संयोग-वश शुभ आगमन ॥ १०

अवध – निर्वासित कुमार मृगांकदत्त समक्ष छथि ।
दश सखा सहचर जनिक सुविदित सुरक्षा-दक्ष छथि ॥
पथ–विपथ घुमइत पथिक दल अतिथि आइ उपस्थिते ।
आतिथेय अपरिचितहु शुचि सरुचि करइछ स्वागते । ११

भेल जखन सुचित अभ्यागत, तखन परिचय क क्रम ।
बुझल, पुनि तापस तरुण लागल कहय निज कार्य क्रम ॥
ज्ञात छल किछु वृत्त, किछु अज्ञातहु क अनुमान छल ।
अवध मे षड्यंत्र चालित, तकर फलहु क भान छल ॥१२

जखन स्नातक भय कुमार प्रवेश जीवन – क्षेत्र मे ।
कयल, अनुभव राजनीति क रीति की साकेत मे ॥
कुटिल पद–लोलुप अनैतिक जन क भ्रष्टाचार लखि ।
शासनहु मे कतहु नहि अनुशासन क निष्ठा निरखि ॥१३

लोकपक्ष क चेतना नहि, ने सुरक्षा साधना ।
बाहरी संकट अछैतहुँ अंतरंगी बाधना ॥
लुब्ध मति जखनहि कुमार क प्रथम परिषद घोषणा ।
मचल हलचल स्वार्थ गँठबंधी सभ क मन शोषणा ॥१४

स्मरण होयत परिषदहि मे मुख्य सचिव क उत्तरो ।
पुनि कुमार क पक्ष सँ ककरहु सुदृढ़ प्रत्युत्तरो ॥
जनिक सुनि वक्तव्य क्षोभ क लहरि जागल छनहि मे ।
'दमधि' बूढ़ पुरान से एखनहु न की छथि मनहि मे ॥१५

नहि बुझल होयत कदाचित, अति कुपित चित पुनि विमति ।
राज - द्रोह क दोष कलुष लगाय, कय अपमान अति ॥
देल देश निकालि; तेँ परिवार संगहि बसि बने ।
करथि हित चिन्तन सतत देश क तदपि आजीवने ॥१६

हम तनय तनिकहि, 'श्रुतधि' अछि नाम, शिक्षा साधना ।
विन्ध्यपीठ क महाविद्या - पीठ कथल समापना ।।
बोध श्रुति संगहिँ स्मृति क दिस, ज्ञान सङ विज्ञान दिस ।
देखि देथि पिता सतत रुचि नीति-शास्त्र प्रमान दिस ।।१७

एक दिन फल हाथ लय कहलन्हि, सफल करबे जखन ।
बीज कन रोपब यतन सँ सींचि अनुखन श्रम क कन ।।
फल क हित न अधीर बनबे, धीर नायक-विशेषण ।
सफल शुभ संकल्प तखनहि लक्ष्य हित केन्द्रित नयन ।।१८

जीवन क छल जे हमर व्रत यदपि नहि पूरित एखन ।
न्यास रखइत छी श्रुतधि सुत निकट, अति विश्वस्त मन ।।
हम तपोवन साधना हित रहब अन्तर्हित एखन ।
करब योगारूढ जगती शान्ति हित किछु तप सघन ।।१९

अहाँ तावत् प्रतीक्षा रत कुमार क सह – संगठन ।
जीवन क यौवन क करबे देश सेवा हित हवन ।।
वतमाने परिस्थिति कहि देत की कर्तव्यता ।
देश-भक्ति क पथिक केँ निश्छद्म करब सहायता ।।२०

वर्तमान क छन एखन अछि उपद्रुत द्रुत ताप घन ।
अपन कर्मठता क बल – आघात करबे अयोघन ।।
लोक लोह क शलाका संतप्त आयुध धातु गढ़ि ।
समय संगत करब संघर्ष क सफलता स्वयं बढ़ि ।।२१

चक्र जे दमन क चलित अपवाद नहि युवराज धरि ।
सुनु, भविष्य बता रहल अछि, बढ़ब गत घटना सुमिरि ।।
कहि कथा, कय शुभाशंसा, तात कहुँ बिनु सूचने ।
देल चलि, संन्यस्त जीवन न्यस्त संकल्पित मने ।।२२

धुमि पड़य जनु विन्ध्य-शृंग बिलंघि दक्षिण दिग्दिशा ।
चलल होथि अगस्त्य संस्कृति साधना हित चित बसा ॥
वन्य – नागहु अन्य वर्गहु बढ़ि रहल दुर्भावना ।
मेटि भेद समेटि एकात्मक बढ़ावय भावना ॥२३

वचन तात क मानि हम करइत प्रतीक्षा तरु क तल ।
आइ पाओल गति–दिशा अपने क दर्शन सँ विमल ॥
शक्ति जे संचित हृदय मे, स्वदेश क अनुरक्ति जे ।
सभ समेटि करैत छी सर्वस्व भेंट सभक्ति से ॥२४

मिलि परस्पर, कहि कथा जे घटित, विघटित तथ्य जे ।
जते तत्त्व विकीर्ण सभ संघटित करबे, कथ्य से ॥
प्रथम वनवासी क परिचय, शवरराज क मित्रता ।
अवध मुक्ति क युक्ति साधब तखन लाधब शत्रुता ॥२५

क्षणिक परिचय बल बुझल जे श्रुतधि मन्त्रि क मन्त्रणा ।
करैन निश्चय सिद्धि-रोधी दूर विघ्न क मन्त्रणा ॥
संग पूरथि व्यक्ति एकहु यदि विवेकी अनुभवी ।
शत अबुध सँ अधिक तनि' बल, हो असम्भव सम्भवी ॥२६

× × × ×

दिन कतोक बिताय संगहि अंग अपन बनाय पुनि ।
जाय दक्षिण दिशा करिमण्डित विपिन पहुँचल सगुनि ॥
मुनि ततय अतिवृद्ध पुनि यौवन चिरन्तन स्वस्थ तनु ।
नित्य त्रिफलाकल्प कल्पित वयस षोडश तरुण जनु ॥२७

वसन गैरिक, जनिक तन सुवरन झलक, पिंगल जटिल ।
नयन उद्दीपित वचन गंभीर घन ध्वनि सन जनिक ॥

दमित त्रिविधहु एषणा, पर्येषणा जनहित विहित ।
दर्म। आर अगस्त्य जनु गुरुपद विराजित छथि निहित ॥२८

जे किरात क प्रथित गुरुवर, नित्य सिद्ध प्रभाव जनि ।
बना देल सुसभ्य संस्कृत वन्य जन क स्वभाव पुनि ॥
अवचपतिहि क बल बनाओल नृपति विपिन क दृश्य जे ।
शक्तिरक्षित विदित वनवासी क नायक, शिष्य से ॥२९

कहल हुनि घटना सकल वन आगमन केर मूल की ?
सचिव छल-बल कोना बेधल कुमार क उर शूल ई ॥
उचित थिक विपति क प्रतीकार क यतन मे संग दय ।
पूर्व कृत उपकार अवध क सधाबिअ प्रिय अंग भय ॥३०

गुरु क शुभ आदेश पुनि अवधेश कृत गुन गन सुमरि ।
जेना अपहृत वन-प्रदेश क राजपद पाओल सम्हरि ॥
अति कृतज्ञ नयज्ञ वनचरपति कुमार क मित्र भय ।
कयल कत सत्कार सबहि क सहित परिजन वन निलय ॥३१

देल क्यौ रचि कुटी पर्ण क, तृण क सेज सहेजि कय ।
आनि बान्हल लगहि धेनु सवत्स; कत दधि दुग्ध लय ॥
कन्द मूल सुपक्व फल भोजन क हित अर्पित करय ।
इन्धन क कत ढेर देल लगाय, व्यंजन शाक लय । ३२

लय मयूर क पाँखि चित्रित रुचिर पट परिधान पुनि ।
खोंसि खोंपा फूल-दल, सीपी क हारी पहिरि धनि ॥
अजिनवसना वन्य ललना गीत गबइछ मधुर धुनि ।
मन क रंजन करय नव अतिथि क सिनेह क स्रोत गुनि ॥३३

टेरइत क्यौ बाँसुरी, डफरा क ढिप-ढिप स्वर सुघड़ ।
माँदल क डिङ-धिङ सबहि मिलबय ललित निज कंठ स्वर ॥

एक गति पर चलित पद सम्मिलित नर–नारी मुदित ।
नाचि–काछि उमंग संगहि नित हरैछ कुमार–चित ॥३४

जखन कहिओ परब-पावनि तखन कत उल्लास छल ।
सुरा रस भरले कलश पिबइछ जते धरि प्यास छल ॥
चाखि बिच बिच सरुचि आमिष आँखि लाल अड़ूल सन ।
गाबि उठइछ गीत गुनगुन नाचि उटइछ चल–चरन ॥३५

ढोल सुनितहिँ टोल भरि जुट बूढ़ बटु युवती–युवा ।
मेघ धुनि सुनि मत्त दादुर सोर करइछ कलरवा ॥
बान्हि कच्छ सपुच्छ सिर, बिरहा मरद सुनबैत अछि ।
गुच्छ–गुच्छ क फूल सजि धनि जनि नचैत मिलैत अछि । ३६

कतहु बम–बम शिव अघोर, धथूर आक क अर्चना ।
कतहु देवी-थान मे पशुवलि निरंतर अर्पना ॥
कतहु तरपय पितर कें सामिष समर्पय पिंडिका ।
कतहु नर धरि बलि चढ़ाबय पूजि देवी चंडिका । ३७

भाव क्यौ भगता करय, मनता धरय क्यौ भगतिनी ।
कतहु कबुला, धरय क्यौ पुनि फूल, अच्छत क्यौ धनी ॥
माइथान, बथान क्यौ मानथि शिला, तरु वन लता ।
नाम भेदहु रूप भेदहुँ पुजथि सभ वन – देवता ॥३८

नहि कतहु छल-कपट, ककरहु भय न चिन्ता लवलेश अछि ।
जीवन क साधन सुलभ, नहि जीविका क कलेस अछि ॥
छोट घर–आङन, न कोनहु ओट कात - करोट अछि ।
मुक्त द्वार कपाट, कतहु न चोरि लूटि खसोट अछि ॥३६

स्वच्छता नित मनहि मे, जत तनहि मे अछि श्यामता ।
कवत्रता कुंचित कचहि मे, कटि–तटहि मे क्षीणता ॥

दीनता उर भाव मे, अवगुन गहन मे विरलता ।
राग स्वर - संगीत मे; जत नृत्य मे पद चपलता ॥४०

....

देखि दृश्य नव रीति नीति वन देश क अभिनव ।
बुझल कोना बिनु वन प्रवास कय सकितहुँ अनुभव ॥
नगर ग्राम जनपद कत क्रित्रिम विकृत बुझाइछ ।
वन्य भूमि ई प्रकृत शान्त; मन सहजें जुड़ाइछ ॥४१

दिवस कतोक बिताय; एक दिन वन - पथ घुमइत ।
सखा सङहि बिच वनहि जाय देखल क्यौ कनइत ।
कहइछ—हाय ! युवा सुत बन्दी बनल अभागल ।
नागराज पारावत हाथें जाइछ मारल ॥४२

द्रवित प्रथम पुनि उत्तेजित कुमार जा' निकटे ।
आश्वासन देलन्हि हरबे जे संकट विकटे ॥
कतय पुत्र छथि, कतय नागराजा अविचारी ।
पथ देखबिय हम चलब सेहो दस सखा हकारी ।४३

तापस संगहिँ पहुँचल सघन दुर्ग पाषाणी ।
जतय युवा नतमुख बन्धनगत विह्वल बाणी ॥
खड्गहस्त पारावत उद्धत वध हित प्रस्तुत ।
नम्रमुखी सुमुखी दिस किछु संकेतेँ बजइत ॥४४

रे तापस-सुत ! की बुझि अबुझ ! कयल तों साहस ।
नाग - बालिका दिस दृक्-पात क पातक धाधस ॥
तप क विघ्न - रूपा नारी पुनि नाग - कुमारी ।
जकर रूप - विष बश बनलह मृत्यु क अधिकारी ॥४५

ई कहि खड्ग उठाय तरुण गर्दनि कय लक्षित ।
नागराज झपटल; ता' वयो भट लपटि अलक्षित ॥
पटकि देल चट शिला - पट्ट पर चितपट करइत ।
छीनि लेल करवाल काल विष लपलप करइत ॥४६

नागराज पारावत ऊपर बाज कुमारे ।
अथवा नाग क शिर पर बजरल गरुड प्रहारे ॥
नगपति पक्षच्छेद क जनु वज्र क आलोडन ।
तहिना छाती उपर चढ़ल, देखल जे जत जन ॥४७

गिरगिराय नगराय विवश गोहराबय लागल ।
उद्दण्ड क दण्ड क नृप - नय दोहराबय लागल ॥
हम अइँ क नहि रिपु कहियो, दय प्राण क भिक्षा ।
पुनि हमरहु लय लेब केहन कर्तव्य, परीक्षा ॥४८

....

किछु करुणा स्वर, किछु याचकता, किछु मित्रता प्रतिज्ञा ।
किछु पुनि कन्या विषय समस्या, किछु कुतूहल क प्रज्ञा ॥
छोड़ल नागराज कें सुहृद कुमार, कहल स्वच्छन्दे ।
बिचरह, करह न किन्तु उपद्रव, तजह कपट-छल छन्दे ॥४९

पुनि कुमार देखल कन्या कें कुंचित कंपित-गाता ।
चिंतित छलि की लिखल भाग्य मे प्रीति क रीति विधाता ॥
तापस-सुत दिस ताकि कहल, यदि अपनहि नाग क कन्या ।
स्वयं वरय तँ करिय प्रणय-रति परिणय विधि सँ धन्या ॥५०

पहिने स्वीकृति देल नागपति, तरुण तपस्वी तदुपरि ।
कन्या देल झुकाय माथ स्वीकृति - संकेत क मुद भरि ॥
जत सहचर परिचर सभ प्रमुदित छनहि देखि परिवर्तन ।
प्रतिहिंसा ज्वाला जत ततहि शुभाशंसा घन वर्षन ॥५१

आबि के एक अज्ञात प्रज्ञातधी,
नाग - जातीय कन्या, बरी तापसी।
मेलि, कै देल दूरस्थ दुर्भावना,
एक राष्ट्रीयता भावना आपसी ।५२

आइ पार्वत्य वा वन्य ने जाति दू,
पौर ग्रामीण ने मानवे पाँति दू।
सिन्धु सँ सिन्धु पर्यन्त भू-भूमिका
मातृका एकता आ-हिमा-कन्धका ।।५३

आइ वन भाग मे विभाग भेद भावना के
सहजहिँ कुमार कोरि गारि देल गर्त मे।
भाड़ि देल लोक बीच द्वेष मल जमल शेष
गर्द नहि बचल लेश उपचित मन - पर्त मे ।।
माथ झुका' नागनाथ कहल—भावि अवधनाथ !
लाथ नहि जीवन भरि करब नेम - वर्त मे ।।
संग सदा पूरब, अंग बनि कै न घूरब, रन—
रंग मे उमंग संग जूमब प्रान शर्त मे ।।५४

कने रुकि छने पुनः कहल ज्ञात भेले कथा,
कोना छल - बलेँ करौलक कुमार निर्वासना।
न जा' धरि सजा करी सचिव-मुख्य के सर्वथा,
न ता' धरि सधा सकी अहँक प्राण-निर्वाहना ।।५५

नागराज केर सुदृढ़ प्रतिज्ञा ओजस्वी अभियोग।
विधि योगहि वनवासी गिरिवासी क सहज सहयोग ।।
उत्साहित कुमार सह-सहचर, देखि दमधि शुभ योग।
कहल, एखन मिलिजुलि बल संचय करिअ सजग उद्योग ।।५६

अल्प समय मे नवल कल्पना यदि संकल्पित।
विस्तृत कार्य क क्षेत्र, कार्यकर्ता यदि अल्पित॥
अपन अपन लय काज भार बरु साधन बंचित।
दश दिश पृथक-पृथक् विघटित भय करु जन संचित॥

यदि वाञ्छित अति तीव्र गति
अछि भविष्य परियोजना।
देश - देश उद्देश - हित
संपर्क क उद्योजना॥५७

सभ जन निश्चय कयल, तदनु प्रस्थित दस सहचर।
एवमस्तु कहि विदा भेल दश दिश सभ सत्वर॥
चलल अवध क्यौ, उज्जयिनी क्यौ, गिरि वन सागर।
गृह विरोध, मालव निरोध, दुइ साधय नागर॥

स्वयं केन्द्रगत श्रुतधि सङ
राजकुमार क पर्यटन।
निर्धारित मिलि कयल सभ
कोना लोकमत संगठन॥५८

●

एकादश सर्ग

(दशो कुमार-सचिव क भ्रमण : उद्योग पर्व)

दश दिक्पाल अवस्थित दिश दश दिग्गज यथा व्यवस्थित ।
कोनहु अवस्था मे न व्यवस्था हो कदापि अनवस्थित ॥
दश इन्द्रिय संचरित विषय जत एकहि मनसा संस्थित ।
तहिना दत्त मृगांक अनुमते दशहु सचिव कहुँ प्रस्थित ॥१

एकाकी रहितहुँ के की अछि, सम्प्रति तकर परीक्षा ।
सूर्य चन्द्र एकसरे अहर्निश चलथि दैत जनु शिक्षा ॥
एकहि सँ अनेक 'एकोऽहं बहु स्याम' श्रुति सूक्तहि ।
अद्वैतहि विशिष्टता दर्शित्र द्वैताद्वैत प्रयुक्तहि ॥ २

द्व्यणुक त्र्यणुक सभ परमाणु क कृत, व्यक्ति समाज क मूल ।
एक अग्रयायी, अनुयायी सहस्र - सहस्र समतूल ॥
चुम्बक व आकर्षण व्यक्ति क करय समष्टि क योग ।
चिनगी एक ढेर इंधन केर जिनगी ज्वलित प्रयोग ॥ ३

देश विषय रुचि परिचय बुझि-सुझि करइत काज विचार ।
पृथक् पृथक् प्रस्थित दश दिश उत्साही दशहु कुमार ॥
आर्यावत - दक्षिणावर्त क वन्य पौर ग्रामीण ।
पूबा - पछिमा दछिनाहा - उतराहा नव प्राचीन ॥ ४

सभ क प्रकृति ओ विकृति क प्रज्ञा लय केन्द्रित किछु लक्ष्य ।
मूल संस्कृति क एक सूत्र मे ग्रथित राष्ट्र संरक्ष्य ॥
मगध - अवध वैशाली - मिथिला अंगहु वंग-कलिंग ।
असम आंध्र द्रविडहु कर्नाटक केरल मलय प्रसंग ॥ ५

गुर्जर महाराष्ट्र सौराष्ट्रहु हैहय केकय सिन्ध ।
कुरु पांचाल पंचनद मरु मालव गिरि वन दिग्बन्ध ॥
सभ क समन्वय नय-परिणय विचार-विनिमय अनुबंध ।
महाभारत क नव रचना हित समुचित विग्रह-सन्धि ॥ ६

विमुखहु सम्मुख होथि जहि सँ अभिमुखहु अधिक लग लाउ ।
जे तटस्थ तनिकहु विचारधारा मे अपन बहाउ ॥
लक्ष्य राखि, सभ अपन-अपन परिचय अनुभव अनुकूल ।
चलला देश-दिशा क परेखय दशा जन-मन क मूल ॥ ७

(१. विमल बुद्धि : मध्य-मण्डल परिक्रमण)

विमलबुद्धि चलला बिच-बीचहि योजना क अनुकूल ।
प्रथम प्रयाग तीर्थराज क रज-कण चढ़ाय निज चूल ॥
गंगा - यमुना दिवा - निशा जनु मिलइछ मेरु उपांत ।
अन्तर्वर्ती सरस्वती सन्ध्या - प्रभात समयांत ॥ ८

अक्षयवट दर्शन कय आश्रम भरद्वाज केर जाय ।
पौराणिक इतिहास सकल सुमिरल मुनिजन क निकाय ॥
बसि किछु दिवस देश-देश क आगत तीर्थ क हित लोक ।
मिलि जुलि सब सँ बुझल देश-कोश क जे बुझबा योग ॥ ९

निकटहि पुनि छल नगर प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान तत जाय ।
धार्मिक जन क आचरण देखल निश्छल जनसमुदाय ॥
ततहु अवध - उज्जयिनी यात्री दुहु बिच चारु विचार ।
उत्थापित कय नव निबन्धन क चर्चा देल बढ़ाय ॥ १०

कने वंक पथ यमुना-तट कौशांबी कुसुमा गाम ।
जे छल कला - कौशल क छवि-गृह बुद्धि-बोध अभिराम ॥

युगहुँत संतहु लोक बिच करइत कत प्रचार अनुकूल।
अवधकुमार क हित साधित करइत जनमत समतूल ॥११

कुरु पांचाल विदित जनपद युग-युग सँ आर्य निकेत।
ब्रह्म बोध पुनि क्षात्र ओज मुख बाहु प्रमुख अभिप्रेत॥
गंगा - यमुना वीचि तरंगित, तदुपरि ब्रह्मावर्त।
जतय सृष्टि रचना हित ब्रह्मा कयलन्हि प्रथम प्रवर्त ॥१२

सारस्वत रस पिबइत ऋषि मुनि-गौलन्हि शाश्वत बोध।
जतय मन्त्रद्रष्टा कें पल्लवहु मे ऐकिक शोध॥
मथुरा - वृन्दा - गोकुल - नन्दग्राम नाम अभिराम।
शूरसेन जनपद जत लीलापुरुष क लीलाधाम ॥१३

प्रस्थ पंचकहु जतय अवस्थित महाभारत क भूमि।
कनखल गंगा द्वार अवधि सब तरि पुनि अयला घूमि॥
भ्रमण क क्रम मे वन-पथ चलितहिँ पहुँचल सिद्ध कुटीर।
श्रमित शिथिल-तन राति बितौलन्हि शय्याश्रित चित थीर ॥१४

देखल स्वप्न, सिंह - सिंहिनी केर मेल - मिलाप क दृश्य।
दश भुज पुनि क्यौ पुरुष नारि लय सहसा भेल अदृश्य॥
पुनि वन गिरि कत, पुर क दुर्ग लट कत पशु बलि पडि गेल।
अंधकार छाया किछु छन, पुनि क्षितिज उदित रवि भेल ॥१५

विस्मित विमल बुद्धि पूछल अति विकल सिद्ध कें जाय।
अपन अदृष्ट क संग दृष्ट ई स्वप्न क फल फरिछाय॥
कहलनि सिद्ध प्रसिद्ध स्वप्न - फल वीर-वधू संयोग।
प्रमुख दश क बल रण-बलि पूर्वक विजय क अंतिम योग ॥१६

वन प्रवास, गिरि गुहा वास, षड्यंत्र मंत्रणा संग।
आदि अन्ध पुनि अन्त प्रकाशे सुख - वैभव क प्रसंग॥

सुनि गुनि सगुन समय, अनुनय कय, सिद्ध क लय आदेश ।
चलल विमलमति दत मृगांक निकट लय शुभ सन्देश ॥१७

(२. भीमपराक्रम : दक्षिणा-पथ परिभ्रमण)

भीमपराक्रम चलल दक्षिणा-पथ सुदूर अति धीर ।
कावेरी जल निर्मल बहइछ दक्षिण मलय समीर ॥
किष्किंधा गिरि कंदर घुमइत पंपा सरहु नहाय ।
कर्णाटक संगीत नाट्य रस मानस देल बहाय ॥१८

घाटी पश्चिम केरल कदली-दल चंचल परिवेश ।
मातृ जाति केर आधिपत्य मे परिवार क सुनिवेश ॥
पांड्य देश मण्डित मण्डित सँ मन्दिर चन्दिर चूम ।
महासागर क लहरि घोष मे घड़ि-घंटाहि क धूम ॥१९

नाविक चतुर दूर-दूर क वणिजा करबा लेल ख्यात ।
किछु दिन ततय बिताय बुझल कत देश-विदेश क बात ॥
पुनि रामेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग क दर्शन करय सभक्ति ।
काञ्ची हरि-हर दुहुक धाम पूजल जत उर अनुरक्ति ॥२०

यद्यपि दूर छल देश, न व्यापल छल अवध क वृत्तान्त ।
भीमपराक्रम किछु जोगौल बन्धुता प्रयास नितान्त ॥
सह-अनुभूति देखाओल कत, कय धर्माधर्म विचार ।
किछु उत्साही कहल; हमहु करबे कुमार सहकार ॥२१

फिरब आब थिक उचित, करब सूचित जत साधन साध्य ।
प्रस्तुत भेला किन्तु किछु घटना घटित एहन जे बाध्य ॥
छला मयूर नृत्य व्यसनी तेँ भिल्ल क पल्ली जाय ।
चाहल लय ली संग, प्रसंग पड़ल बंधन असहाय ॥२२

खबरि पाबि मायावटु पटु कुमार हित वन्य समाज ।
'बुझा' सुझा' हुनि मुक्त कयल युक्तिहिँ, जेँ आन क राज ॥
अनुभव किछु, सहाय संभव किछु, सह-अनुभूतिहु लभ्य ।
भीमपराक्रम दत्त दक्षिणहु रदय कुमार क भव्य ॥२३

(३. गुणाकर : विन्ध्य-परिसर : मध्य-पूर्व संचरण)

चलल गुणाकर विन्ध्य परिसर क घूमय भाग - विभाग ।
ग्रह - उपग्रह पुजि, संग्रह - विग्रह साधित राग - विराग ॥
विन्ध्यवासिनी पुजल विहित कय मंदाकिनी नहान ।
चित्रकूट नासिक आश्रम कत घुमल विमल मन-प्रान ॥२४

नर्मदा क तट तप - आतप तपि शीतल हीतल कैल ।
पुजि मठ पीठ थान लिंगायत रीतल चीत क मैल ॥
कत गिरि गुफा चित्र रंजित, व्यंजित पाषाणी स्तूप ।
कारु शिल्प, स्थापत्य, कला-लालित्य कतोक अनूप ॥२५

गिरि गैरिक, अभ्रम शुभ्रक, लौहक, ताम क खनि न्यस्त ।
कते धातु उपधातु खनिज विन्ध्य क सन्निधि विन्यस्त ॥
सभक योग संयोग राज्य सम्पदा समृद्धि उपाय ।
अनुभव कयल गुणाकर आकर खानि क कत विध दाय ॥२६

आंध्र कलिंग तिलंग देश जे विन्ध्य क दक्षिण पार ।
सभ तरि घुमि रमि विलमि कयल मैत्री योजित नव द्वार ॥
कहल कथा अवध क किछु जत छल छल-कपट क व्यवहार ।
पुनि उज्जयिनि क दिग्विजय क सपना पर देश प्रहार ॥२७

गिरि प्रदेश भ्रमण क उपक्रमहिँ छल दुर्भाग्य क योग ।
भिल्ल क पल्ली पहुँचल कोनहु बुझि अजनबी अलोक ॥

घेरि - बेढ़ि दस्यु क दल बाम्हल पशुवत् गाम घुमाय ।
पुनि किछु तंत्र - मंत्र पढ़ि लय चल नर-बलि देबय हाय !!२८

ततय एक क्यौ वन्य शिष्य दमघि क छल दीक्षित नव्य ।
वनवासी बिच नर-बलि रोधक शोधक रीति अभव्य ॥
नाम दुर्ग मातंग अंग मत बन्धुत्व क उपयुक्त ।
दमधि-प्रणिधि बुझि कयल गुणाकर कें बंधन सँ मुक्त ॥२६

लोक क सह-अनुभूति, राजपुरुषहु सँ न्यायिक जूति ।
विद्वज्जन सँ सौजन्य क बल लय सिद्धहु क विभूति ॥
उत्साहित कत शस्त्र समाहित हित अनुगत लय संग ।
चलल गुणाकर बद्ध-परिकरहु युद्ध हेतु उतरंग ॥३०

(४. विचित्रकथ : उत्तरपथ-पथिक)

अथ विचित्रकथ प्रस्थित उत्तर दिश राजित हिमवान ।
योग - भोग केर पावन परिसर प्रकृति क लीला स्थान ॥
जतय विभव प्रत्यक्ष यक्ष केर किन्नरहु क कलगान ।
तपोवन क पावन आश्रम ऋषि-मुनिहु क चिन्तन ध्यान ॥३१

कानन सघन दिव्य ओषधि तरु लता वनस्पति ढेर ।
सिंह बाघ गज गवय हरिण गण चलय उछिन्न अनेर ॥
शिखर शिखर सँ द्रवित स्रोत जत निर्मल हिम क बहैछ ।
ताप शाप जगती क छनहि मे कनहु परसि हरि लैछ ॥३२

आँकड़ - पाथर जकर चरण गत बिखड़ल रहय अयत्न ।
लोक बटोरि यत्न सँ गढ़बय भूषण कत मणि-रत्न ॥
तीर्थ पीठ मठ वन आश्रम सर सरिता पावन धाम ।
घुमि-घुमि चित्र-विचित्र कथा शुचि सरुचि सुनल कत ठाम ॥३३

उत्तर खंडहि गंगोत्री यमुनोत्री बदरीनाथ।
दर्शन कय केदारनाथ - पशुपतिनाथहु क सनाथ॥
गढ़ गढ़वाल शैल नेपालहु कश्मीरहु गिरि प्रान्त।
हिमालय क लोकालय जत जे बसल लोक एकान्त॥३४

कुंकुम केसरि कश्मीर क कृषि रम्य पद्मपुर आय।
देखल, पहिने तप्तकुंड मे डुबकी सहज लगाय॥
नेपाल क तिरियाल भाल कस्तूरी तिलकित देखि।
कृष्णसार कस्तूरी - मृग कें परसल पावन लेखि॥३५

कखनहु उठय मनहि चिंता यदि उत्तर दिक्पति देव।
रक्षक यक्षाधिप कुबेर कें सुमिरथि गिरि-अधिदेव॥
घुमि - घुमि जन जनपद उपत्यका वन अधित्यका शृंग।
देवात्मा हिमालय क आंशिक परिचय रुचिर प्रसंग॥३६

भ्रमण मनोरंजन संगहि गहि अपन नीति मत काज।
कतहु मित्रता, कतहु संपदा, जनबल संचित साज॥
भय कृतार्थ फिरला पुनि निकट कुमार क नव उत्साह।
मिलन भेल जनु यमुना - गंगा संगत एक प्रवाह॥३७

(५. चण्डशक्ति : पश्चिम दिग्भ्रमण)

चंड शक्ति बल गति प्रचंड पश्चिम दिशा क भू-खंड।
भ्रमण करय चलला अभ्रम, लय प्रगति क लक्ष्य प्रचंड॥
प्रथम तपोवन शरभंग क जत कृष्णसार स्वच्छन्द।
होमधूम सुरभित वेदी, वेद क ध्वनि सस्वर छन्द॥३८

माहिष्मती पुरी परिसर पुनि घुमइत भूमि अनूप।
नर्मदा क तट विदित पुरातन जत मांधाता भूप॥

धर्म - संस्कृति क कर्म - प्रवृत्ति क सात्त्विक राजस भाव ।
सार्थक कयलन्हि उभय राज-ऋषि लोक-वेद सम भाव ।।३९

लेल प्रेरणा राजनीतिहु क मूल मर्म थिक धर्म ।
आस्था बिनु संस्था नहि स्थापित ज्ञान विरत नहि कर्म ।।
चैत्र विभास जाय सौराष्ट्र क रम्य तीर्थ परिवेश ।
ज्योतिर्मय शिव सोमनाथ केर मन्दिर रम्य निवेश ।।४०

देश - देश सँ दिशा - दिशा सँ आगत अगनित लोक ।
अन्तर तिमिर हरथि हर पद पुजि पूजित ज्ञानालोक ।।
परिचय कयइत जन जनपद सौवीर सिन्ध आभीर ।
नगर ग्राम पल्ली सगरो घुमि पहुँचल सागर तीर ।।४१

पश्चिम द्वारि भारती भूमि क दुर्गम दुर्ग समुद्र ।
विदित द्वारकापुरी जतय नहि प्रविशथि दुर्हृद क्षुद्र ।।
रणछोड़ क दर्शन कय जोड़ल कर रण विजय निमित्त ।
भगवद् गीत पार्थ सारथि मुख पढ़ल - गुनल मुद चित्त ।।४२

कच्छ कूल भ्रमण क प्रतिकूलहु कौतूहल वश गेल ।
जलमय दलदल भूमि घूमि पुनि सिंधु अवधि धुरि गेल ।।
लावण्यहु यानहु रुचि - रोचित सैन्धव राशि सहेजि ।
चलल चंड पश्चिमहु पुरोगम करइत प्रेम अकेजि ।।४३

(६. स्थूलबाहु : पश्चिमोत्तर देश-दिशा)

स्थूलबाहु स्थल चलल पश्चिमोत्तर दिस उर आवेश ।
व्यास वितस्ता रावी झेलम सतलज सिंचित देश ।।
शिवि कैकय वाह्लीक युद्धप्रिय गण यौधेय उगंत ।
जकर प्रतापें बढ़य न पबइछ शक हुण यवन दुरंत ।।४४

शालप्रांशु महाभुज दृग उद्दीप्त विशद बल वक्ष ।
जतय पौर ग्रामीण युवक जन युद्ध कला मे दक्ष ॥
दशपुर त्रिपुर पंचपुर नागर राज्य क लघु - लघु न्यास ।
जतय शिल्प स्थापत्य कल्पना योजना क विन्यास ॥४५

पुष्कल कंबुज तक्षशिला विद्या कला क सुविलास ।
उत्सव - संकेतहु सन जनपद भौतिकता क विलास ॥
देखइत - सुनइत मन - मन गुनइत ककर केहन सहयोग ।
लभ्य - अलभ्य, कते धरि कौ पुनि तखन युद्ध उद्योग ॥४६

सिन्धु क घाटी हिम परिपाटी गिरि-गह्वर पथ अंध ।
शक हूण अवण असुर यवन केर घुसपैठिक प्रतिबंध ॥
देश क सीमा गिरि-नद भीमा देखइत प्रमुदित चित्त ।
सदा अजेय अमेय राष्ट्र ई रक्षित प्रकृति - निमित्त ॥४७

करइत यौद्धिक अनुभव, देश - विदेश क संगम-द्वार ।
विश्व क भिन्न भाग मे कत की राजनयिक संचार ॥
युद्ध - आयुध क दिशा, अस्त्र - शस्त्रहु क नवल परिवेश ।
कत की कोना ? बहुत किछु लय संकेत, फिरल निज देश ॥४८

(७. दृढमुष्टि : प्राची मध्य चंक्रम)

प्राच्य मध्य पथ चलि दृढमुष्टिक कत गिरि गढ़ वन गाम ।
वनचर सँ वनस्पति क परिचय पुछइत गुण ओ नाम ॥
पाषाणी प्रतिमा गढ़इत छल गृहशिल्पी कत ठाम ।
तकर शिल्प - कौशल देखइत प्रमुदित चलला नव धाम ॥४९

तमसा तट बाल्मीकि क आश्रम, वत्सल गाधि कुटीर ।
कुशस्थली जे कुशावती कत वन - उपवन गिरि तीर ॥

बिच बिच गाम नगर चत्वर पथ किछु पल ततहु बिताय ।
थाकनि बुझि न पड़नि जें नव-नव दृश्य श्रव्य रुचिदाय ।।५०

कजरी सुनइत लगनी गुनइत फागु चैत धुनि कान ।
संगीतक लहरी मे बहइत बुझल न दिन गतिमान ।।
मगध पहुँचला जाय स्वास्थ्य बल संपद विकसित देश ।
गंगा सोन फल्गु कोइल पुनपुन पुनीत परिवेश ।५१

कुसुमपुर क लय वृत्ति-सुरभि, गिरिव्रज गौरव गुण जानि ।
पितर क्षेत्र पुनि बोधिवृक्ष सभ तीर्थ गया अनुमानि ।।
पाबि उदंतपुरी पावा केर महावीर – पद माटि ।
माथ चढ़ाय, विदित विद्यापीठहु पहुँचल दृग आँटि ।।५२

झारखंड बन खंड पुनः चलि पैदल दुर्गम भूमि ।
देखइत सुनइत कोल • भिल्ल वन-जनपद द्रुतपद घूमि ।।
पहुँचल पूर्वी पुरी अब्धि - तट; जगन्नाथ-पद माथ ।
झुका, चढ़ाय प्रसाद कयल अपना कें धन्य सनाथ ।।५३

अटके भोजन, पट केर पूजन, भ्रमण समुद्र-तटेक ।
नीलाचल पर साधु - संत केर दर्शन कयल कतेक ।।
मन ततेक लागल जागल रुचि, शुचि भय दिवस अनेक ।
साधु - सिद्ध सेवा मे लागल हित निज उद्देशेक ।।५४

दृढमुष्टि क सेवा-तुष्टि क फल साधक देल सुझाय ।
बल थिक प्रमुख अर्थ-बल, से दृढ मुष्टि बलें अधिकाय ।।
भूमि कृषीबल, गोचर-पशु धन, बनिजा देश-विदेश ।
खनि-आकर ओ शिल्प सकल थिक श्रमिक क रुचि-आवेश ।५५

द्विपदा राजतंत्र केर अमचरण थिक अर्थ उपाय ।
दंड-सैन्य जनि संचय बल, व्यय लघु पुनि विस्तृत आय ।।

अर्थ क अनुगम करइत मन-मन नव योजना बनाय ।
चलत पुष्टमन दृढमुष्टिक रचि कत संपद क उपाय ।।५६

(६. मेघबल : उत्तर-पूर्व दिग्देश भ्रमण)

चलल मेघबल काशी-मल्लहु लिच्छवि-वृज्जि प्रदेश ।
अंग वंग दय असम विषम-गिरि उत्तर - पूर्व निवेश ।।
काशी उत्तरवाहिनि गंगा मणिकर्णिका नहाय ।
विश्वनाथ - पद पूजि अन्नपूर्णा दर्शन शुचिकाय ।।५७

भैरव साक्षिविनायक गणपति व्यास आदि पुजि लेल ।
घाट - घाट मंदिर - मंदिर आश्रम - कुटीर घुमि गेल ।।
साधु - संत मठपति-महंथ पंडित गुणी क समवाय ।
देश-दिशा गत-आगत तीर्थिक परिचय विविध निकाय ।।५८

पुनि ऋषिपत्तन कानन घुमइत जनपद मल्ल बलिष्ठ ।
गोरखपुर अथ कुशीनर क पथ सिद्ध बुद्ध तप निष्ठ ।।
सरयू - गंगा संगम मुख घर्घर प्रवाह अवगाहि ।
यात्रिक सँ चर्चा-क्रम मे किछु अवध क चर्च उगाहि ।।५९

पार सदानीरा क कयल हरिहर दर्शन कय पूर्व ।
लखन पूर्व दिशि सहटि उत्तरहि चलला देश अपूर्व ।।
गंडकी क तट ताल-साल वन सघन वेणु केर कुंज ।
अटवी बिच ग्रामटिका कहुँ - कहुँ सब तरि वृक्ष-तरु पुंज ।।६०

वैशाली आङन मे देखल स्तूप चैत्य अभिराम ।
बुद्ध बोध, जिन श्वेत - दिगंबर, श्रमण भ्रमण-विश्राम ।।
धर्म-गंध चंपारण्यहु मे बसि गंडकी किनार ।
साल-साल वन वेणु-कुंज घन करइत वन क विहार ।।६१

हिमवत-शीतल गंगा-तीतल समतल उर्वर भूमि ।
हरित-भरित ससिगर सगरहु थल चलला घूमय भूमि ॥
सजल सफल उषमहु ग्रिषम क बन-उपवन सरस बसंत ।
पावस सघन, शरद धवलित, हेमंत धान-धनवंत ॥६२

बागवती कमला त्रियुगा लक्ष्मणा कड़ेह बलान ।
तीर-तीर तिरहुति क छवि-छटा उपजा पान-मखान ॥
घर-घर गीत-नाद गुंजित पंडित पुंजित शास्त्रार्थ ।
गाम-गमइ सब तरि नागर जन हास्य-व्यंग्य मे पार्थ ॥६३

कदलीदल चंचल भू-अंचल हरित-भरित बन-बाध ।
चर-चाँचर मे कमल-कुमुद अह-निश सौरभ निर्बाध ॥
नदीमातृका भूमि सरस, दोरस बसात ऋतु रीति ।
गीत बरहमासहु चौमासा बरिसात क अति प्रीति ॥६४

कोसी तट उत्कट नद नर्तन परिवर्तन क तरंग ।
बुझि पड़इछ प्रकुपित्त प्रकृतिक जनु हो वंकिम भ्रूभंग ॥
मोरङ-नोरङ पुण्यवर्धन क अनुभवइत रुचि रंग ।
वंगभूमि दिस चलल सजल श्यामल बसुधा उतरंग ॥६५

जतय माटिए सोन, धान-धन, उपजय जूट कपास ।
प्रेम पियास ब्रह्मपुत्रहु गंगहु कें सागर प्यास ॥
असम अ-सम सुषमा मे, सम नहि थल तें असम सदर्थ ।
कामरूप - कामाख्या पूजल विजयकाम अन्वर्थ ॥६६

यात्रा-अभिनय, नृत्य मणिपुरी, बाउलगीत क प्रीति ।
सुन्दरवन शिकार, झिलहेरि नदी-नद, कीर्तनगीति ॥
गंगासागर संगम डुब दय जतरा सगुन बनाय ।
फिरल मेघबल नाविकदल लय गंगा-जलपथ जाय ।६७

(९. व्याघ्रसेन : सैन्य-संगठन)

व्याघ्रसेन सेना संयोगय चलल मुख्य उद्देश ।
व्यक्ति शक्ति-साधन आयुध धन आयोजन परिवेश ॥
अनुगत जत छल जन-समुदाय कुमार क प्रति आकृष्ट ।
जे पुनि विषम विपत्ति निमित्त द्रवित-चित जन उत्कृष्ट ॥६८

न्याय-पक्षपाती सहजहिँ तनिकहु करइत समवेत ।
मुख्य सैन्य दल साजय लागल व्याघ्रसेन अभिप्रेत ॥
दोसर दल कयलन्हि प्रस्तुत, जे रिपु सँ कोनहु निमित्त ।
छल विरक्त, अपमानहु आहत, सहज वैरि दुरचित्त ॥६९

तेसर छल प्रकार भट केर जनिकर पेसे छल युद्ध ।
तनिका दय वेतनहि जुटाओल देखि प्रकृति अविरुद्ध ॥
किछु एहनो बाछल राखल छल अपराधी दुर्वार ।
कोनहु प्रकारेँ विषम समय मे कय तकरहु उपचार ॥७०

अथवा रोष-तोष दय तत्कालहि क हेतु विनियोग ।
शोधित विषहु औषधिक करइछ काज उचित संयोग ॥
मूल सैन्य अनुरक्त अवयवासिक पुनि तकर समक्ष ।
वनवासिक संख्या बल बढ़ि-चढ़ि अल्पहि व्यय रण कक्ष ॥७१

सहज कृत्रिमहु मित्र क बल लय; न्याय-सहायक संग ।
धनहु बटोरल, जनहु सकेरल जे छल बिखरल अंग ॥
अस्त्र-शस्त्र अंबार लगाओल, वस्त्रहु-कवचहु ढेर ।
भोजन-पान, यान-परिवहन, शिल्प-यन्त्रणाहु अनेर ॥७२

(१०. विक्रमकेसरी : स्व-परविषय क रहस्य ज्ञान)

विदित कुमार क आप्त सचिव विक्रमकेसरी प्रशस्य ।
स्व-पर विषय गत सकल वृत्त जनबा हित नीति रहस्य ॥

गुप्तचर क संघटन, सूचना - हित नित निज - पर पक्ष ।
आल ओछाओल आप्त जन क जे कूटनीति मे दक्ष ॥७३

किछु चर अवध जनपदहु किछु, पुनि अयोध्या क रजवास ।
किछु पुनि उज्जयिनी रजधानी, किछु मालव जनवास ॥
पास - पड़ोसहु राज्य बीच कयलन्हि चार क संचार ।
थोड़ - बहुत छल दूर-देशहु क दिस संपर्क प्रचार ॥७४

अपनहु गुप्त रूप सँ घुमइत विक्रमकेसरि व्यस्त ।
शुभ अनुकूल अशुभ प्रतिकूलहु तथ्य क ज्ञान प्रशस्त ॥
बुझना गेल क्रमहि अवध क परिवर्तित घटना-चक्र ।
षड्यंत्री मंत्री क दुष्ट मंत्रणा राज्य मे वक्र ॥७५

छल समाज मे यदपि तीव्र अभिरोष सचिव प्रति व्याप्त ।
हृदय-हृदय मे वनवासी कुमार प्रति निष्ठा आप्त ॥
उदासीन नृप अमरदत्त छथि सचिवाधीन विखिन्न ।
तनिकहु प्रति अछि घृणाभाव लोक क मन मे किछु भिन्न ॥७६

बुझना जाइछ उपर - उपर अछि लोक अचंचल शांत ।
किन्तु अन्तर क स्थिति भिन्ने अछि विस्फोटक विभ्रांत ॥
वातावरण लौह उत्तप्त, एखन यदि बल आघात ।
साँचे नव साँचा उत्क्रान्ति क गढ़त नवल संघात ॥७७

उज्जयिनी थित सचर चर क मुख सुनलन्हि जत्त वृत्तांत ।
बुझल कुमार क प्रति आकर्षण अन्तःपुर क नितांत ॥
किंतु राज-दरबार क बिच अछि रोष, अवध प्रति व्याप्त ।
जे वरणीय आइ तनिकहि प्रति घृणा घोर संप्राप्त ॥७८

करइत नित संचार चार सँ बुझलन्हि वार्ता-वृत्ति ।
पक्ष कुमार क रक्षणीय थिक से छल लोक प्रवृत्ति ॥

अवंवहु निरवधि छल कुमार प्रति लोक-भाव अनुकूल ।
मन्त्रि-मण्डल क कूटनीति पुनि प्रकट बिकट प्रतिकूल ।।७९
जेना ताल-बेताल क बल विक्रम-आदित्य महान ।
ताल-मेल सँ चर-दूत क विक्रमकेसरि कृतिमान ।।
चतुरंगहु सैनिक साजल बिनु गुप्तचर क नहि सिद्ध ।
सुगठित कय पचमदल, सचिव कुमार क फिरल प्रसिद्ध ।।८०

(सचिव - समुच्चय : विचार-गोष्ठी)

दिशा - दिशा सँ आगत दशहु कुमार - सचिव जे आप्त ।
देश-देश केर प्रकृति-विकृति गतिविधिहु क अनुभव प्राप्त ।।
विरह क रजनि बिताय, विघ्न-तिमिर क अभिशाप गमाय ।
कत निश्चर क नृशंस दंश, कत कटु-मधु स्वाद रमाय ।।८१
मिलन क सुखमय भोर क्षितिज नैराश्य-नखत केर अंत ।
सभ क हृदय-नभ मे विश्वास क समुदित सूर्य दिगंत ।।
उत्साहित नव अनुभव भावित कत कल्पना तरंग ।
दशहु कुमार - सचिव एकत्र छथि हीतल भरित उमंग ।।८२
क्रमहि अपन भ्रमण क घटना सभ एक-एक कहि देल ।
कतय सफलता कतय बिफलता, जे जत अनुभव भेल ।।
देश - चलित लिपि भाषा - भूषा लोक - वेद व्यवहार ।
हिलिमिलि लोक-समाज बीच कयलन्हि निज पक्ष प्रचार ।।८३
कय संकलित वृत्त, मत निश्चित उचित न बैसब चूप ।
उमस असह्य एखनहि प्रवह क सङ बरिसओ मेघ-स्तूप ।।
किंतु प्रथम उज्जयिनि क जय, प्रणय क परिणय परिणाम ।
तखन अवध उद्धार क हित योजित उद्यम उद्दाम ।।८४

श्रुतधि, सचिव दश, दुर्ग, वटु, वन्यहु चारु-चरित्र ।
मिलि जुलि रचलन्हि योजना, अवधकुमार पवित्र ।।८५

●

द्वादश सर्ग

(अवध : क्रिया-प्रतिक्रिया)

एखनहुँ ओहिना सरयू बहइछ
कल-कल करइत सोर ।
तरुण-तरुणि चढ़ि तरणि, उमस
हरइछ लखि जल हिलकोर ॥ १

समय सवन, घन उमड़ि-घुमड़ि
नभ बरस सरस घनघोर ।
चर-चाँचर केँ हरित-भरित कय
हँसय शरद ऋतु गोर ॥ २

एखनहु अगहन गहँन, भरल
खरिहान क अन्न अगोड़ ।
ऋतु वसंत अबइछ ओहिना
सजइछ तरु-लतिका जोड़ ॥ ३

कमल कमल नहि पुष्करिणी मे
कुसुम न कम उद्यान ।
एखनहुँ उगइत चान-सुरुज
निशि-दिन करइछ छवि दान ॥ ४

एखनहु जगमग नखत गगन मे
कोटि-कोटि द्युतिमान ।
एखनहु ओहिना अवधपुरी मे
बसइछ मनु सन्तान ॥ ५

एखनहुँ राजपथ क हलचल
नित लगइछ हाट – बजार।
कनक – भवन दीपित एखनहुँ
जन – संकुल राज – दुआर ॥ ६

किन्तु मान विनु दान, ज्ञान विनु
शास्त्र क जनु स्वाध्याय।
ध्यान न जमय प्रतीक विना,
विनु प्राण अचेतन काय ॥ ७

राम विना रामायण जहिना,
भारत जनु विनु पार्थ।
नन्द – नन्दन क बिना भागवत-
कथा यथा अयथार्थ ॥ ८

उदयन बिनु उज्जयिनी - गाथा,
विनु अध्यात्में शान्ति।
जनु भविष्य योजना विना
उद्देश्य - हीन हो क्रान्ति ॥ ९

रस विनु कवित, कण्ठ विनु गायन,
आनन नयन – विहीन।
रजनी विनु चन्द्र क, सजनी जनु
विनु प्रियतम छवि - हीन ॥१०

विनु धनु तीर, नीर बिनु नीरज
धीरज विनु धीमान।
दम्पती क सुख - सम्पति नीरस
विनु औरस सन्तान ॥११

पुष्कर विनु पुष्करिणी नामे
विनु वन – बाधें गाम ।
प्रणय - हीन परिणय नहि परिणत;
शहर वास विनु दाम ॥१२

सहिना विनु मृगाङ्क अवधक अछि
भाग्याकाश निराश ।
जन - लोचन चकोर अति आकुल
मिटय न अन्तर प्यास ॥१३

निर्वासित कुमार जहिये,
तहिये सँ अवध उदास ।
मिझा गेल दृग - दीप जनक–
जननि क दुर्भाग्य बतास ॥१४

परिजन पुरजन स्मरण करथि नित
दृग – पुट अश्रु अमन्द ।
कवि-गण विरह - शोक कें श्लोक क
रूप देथि कत छन्द ॥१५

कलाकार मार्मिक घटना कें
चित्रित करथि अथोर ।
सुधि-बुधि बिसरि देखि-सुनि भावुक
व्यथित चित्त दृग नोर ॥१६

किन्तु मन्त्रि - मण्डल षड्यन्त्री
छुटि खेलल कत रीति ।
शासन - सूत्र हाथ लय कयलक
प्रजा - जन क चित भीति ॥१७

जनु अस्तमित भानु लखि करइछ
कत उत्पात उलूक ।
खल दल जागल जगबय लागल
सभ क हृदय मे हूक ॥१८

नृप मन सहज उदास, न देखथि
शासन कोना चलैछ ।
पाबि सुयोग मुख्य – मन्त्री
कत कपट कूट विरचैछ ॥१९

प्रथम सैन्य – दल कें मिलाय
सब तरि चर–जाल पसारि ।
बिछि - बिछि जत अनुरक्त भृत्य
देलक निकालि सभ द्वारि ॥२०

भाइ - बन्धु कें थापित कयलक
रचि पद शासिनिकाय ।
साकेत क शासन पर लेलक
सभ विधि दखल जमाय ॥२१

नाम चलैछ नृप क केवल,
अधिकार मात्र मन्त्री क ।
राग - ताल यन्त्री क हाथ मे
शब्द मात्र तन्त्री क ॥२२

नृपति करथि हस्ताक्षर केवल
देथि लिखित वक्तव्य ।
जे कहबय चाहथि मन्त्री
से प्रकट करथि मन्तव्य ॥२३

सचिव विमति हठि मति-गति हरि
भूपति क स्वमति अनुसार ।
क्रमहि स्व-सुत विधूति क हित
रचइत छल उत्तर अधिकार ॥२४

पहिने जनपद – परिषद् नायक,
पुनि अवध क पुर - पाल ।
राज्य क प्रतिनिधि बना देल;
छल विवश अवध - भूपाल ॥२५

सोचल, आब पूर्ण कय ली
रचि पर - राष्ट्र क मत बन्ध ।
अवन्ती - पति क सम्बन्धहि
युवराज – पद क अनुबन्ध ॥२६

पुनि उज्जयिनी-पति केँ लिखबाओल
हम करबे सन्धि ।
इच्छा अछि, हमरा अहाँ क सङ
हो सम्बन्ध निबन्धि ॥२७

हमर पुत्र विद्रोही दुर्मति वश
अपनहि अपराध ।
त्यागि देल, जनु सविष अंग केँ
कटबय जन निर्बाध ॥२८

किन्तु पुत्रवत् हमर मन्त्रि - सुत
नगरपाल अधिकार ।
करइत अवध अवधि छथि राजित
विधृति शील व्यवहार ॥२९

अति प्रशस्त, अछि जन समस्त
प्रमुदित जनि चरित परेखि ।
अपन कुल क बुझि हमहु रखै छी
सुत सिनेह शुचि देखि ॥३०

छल सम्बन्ध विचार-बीज जे
पूर्व अंकुरित भेल ।
पुष्पित फलित कर' क हित तकरहि
छी हम प्रस्तुत भेल ॥३१

प्रस्तावित सम्बन्ध - बन्ध ई
यदि हो मन अनुबन्ध ।
करिअ अवध - उज्जयिनि क
ग्रन्थन हित स्वीकार निबन्ध ॥३२

....

लय पत्रिका पुरोहित – नापित
पहुँचल मालव देश ।
बाँचि अवन्ती - पति अपना कें
बुझि अपमानित शेष ॥३३

कहल समाद, प्रमाद छोड़ि
अवधेश्वर अवहित - चित्त ।
सुनथु आब, जे सुनि न सकल
प्रस्ताव हमर शुभ वृत्त ॥३४

जनिक सहज सुत विद्रोही
कित्रिम सुत तनि कत काज ।
पुत्री धरि जनि वश न, तनि क
वश की रह प्रजा-समाज ॥३५

आत्मीयो जनिकर रिपु से
नामहि क हेतु महराज।
एहन व्यक्ति कें सम्बन्धी
कहबहु मे हमरा लाज ॥३६

....

सम्बन्ध क प्रस्ताव क उत्तर
असम्बद्ध सुनि हंत !
नृप – समीप बाजल मन्त्री—
अछि निकट अवन्तिक अंत ॥३७

महाराज ! उद्धत – उद्दण्ड क
दण्ड देब कर्त्तव्य।
सीमाक्रमण - कारि अरि बढ़ले
गर्व खकर हर्तव्य ॥३८

कहल नृपति—कुमार दले पहिने
कहने छल से छोड़ि।
अहीं जोर द्यय कय विरोध,
रिपु-रोध न कयल सङ्गोरि ॥३९

अपनहुँ सीमा पर न डटल जे
करत दूर अभियान !
हमर विचार, न सहसा विग्रह
करिअ, यद्पि अपमान ॥४०

स्थिति गम्भीर नृपति चित चंचल
देलक अनुभव बोध।
प्रथमहि बेर सचिव - मंडल केर
नहि मानल अनुरोध ॥४१

सुनितहिँ तमतमाय कहि उठले
सचिव— भूप ! अहँ मूढ़ ।
डरिअ युद्ध सँ, मन्त्रि-परिषद क
सुनिअ कथा नहि गूढ़ ॥४२

एखनहुँ अहँक हृदय मे विद्रोही
कुमार केर मोह ।
विधृति कहि उठल, सन्धि-विग्रहिक
हमर हुकुम निर्मोह ॥४३

युद्ध घोषणा करइत सैनिक-
दल केँ दी आदेश ।
युद्ध विरोध करत तकरा हित
वन्दी - गृह क निवेश ॥४४

सुनितहिँ उद्धत वचन भूप
नत-मुख आहत मन क्रुद्ध ।
अन्तर्गृह चलि देल कोप-कम्पित
बुझि समय विरुद्ध ॥४५

पुनि विक्षुब्ध मन्त्रिगण करइत
रहला गुप्त विचार ।
उज्जयिनि क दमन क सङ्ग नृप क
नियन्त्रणहु क उपचार ॥४६

विधृति कहल, उज्जयिनि क कय
अवरोध, हरब रिपु गर्व ।
वरब कुमारी स्वयं, करब
उद्घाटित युद्ध क पर्व ॥४७

कहल अपर, बुझि पड़य नृपति प्रति
सूत्र कुमार क गुप्त।
परिवर्तन नृप मन कें कयलक,
व्यक्त भाव जें सुप्त ॥४८

मिलि संकलित विचार कयल सभ
त्रिगुट बनाओल जाय।
अवध नियंत्रण, वन निरोध,
अवरोध अवन्ती जाय ॥४९

विधृति जाथु उज्जयिनी जय हित,
सचिव करथु गृह रोध।
चुनल सुभट गण वन अन्वेषण
करथु कुमार क शोध ॥५०

एवमस्तु कहि सचिव विमति
सभ कें उत्तेजन देल।
उज्जयिनि क सङ्ग अवध-राज्य
अधिकार क अवसर भेल ॥५१

....

सहसा देखल लोक, टोक अछि सब तरि लागल।
नगर चतुष्पथ जनपथ वीथी भट-दल बाधल॥
शस्त्र सज्ज सैनिक उमड़ल, जनु घोर घन-घटा।
युद्ध नगाड़ा बाजि उठल पुर-हट्ट चटपटा ॥५२



त्रयोदश सर्ग

(दौत्य प्रयोग)

द्वैत-वन बसि वनेचर बिच उदय - मुख ।
पाशुपत लय, बन्धुता कय, दुखहु सुख ॥
कयल अनुभव पार्थगण सहि यातना ।
इन्द्रप्रस्थ क स्थापना इति साधना ॥१

तदनु वन रहि सचिव-बल गहि लक्ष्य शुचि ।
मित्र लाभ, चरित्र संगति; विजय रुचि ॥
झुझल पुनि की लोक - वेद क भावना ।
समय वातावरण रण - सम्भावना ॥२

अवध - राजकुमार लय नव योजना ।
संकलित कय सकल सहचर - परिजना ॥
सन्धि - विग्रह साम - दाम नियोजना ।
करिअ की, से मिलि रचिअ संयोजना ॥३

....

छल समस्या सामरिक अभियानहि क ।
पूरणीय कोना? तकर सन्धानहि क ॥
छो विरस नहि चरम चरण क योजना ।
पद कोना अग्रिम धरी तनि चिन्तना ॥४

सम्मिलित भय कयल सबहि विचारणा।
छल कतोक क युद्धहि क हित धारणा॥
किन्तु कहथि समय क प्रतीक्षा उचित पुनि।
श्रुतधि धीर गभीर बजला सभ क सुनि॥ ५

युद्ध थिक अन्तिम जखन गति आन नहि।
शल्य विधि तखनहि ज' भेषज त्रान नहि॥
विष-चिकित्सा अधम, रोकिअ जा' बनय।
मधु क पथ्य क तथ्य जा' धरि रुज हरय॥ ६

नहि उचित पहिने रण क उत्तेजना।
नीति-मत कर्तव्य दूत क प्रेषणा॥
सन्धि थिक अनुशासन क लघु योजना।
वाक्य-विग्रह दीर्घ-दीर्घ अरोचना॥ ७

जाय दूत सुनाय निज वक्तव्य ई।
बुझथु उज्जयिनी क पुनि मन्तव्य की?
तखन समुचित करब तनि परिचालना।
बरहि मधु यदि सुलभ, भ्रमण न कानना॥ ८

कयल सभ जन श्रुतधि-वचन समर्थने।
चित्रकथ अथ दूत चल, पल व्यर्थ ने॥
पहुँचि जनपद मालव क सम्पन्नता।
देखि, तन-श्रम दुरित, मन क प्रसन्नता॥ ९

कतहु खेत क हरिअरी, कहुँ गोचरी।
वाटिका कहुँ रम्य नन्दन-सहचरी॥
कतहु गाड़ी मे लदल फल रस भरल।
कतहु बाड़ी तिमन-तरकारी लदल॥१०

खेत बहु - फसिला सहज कठ - मन उपजं ।
नित दाउनि ओसाउनि खरिहान सज ।।
अछि पथार अमार लागल आङनहि ।
बाढ़ि - रौदिक गृहस्थी पर डाङ नहि ।।११

कतहु झुण्डक झुण्ड गाय चरैत अछि ।
गोप - शिशु वंशी बजाय गबैत अछि ।।
धेनुहिक थन स्रवित पय पटबैत अछि ।
खेत जोतय बड़द छन न लगैत अछि । १२

कतहु बाङक उपज, कतहु कपास धुनि ।
सूत कटइछ, कतहु बुनइछ वसन पुनि ।।
जाति व्यवसायी कुटीरक शिल्प रुचि ।
पूर्ति करय अभाव ग्रामक श्रमिक शुचि ।।१३

बाट - घाटहु पर्णशाला बनल कत ।
करय छन बिश्राम शत - शत पथिक जत ।।
हाट लागय कतहु नियमित दिन समय ।
वस्तु विनिमय चलय क्रय - विक्रय जतय ।।१४

ताल - वन मे मूर्ति पाषाणी मधुर ।
देखि उदयन - कथा सुमिरल रति-प्रचुर ।।
विक्रमक स्मृति-शिला गत इतिहास रस ।
रतहु मन पुनि विरत दृग निज कार्य वश ।।१५

पार रेवा कयल, शिप्रा स्नान कय ।
पहुँचला पुर चित्रकथ अव्यथ अभय ।
कयल दर्शन महाकालक साँझ मे ।
छन बिता किछु भक्त लोकनिक माँझ मे ।।१६

डमरू डिम-डिम, पटह ढिम-ढिम, शंख धुनि ।
झाँझ झन-झन, वेणु-वीणा मधुर पुनि ॥
कर चरण संचार ताण्डव उद्धते ।
लास्य मृदु नूपुर क रुनझुन संगते ॥१७

सुनि प्रदोष क अर्चना – संगीतिका ।
झुमल अमरावति – जयन्ति अवन्तिका ॥
धन्य उज्जयिनी क नागर – नागरी ।
नित प्रसादित शिव – पदाम्बुज मधुकरी ॥१८

सान्ध्य विधि निष्पन्न, पुनि विश्राम निशि ।
जागि जखन प्रभा प्रभाती पूर्व दिशि ॥
शुचि सुरुचि भय नित्य - कृत्य समापि जत ।
नगर परिसर चलल किछु छन भ्रमण हित ॥१९

स्वच्छ नी-रज सलिल सिंचित पथ वितत ।
तरु लतावलि कुञ्ज बिच - बिच रचित कत ॥
सजल कूप अनूप, मठ - मन्दिर कते ।
श्रेणि निर्मित हट्ट – वीथी परिवृते ॥२०

कतहु रथ - घर्घर, गज क घंटा क धुनि ।
पदाति क पद गति क संगति छंद गुनि ॥
कतहु तुरग कदम्ब चालित गति सुघर ।
द्रुत – विलंबित टाप उठबय ताल पर ॥२१

धनिक वनिक क गगन-चुम्बी भवन शत ।
राज – पुरुष निवास सकल सुपास जत ॥
देश – देश क राज – दूत क गृह – छटा ।
मणि खचित, विद्युत - वलित जनु घन-घटा ॥२२

वेध-शाला मे ग्रह क गति गणक गुनि ।
करथि ज्योतिष निरूपित प्रत्यक्ष पुनि ॥
कतहु चौपाड़ि क गगन मे शिशु नखत ।
चमकि रहले ज्योति प्रतिभा बल वितत ॥२३

कतहु युवजन सरस राग अलापइछ ।
वचन रचना चतुर चारु उचारइछ ॥
तर्क कर्कश कतहु कोमल रस – कवित ।
ओज – माधुर्य क उभय रस गुन कलित ॥२४

कतहु सामाजिक सभा संगम सुगम ।
कला – कौशल शिल्प – कल्पहु सूक्ष्मतम ॥
समाज क सुविकास हित चालित निगम ।
जतय चर्चित तर्क सङ आगम - निगम ॥२५

कतहु रस – गोष्ठी विविध मनरंजना ।
व्यसनि जनहु क अभिलषित रुचि रंजना ॥
द्यूत क्रीडा, पान गोष्ठी, अंगना ।
आदिरस बीभत्स धरि नव रंजना ॥२६

सरस जल स्रोत क सङहि ज्वालामुखी ।
रहय वसुधा उर समाहित बहुमुखी ॥
नीम – आमहु गन्हपसारिहु – चाननो ।
कुसुम – कंटक सभ समाहित काननो ॥२७

कतहु नट विट चेट विपटा चाटुता ।
रूपजीवा वारवनिता चारुता ॥
कतहु मधुगृह मधु वितर मधुबालिका ।
पथिक टिकथि सराय लखि गृहपालिका ॥२८

नगर – डगर क प्रकृति–विकृति विचित्रता।
दोष – गुण क विवेचनहि रस – सिद्धता॥
सत्त्व तम दुहु बिन्दु संगत मध्यता।
विदित रेखा राजस क रुचि – रम्यता॥२९

समय प्रार्थित पाबि नरपति सामने।
भय उपस्थित कहल दूत अभय मने॥
जयतु उज्जयिनी-नृपति, जय अवधपति।
जय मृगांक शशांक - ज्योत्स्ना मिलित गति॥३०

अवध – उज्जयिनी क दृढ सम्बन्ध हो।
करिअ स्वीकृत, यदि च मन अनुबन्ध हो॥
छथि शशांकवती सुता गुण – संयुता।
होथु अवध – कुमार केर परिणय वृता॥३१

मित कथा कहि, गहि निजासन चित्रकथ।
नृप क उत्तर सुनल सव्यथ कर्ण–पथ॥
पद – च्युत वन बसि उदासी जे व्यथित।
राज – तनुजा वरण करथि, कोना उचित? ३२

वामन क जनु चान चूम्हब कल्पना।
आक – कल्पलता क संगम जल्पना॥
तरु बबूर क माधवी केर कामना।
मरु क उर मे सुरसरि क जनु वासना॥३३

याचना जा' कय करथु निज राज – पद।
भाल अंक मृगांक मेटबथु भिक्षु – पद॥
अवधनाथ अनाथ सचिवायत्त जे।
प्रथम करथु स्वतन्त्र तनि, पुनि कहब से॥३४

कर्मसेन क मर्म छल आहत जते ।
आइ अपमान क जहर उगिलल तते ॥
कहि तथास्तु, यथास्थ प्रस्थित अविचले ।
नमस्कार क छल तिरस्कारे छले ॥३५

....

दूत विद्युत - वेग पहुँचल शवरपुर ।
जतय सब सन्नद्ध पहिनहि सँ प्रचुर ॥
कहि यथावर्त कथा पुनि घी ढारले ।
क्रोध अभियानी क आगि पजारले ॥३६

कर्मसेन क प्रतिबचन सुनि व्यंग्यमय ।
चित्रकथ मुख अस्फुटहु सुनि, तत्समय ॥
क्षुब्ध - क्रुद्ध विषाक्त कटु वातावरण ।
मधुर - माहुर, प्रणय परिणत प्रलय - रण ॥३७

उज्जयिनि केर दर्प ! अवध क प्रति घृणा !
सन्धि कें बुझि लेल विजित क प्रार्थना !!
कयल कौटुम्बिक कथा मधु - मन्त्रणा ।
हंत ! तकरहु बुझल विष - तिख यंत्रणा !!३८

सभ क मुँह सँ एक ध्वनि स्वर - व्यंजना ।
एक - मत सँ शत्रु - दर्प क भंजना ॥
'अस्ति कश्चिद् वाग्विशेष' क शाब्दिके ।
एक - एक क ग्रन्थ उत्तर यौद्धिके ॥३९

सरयु पर शिप्रा क प्रभुता कोना सम्भव ?
अयोध्या क विरुद्ध योद्धा कोना भालब ?
आस्तशीला पश्चिमा, पूर्वा उदयिनी ।
साँझ श्यामा प्रात अरुणिम, विषम-अयनी ॥४०

भानुवंशी अवध आइ अबाध गतिएँ ।
बिषुव टपि बिनु मीन-मेष बढ़ओ प्रगतिएँ ॥
भट वृषभ रण कर्क कर्कश मिथुन गतिएँ ।
वरण कन्या करत सिंहक तुलित गतिएँ ॥४१

आइ वृश्चिक दंश अपमानक जहर हो दूर सहजहिँ ।
आइ षड्यन्त्री क पाप क कुंभ फुटि हो चूर अपनहिँ ॥
तानि धनु जत वीर तीरक झरी लगबओ ।
प्राण त्राण न अरिक मकरध्वजहु अँचबओ ॥४२

अस्त हो रिपु-दर्पकहु हर-नेत्र ज्वलित स्फुलिंग-माला ।
किछु समय हित हिमवत क शीतल विपिन मे दाह ज्वाला ॥
किन्तु अंतिम घटित हर-गौरी स्वयंवर विधि विधाने ।
ग्रीष्म ज्वाला ज्वलित भेनहि तनय पावस घन विताने ॥४३

प्रणय-परिणय कथा मलय-समीर बहइत जतय अनुभव ।
ततय तत्क्षण क्षोभ-वात्या वायवी उत्क्रांति परिभव ॥
हिम जमल शैल क शिखर सँ जतय झरइत शिशिर निर्झर ।
ततय पल मे अंतर क ज्वालामुखी अंगार उद्गर ॥४४

प्रेम अन्तर निहित आराधित सुचिर से भेल बाधित ।
मान अभियानी क चिर-मानित अचिर से भेल ताडित ॥
देश-कोश क दबदबा जे दबाओल से उबलि आयल ।
आक्रमण केर व्रण क्रमहि पुनि बहिर्गत भय बलबलायल ॥४५

कुमार क उर-भावना आहत, तुरित प्रतिशोध जागल ।
सन्धि सन्धानी क मन पुनि रोष ओ अभियान जागल ॥
उदधि-नन्दन चन्द शंकर-मौलि-चंदन सहज शीतल ।
वाडवाग्नि त्रिलोचन क भालाग्नि ज्वालेँ जरय लागल ॥४६

कुमार क दल उबलि आयल, उमड़ि आयल, घुमड़ि आयल ।
गगन तपन क किरण कन तपि-तपि अवनि उर उमड़ि आयल ॥
रोष-कंपित वात झंझा झमक, चमक कृपाण - शंपा ।
वीर घन रण घोष पावस समय अभियान क तुलायल ॥४७

जतहि अमृत जोगाय राखल, ततहि निहित हलाहलो ।
जतहि चन्द्र-मरीचि रोचित राहु ततहु नभस्तलो ॥
जतहि रत्न प्रवाल मुक्ता खार वारि क आगरे ।
लवन - आगर रतन - आकर दुहु विशेषण सागरे ॥४८

●

चतुर्दश सर्ग

(विरह)

गगन – पुस्तक मे मयंक क पत्र रंजित ।
अवध – राजकुमार नाम मृगांक अंकित ॥
सुमिरितहिँ भेलि विकल रसवंती अवंतिक ।
सुखद जे जग दुखद से लग विरहवंतिक ॥ १

अमृत-कर रहितहुँ गरल भरि रजत प्याला ।
कर परसितहिँ बिकल भेलि शशांकबाला ॥
वृथा थिक अभिधान विदित हिमांशु शीतल ।
दृग लगबितहिँ असह्य तापित भेल हीतल ॥ २

रत्न रत्नाकर क पुनि बुध-जनक सुविदित ।
थिकहुँ लक्ष्मी – सहोदर, हर भाल तिलकित ॥
गगन उन्नत भवन, सहचर नखत अगनित ।
तदपि विरह विदग्ध केँ पीडित करी नित्त ॥ ३

कुमुद केँ मुदिते करी तेँ कमल कम नहिँ ।
निशाचर निशि संचरी तेँ दिन अधम नहिँ ॥
विदित दोषाकर कलंकी लांछनांचित ।
प्रकृति वंकिम विरहिनि क वध अघ अवांछित ॥ ४

किन्तु हम दमयन्तिका नहि जे मुकुर गत ।
आनि कानि सधायबे हनि अयोघन शत ॥
पुनि न राहु बजायबे बनि व्रज-रमनि धनि ।
सरस नाम मृगांक सुमिरि सनाम गुनि-धुनि ॥ ५

चान दिस तकइत चकोरी देखि पुलकित ।
भेलि भाव विभोर अपन अभाव उपचित ॥
दूर हमर मृगांक क्षितिज क पार छपिते ।
हग चकोरी विरह-विह्वल व्यर्थे कनिते ॥ ६

कुमुदिनी विकसित, विभासित कौमुदी छवि ।
कुमुद-नायक कर परस मम उर बरस पवि ॥
दिशा धवलित, हमर जीवन-दिशा कवलित ।
गगन चमकय, हमर भाग्य क गगन कलुषित ॥ ७

यदि निशीथ क शून्यता अछि जगत व्यापित ।
हमर शून्य मन क कनहु नहि कतहु मापित ॥
जत नखत अछि उदित नभ अगनित, गनत के ?
किन्तु चिन्ता चित हमर जत तनि तुलत के ? ८

हंत ! अंत दिगंत वंकिम अस्त चानो ।
अंध दश दिश तिमिर व्यापल नभ वितानो ॥
त्रियामा यम धाम सम अछि अंध-कूपे ।
विरहिनि क सुनि वेदना निशि मलिन चूपे ॥ ९

वन अशोक क वासिनी विरहिनि क अनुभव ।
गगन नखत क अग्निकण नहि सुलभ संभव ॥
आइ हमरहि बेर दूरहु रहि सङोरे ।
बरसि रहले किरण-कण उडुगण अङोरे ॥ १०

थिक अन्हार न धूम कारिख सगर लेपय ।
ओस बुन्द न थिक इन्होर टघार टपकल ॥
अहह ! दुःसह ताप देछ निशान्त शीतो ।
दुखी जन प्रति मधुर गीतो अकत तीतो ॥ ११

....

कलपि एहिना राति कटइछ, दिनहु खिन्ने ।
साँझ - प्रात विलाप करइत अश्रु - स्विन्ने ॥
यदि कदा च छने अचेतन पड़थि निन्ने ।
चौंकि उठ, कत गेलहुँ प्रिय, सपनाय भिन्ने ॥१२

दुखी जत सहचरि सखी अनुचरि कुमरि हित ।
विरह - ताप क हेतु कत उपचार रचइत ॥
पवन व्यजन डोलाय उर ज्वाला जगबइछ ।
सजल दल कमल क परस दाहे बढ़बइछ ॥१३

फुरय नहि किछु तखन रानी–माय कहि कय ।
कते वैदिक, वैद्य, ओझा – गुनी बजबय ॥
व्यर्थ तनि उपचार बिनु बुझनहि निदाने ।
कार्य - कारण भाव विज्ञान क विधाने ॥१४

अस्त्र – शस्त्र क बिद्धता यदि लक्ष्य साधित ।
शास्त्र – वाक्य क सिद्धता तर्कहिँ अबाधित ॥
विफल तेँ जल मंत्र – तंत्रहु, जड़ी – चुटका ।
चूर्ण आसव भस्म रस अवलेह गुटिका ॥१५

जाय फेकल, यत्न एकल सफल – कामे ।
सहस्रनाम क पाठ बीच मृगांक – नामे ॥
यदि अवध - नंदन क वनवास क कथा हो ।
पुछथि, कहिआ दूर मैथिलि – उर व्यथा हो ॥१६

द्वारि पर शुक – सारिका छल कनक पिंजर ।
पढ़ि रहल किछु व्यक्त ओ अव्यक्त सुस्वर ॥
दाड़िम क लय बीज अंजिल कुमरि पहुँचथि ।
मधुर स्वर प्रियतम क नाम मृगांक रटबथि ॥१७

प्रेम पालित सुरस पोषित शुक – शुकी दुहु ।
कत जतन अवहट्ट बचन निशंक कहि रहु ॥
हँसथि सखि रुचि संस्कृत क गहि अपढ़ खग कहि ।
लेथि प्राकृत पच्छ कुमरि विपच्छ मत गहि । १८

जखन पुनि शुक–सारिका दंपति मिलित सुर ।
तखन सुधि-बुधि बिसरि रसना स्वरित व्यंजित ॥
रटय लागय पिय मयंक निरंत सुमधुर ।
नाम जपइत भाँति सहसा विरह – मज्जित ॥१९

यदि च कखनहुँ उन्मना किछु अनमना लय ।
करथि अंकित चित्रपट कर तूलिका धय ॥
प्राकृतिक किछु दृश्य, किछु छवि दिव्य रंजित ।
अपन मनहि क भाव भावित करथि व्यंजित ॥२०

लिखथि विन्ध्य–अरण्य, चरइत मृग मनोहर ।
सरोवर बिच कुमुद कलिका कलित मधुकर ॥
उपर पुनिम मृगांक नभ, भूतल चकोरी ।
अपन कृतिअहि उदीपित हो नृप–किशोरी ॥२१

रंग रुचि लय पट–कुची किछु दिव्य छवि पुनि ।
करथि अंकन श्याम–श्यामा ब्रज क मनि धनि ॥
किन्तु श्यामल अंग सहजहिँ कनक रंग क ।
ब्रज क रंगिनि स्वयं बिंबित अपन ढंग क ॥२२

देखि सखि मन हँसथि, पूछथि नवल जोड़ी ।
थिकथि के ? अवध क युवा, मालव–किशोरी ?
चौंकि–चकित, विलोकि–लज्जित, होथि चंचल !
छनहि मे स्मृति–वलित बाला विकल विह्वल !!२३

सुनथि कखनहु वेणु वीणा मंजु सुर-धुनि ।
सुमिरि गोपी – वेणु – गीतहु उन्मना बनि ।।
उच्छ्वसित पद गान विरहा तान लय-धुनि ।
ककर मन कें द्रवित नहि करइत छली धनि ।।२४

भवन – वापी बीच कमलिनि मलिनि साँझे ।
देखि बोधथि यदपि लोक – समाज माझे ।।
विरह – रजनि गमाय अवधि बिताय बाते ।
अहँक प्रिय दिनपति उदित होयता प्रभाते ।।२५

....

मलय-पवन क रथ चढ़ल ऋतुराज आबथि ।
मंजरित माकंद मकरंदहु बहाबथि ।।
उपवन क नव-तरु नवल-लतिका सजाबथि ।
बंद खिड़की – द्वार कुमरि न देखि पाबथि ।।२६

किन्तु तखनहु दूर आम क डारि बैसलि ।
कुहकि मचबय सोर, केहेन दुष्ट कोयलि ।।
कृपा कय क्यौ बजा लाबय शिशिर पाला ।
वा कने पहिनहि पजारय ग्रीष्म ज्वाला ।।२७

कहय के हुनि शिशिर किछु पहिनहु जखन छल ।
की कसरि नहि ततहु ? तखनहु असरि की भल !
निशि हिमाल बसात की नहि तापदायक ?
कुंद-कुसुम न कोनो तिख कम कुसुमसायक ।।२८

यदि पलाश क लाल फूल बुझी अङोरे ।
ग्रिषम पाटल – कुसुम किछुओ कम न घोरे ।।
हुतवह क प्रज्वलन हित हो जेहन चंदन ।
सिरिस – सीसम काठ – कुशहु समिद्ध इंधन ।।२९

उषम समय क उमस तहु पर विरह तपइत ।
समय बितइछ सजल नलिनी–दलहि थपइत ॥
करथि सुख–उपचार सखि गन सजल वसनहि ।
छनहि सुखि उर-ताप, भिजि पुनि स्रवित नयनहि । ३०

केश श्यामल घन सघन नभ झाँपि मुख-शशि ।
बुन्द–बुन्द दृगंबु, झहरय स्वयं अह - निशि ॥
झंप कंपे, चौंकबे चपला चमत्कृत ।
स्वयं ऋतु बरिसात विरहिनि बनलि अद्भुत !!३१

खंजन क रंजन, एम्हर नयनहुँ निरंजन ।
ओम्हर कमल विकास, एम्हर उदास आनन ॥
ओम्हर चान क हास, एम्हर निराश जीवन ।
शरद उज्ज्वल-वय, मलिन विरहिनि क यौवन ॥३२

तुलित ऋतु हेमंत, दिन पति जनि प्रवासित ।
दुहु क राति पहाड़, जड़ता दुहु क व्यापित ॥
कमल मुख गलइत दुहु क तन कंप जारी ।
भाग्य – नभहु अशेष क्लेश कुहेस भारी ॥३३

वर्ष – वर्ष शशांकबाला प्रेम – मुग्धा ।
तपलि भीजलि सिहरि काँपलि ऋतु विदग्धा ॥
मास – मासहु साँस–साँसहुँ गनल दिन पल ।
किन्तु वत्सर बितल पहुँचल पहु न हुलसल ॥३४

....

फागु बीतल रंग बिनु न वसंत रागो ।
चैत नहि चित मधु–रजनि मालति परागो ॥
भेल आश विशाख, जेठहुं तपि घमायल ।
द्रवित आषाढ़हु प्रथम मोरें नहायल ॥३५

साओन क नहि घन सोहाओन असह वर्षे ।
भरल बादर भादर क आदर न हर्षे ॥
आस आसिन कास संगहि झरल मन वन ।
हंत ! कातिक अंत, कंत न भेल उन्मन ॥३६

अगहन क निशि गहन तुहिनहु पूस-माघहु ।
जाड़ गाढ़हु विरहिनि क हित बढ़ि निदाघहु ॥
तपल कत, सुमिरल सतत, धनि ध्यान लग्ना ।
साधना नहि सिद्ध एखनहु विरह मग्ना ॥३७

धार पार किनार पहुँचय चाह तरणी ।
उठय अंधर विकट पुनि भसिआय सरणी ॥
जाय फिरि मझधार जल - आवर्त चंक्रम ।
जीवन क सर्वस्व जनु डुबि जाय संभ्रम ॥३८

× × × ×

(निरस्त भावना)

अवध - राजकुमार प्रेषित दूत फेरल जाहि दिन ।
उज्जयिनि-पति कर्मसेन क कर्म टरले ताहि दिन ॥
माधवी लतिका क आशा-बंध टूटल पलहि मे ।
प्रमदवन क विकास कत ? मधुमास बीतल छनहि मे ॥३९

सुनि कथा रनिवास हंत ! हताश अंतिम बात सँ ।
प्रणय-परिणय याचना अवमान केर आघात सँ ॥
मलय-वायु लवंग-लतिका सम्मिलन नहि संभवे ।
आब गंगा - सागर क संगमहु भेल असंभवे ॥४०

ने सुषेणहु केँ कचल घटना घटित दुर्भाग्यमय ।
राज-परिवारहु क जत जे कहल, अति अप्रिय विषय ॥

अंतरित अन्तःपुरहु मे बुझल दुर्घटना विषम ।
थीक विधि क विडंबने जे कमलदह दगधल दहन ।।४१

रानि ओ महरानि जननी वर्ग महलक कमलिनी ।
खबरि पहुँचल जनु प्रलय - प्रालेय सरसिज विदलिनी ।।
शुष्क रस, शैवाल मर्मर, मधु-मरन्द क रिक्तता ।
छनहि मे उड़ि गेल सुख-सौरभ, भरल दुख-तिक्तता ।।४२

सखी सहचरि बिच पछाति उड़न्त पहुँच उदन्त, जे ।
कुमार क छल दूत आगत गत निरस्त तुरन्त से ।।
उषा आशा छनहि पहिने पूर्व क्षितिज हँसैत जे ।
भेलि श्यामा साँझ सोझे पश्चिमा कुहरैत से ।।४३

की कुमारि क भाग्य उपवन मे वसन्त क अन्तके ?
आबि विरह अनन्त तपन क उषम बसत निरन्तके ?
उमड़ि भाग्य के गगन मे घनश्याम रसवर्षी स्वयम् ।
पवन दुर्दैव क झड़ाओत पलहि कहुँ भेले लयम् ।।४४

छलि सकल निस्तब्ध, किछु नहि फुरय, ककरहु की कहय !
सभ क मन आतंक, आयल की एतय असमय प्रलय !!
यदि कुमरि कें भनक कनिअहुँ प्रणय-परिणय व्यर्थता ।
होयत छनहि अनर्थ हिम - हत मृदुल शैवलिनी लता ।।४५

तें न किछु क्यौ कहय; मौनहि सहय मानस वेदना ।
किन्तु सभ क उदासिए स्वयमेव करइछ सूचना ।।
सहज योगिनि वियोगिनि कें आइ दुर्योग क परिधि ।
विरह वारिधि लहरि डुबबय चाह ! हत विधि निरअवधि ।।४६

●

पंचदश सर्ग

(युद्धोपक्रम)

सैनिक क दश सत पंक्ति – निबद्ध ।
डेग उठबय संगहिँ सन्नद्ध ॥
तानि छाती रिपुघाती क्रुद्ध ।
वलित भुज – दंड युद्ध अनिरुद्ध ॥ १

चलल सैन्धव पारस्य तुरंग ।
मचाओत जे उद्धत रन रंग ॥
सुभट आयुध सज्जित असवार ।
हाथ भाला, कटि – तट करवाल ॥ २

मत्त हाथी हुलका क हिलोर ।
कसल हौदा पर वीर विभोर ॥
पर्वत क गर्व परस्त कय, मस्त ।
सूँढ़ उठबय कय अरिदल त्रस्त ॥ ३

शब्द घर्घर बधिरीकृत कान ।
अस्त्र सज्जित रथ पथ अभियान ॥
रथी सारथि केँ ललकारैत ।
बढ़ाबय कहल, समर सुमिरैत ॥ ४

वाहिनी चतुरंगिनि कत रंग ।
युद्ध – पंडित भट मंडित संग ॥
सभ क मन मे सामरिक उमंग ।
हेमय जनु चञ्चल जलधि तरंग ॥ ५

धूलि – पटली सँ व्यापित लोक ।
न सूझय पथ, पुनि नहि गति रोक ॥
बान्ह टुटला पर उद्धत बाढ़ि ।
पाटि दै अछि जनु जनपद काढ़ि ॥ ६

पहुँचि, भरि देल रन क मैदान ।
छनहि छापल घन गगन वितान ॥
देखि छितरायल भट, झट ऊह ।
कयल सेनापति रचना व्यूह ॥ ७

अर्ध चन्द्रायित सजि चतुरंग ।
दुर्ग अभिमुख बढ़ले रन रंग ॥
प्रथम खड्गी पुनि चापी पीठ ।
तुरग - भट तदनु गज क दल ढीठ ॥ ८

मध्य मे रथी; विरथ जत सैन्य ।
पार्श्व मे सजल, तजल मन दैन्य ॥
केन्द्र मे राजित राज – कुमार ।
दुहू दिस डटल 'शवर भूपाल ॥ ९

रुद्ध छल फाटक लौह कपाट ।
दुर्ग दुर्गम नहि भेद क बाट ॥
गुम्बज क उपर शतघ्नी बंध ।
आक्रमण साहस कें कर मंद ।। १०

तदपि दुर्ग क दुर्गति हित आज ।
ठनल इतिपूर्व न ईदृक् साज ॥
खबरि छल कर्मसेन कें वृत्त ।
बहिर्गत लड़बे उचित प्रवृत्त ।। ११

साजि रन - साज अवन्ती - राज ।
कहल साहसिक क दण्डे काज ॥
युद्ध नहि, विद्रोह क थिक साज ।
दमन करबे शमन क हित आज ॥१२

सुभट उद्भट संग्राम प्रसिद्ध ।
काल करवाल जकर नित सिद्ध ॥
तीर गिरि - भेदी, कवच अबिद्ध ।
क्रुद्ध मति जनिका क्षमा निषिद्ध ॥१३

पठाओल चुनि - चुनि वीर जवान ।
जनिक यौवन प्रलयाग्नि समान ॥
छनहि कर दग्ध अरि क तृन ढेर ।
विजय बिनु जे न फिरय घर फेर ॥१४

टुटल अरि पर, खग पर जनु बाज ।
गज क दल ऊपर जनु मृगराज ॥
पर्वत क शिला - खंड पर गाज ।
सर्प पर जेना गरुड खगराज ॥१५

जेहन आक्रमण भेल घन - घोर ।
तही विधि प्रत्याक्रमण क जोर ॥
गगन जनु मेघ क घटा घमंड ।
वज्र गर्जन कय प्रलय प्रचंड ॥१६

रण क दुन्दुभी ध्वनित घन घोर ।
शंख फूकल असंख्य कत जोर ॥
चढ़ल ज्या उठल चाप टंकारि ।
खाखना रहल प्रखर तरुआरि ॥१७

कतहु घोड़ा क टाप केर शब्द।
बज्र खसबय जनु भादव अब्द॥
रथ क घर्घर ध्वनि सँ श्रुति रुद्ध।
गरजि उठले जनु सागर क्षुब्ध॥१८

कतहु मद-मत्त करी निज शुण्ड।
उठा कय झपटल बल उद्दण्ड॥
मरदि गर्दहि मे मर्द क धाड़।
तोड़ि कय करय प्रबल चिंघाड़॥१९

खड्ग सँ खड्ग गेल टकराय।
प्रकट अग्नि-स्फुलिंग बहराय॥
ढाल पर बजरल कठिन कृपान।
लपट उठले ज्वाला क महान॥२०

कतहु भाला बेधल रिपु-वक्ष।
कतहु थकुचल मुद्गर भट पक्ष॥
गदा आघात माथ फटि गेल।
सोनित क धार धरनि पटि गेल॥२१

चढ़ल रथ रथी बान संधान।
काटि रहले किसान जनु धान॥
पटल रन खेत, कटल भट सीस।
गनत के आँटी भोंटी बीस॥२२

दलक दल पैदल झपटल जोर।
गरजले करइत जय ध्वनि सोर॥
परस्पर द्वन्द्व युद्ध मे जूमि।
न देखबय पीठ सुभट क्यौ घूमि॥२३

परस्पर क्रुद्ध युद्ध मे मग्न ।
यद्‌पि रक्ताक्त कलेवर भग्न ॥
न मानय क्यौ ककरहु सँ हारि ।
एक दोसरा कें रन ललकारि ॥२४

अस्त्र टुटलहुँ निरस्त्र भिड़ि गेल ।
ताल ठोकल कुश्ती लड़ि गेल ॥
चटाचट चाट, पटापट मुष्टि ।
खटाखट दाँत, सटासट घुष्टि ॥२५

होस जा धरि ता धरि लड़ि जोस ।
अन्त मे खसल संग बेहोस ॥
कतहु सूतल भूतल रन सेज ।
प्राण छुटितहुँ नें छुटय तन तेज ॥२६

कटल कत मुण्ड, खसल कत रुण्ड ।
कलेवर खण्ड - खण्ड निस्तुण्ड ॥
रण - स्थल पाटल शव समुदाय ।
सोनित क धार जाय भसिआय ॥२७

कतहु रथ चक्र क काछु चलैछ ।
कटल कर माछ जकाँ ससरैछ ॥
गजो भसिआय गोहि अनुमान ।
अश्व बहइछ नकार, उपमान ॥२८

श्मशानी रण क भयंकर भूमि ।
मरण - वरणी रक्तच्छवि क्रूर ॥
शव क अछि ढेर शिवा गेल जूमि ।
निकट गिद्ध क निषिद्ध दल घूर ॥२९

नोचि रहले ककरहु मुह नाक ।
करय कत शिर कपाल दुइ फाँक ॥
आँखि करइछ बहार कट्ठु लोल ।
मांस नोचय घिचि चामक खोल ॥३०

काक कुड़रय, टिटही टिटिआय ।
गिद्ध मड़राय, कुररि किकिआय ॥
गिदड़ भूकय, कूकुर कोंकिआय ।
कते पशु जीव रहल बोमिआय ॥३१

भयंकर दृश्य देखि हत - तेज ।
असह रण - रंग न सकल सहेज ॥
मलिन-मुख चलि देलनि क्षिति छोर ।
विवेकी रवि दुख - विवश विभोर ॥३२

ओम्हर रवि - चक्र अस्तमित भेल ।
चलित रण - चक्र एम्हर रुकि गैल ॥
ओम्हर सन्ध्या रक्ता बिहुँसैछ ।
रक्त - रक्ता क्षिति एम्हर कनैछ ॥३३

रणांगण देखि रक्त सँ पूर ।
रक्तमुखि सन्ध्या चोभें भूर ॥
क्रमहि पुनि विवश श्याम पड़ि गेलि ।
शोक - रजनी में मग्ना भेलि ॥३४

न सूझय दिशा न समर प्रदेश ।
न बूझय मित्र नं शत्रु विशेष ॥
भीति - मत राति देखि रन बन्द ।
व्याप्त छल स्वर आहत क अमन्द ॥३५

नियत जे जन रन व्रन उपचार ।
प्रदीप क हाथ कयल संचार ॥
बचल जे छल आहत भट वीर ।
कयल झट सविधि चिकित्सा धीर ॥३६

रनहि लड़ि बीर क गति जे प्राप्त ।
तनिक अन्तिम सत्कार समाप्त ॥
कयल, पुनि हुनि गुन सुमिरि महान ।
बुझल रन मरन मुक्ति अवदान ।३७

राति भरि पुनि योजना बनाय ।
यूथपति अग्रिम व्यूह – निकाय ॥
सोचि कत विध करइछ अनुमान ।
काल्हिए करब युद्ध अवसान ॥३८

तभी तम बितल छितिज पुनि लाल ।
रक्त छवि रवि तिलकित दिग् भाल ॥
आल सन पूर्व गगन छल लाल ।
रण-स्थल पाटल रुधिर पनाल ॥३९

एम्हर पसरल दिन – किरण क जाल ।
ओम्हर पहुँचल रण भट बिकराल ॥
जुटल योद्धा कर शर करवाल ।
हाल पहिले दिन जकाँ कराल ॥४०

क्रुद्ध दुहु दल बल भिरल विरुद्ध ।
न क्यौ ककरहु सँ भेल निरुद्ध ॥
युद्ध प्रतिदिन उद्धततर भेल ।
न क्यौ दल जितल, न जितले गेल ॥४१

विगत दिन, विगत पुनः सप्ताह।
च्यपित भेल पक्ष, मास सन्नाह॥
कटैल कत भट, कत आहत शूर।
दुहू दल जय – चिन्ता मे भूर॥४२

युद्ध ई जनु ज्योतिर्मय लिङ्ग।
न भेटय ओर न छोर प्रसङ्ग॥
द्रौपदि क चीर समान अनन्त।
न समर क देखी कहिओ अन्त॥४३

रण क कारण की ? कन्या एक।
मान मर्दन रिपु केर वा टेक॥
सहज भावहिँ जौँ हो सम्भाव्य।
श्रुतधि मन सोचल किछु प्रस्ताव्य॥४४

कुमार! न आब लोक संहार।
कराबिअ, चलिअ नीति व्यवहार॥
रण क कारण अछि सुविदित एक।
ग्रहण कन्या – रत्न क सविवेक॥४५

अपर पुनि हेतु रिपु क औद्धत्य।
आत्म – कुल – देश क गर्वहु सत्य॥
राज्य सीमा – सरदहु क तथ्य।
समर संचालित कोनहु लक्ष्य॥४६

युक्तियहि उचित प्राप्य उद्देश।
म तरु तोड़िअ, फल लहिअ अशेष॥
यदि च विनु रनहि विजय फल लाभ।
धरिअ से सहज पंथ प्रभु! आब॥४७

अहूँ छी अटल, वन्य दल डटल ।
न बल पुनि उज्जयिनि क निघटल ॥
न मानत दल एकहु निज हारि ।
प्रान बरु देत, न आन बिसारि ॥४८

ज्ञात अछि उज्जयिनि क जत वृत्त ।
बहिर्गत वा अन्तर्गत चित्त ॥
अनभिमत नहि विवाह – सम्बन्ध ।
मान – अभिमानहि नरपति अन्ध ॥४९

घर क संचार जते धरि दूर ।
पता अछि अन्तःपुरहि क पूर ॥
कुमारि क अछि कुमार – गत प्राण ।
स्वयंवर स्वयं – हरणहि क भान ॥५०

सूत्र अछि लागल तत पर्याप्त ।
सफलता होयत निश्चित प्राप्त ॥
सभ क पुर – बाहर रण दिस दृष्टि ।
सहज अन्तःपुर घटना सृष्टि ॥५१

चलओ दिन – राति आक्रमण जोर ।
चकित उज्जयिनि क शक्ति अथोर ॥
तावतहि चुपहि सुरंगहि जाय ।
जयश्री वरण करिअ युवराय ॥५२

वचन सुनि श्रुतधि क दत्त मृगांक ।
छने मन रन उड़ि गगन शशांक ॥
राग – रिस सँ अनुराग क दीस ।
विजय उन्नैस, प्रणय जनु बीस ॥५३

शंख नादहु बढ़ि रुचि धुनि वेणु ।
माथुरहु सँ बढ़ि वृन्दा रेणु ।।
पार्थसारथि गीता ध्वनि मंद ।
गीत – गोविन्द क गुंजित छंद ।।५४

भ्रमर सँ स्मर क अधिक आवेश ।
हंस सँ सदा सिनेह विशेष ।।
झाँट – झंझा सँ मलय बसात ।
पाबि कहु ककर न सिहरय गात ।।५५

एते दिन सँ हिंसा रण रंग ।
तीर – तरुआरि क तीव्र तरंग ।।
द्विषद उच्चाटन मारण तंत्र ।
सुनल शान्ति क सहसा श्रुति मंत्र ।।५६

अनल मे अनिल क उद्धत योग ।
सलिल पड़ि कयलक शमन प्रयोग ।।
तप्त वात्या घूर्णित मरु – देश ।
जलद बरिसल जनु रस परिवेश ।।५७

कुमर कहलन्हि पुनि मन आश्वस्त ।
मित्र ! अहँ छी नयज्ञ विश्वस्त ।।
कहिअ जे उचित रीति हो बोध ।
करब से झटिति नीति अनुरोध ।।५८

देखि कुमार क चित्तवृत्ति केर परिवर्तित परिवेश प्रपन्न ।
कहल सकज्ञ योजना, जेना जोतल खेतहि हो बाउग अन्न ।।
नगर-निवेशक रंध्र, बंध विधि, समय अंध निशा, विधि उपयुक्त ।
कर्मकुशल सहचर सहकारी अंग-अंगि भावहि संयुक्त ।।५९

मन्त्र सिद्ध हो मौन जप, रस रचना एकान्त ।
कूट-कपट वा नय-प्रणय, फलित रहस्य नितान्त ॥६०

सगर राति मन्त्रणा कयल मन्त्रीगण सोचि-बिचारि ।
भूत-भव्य आगाँ-पाछाँ निदान-परिणाम सम्हारि ॥
समय-परिस्थिति, बल-अनुभव, संबंध-बंध अनुसारि ।
प्रस्तुत निभृत योजना कयलन्हि निश्चित नय-अनुसारि ॥६१

गोपनीय रचना रहस्य नहि प्रकटित होय वयस्य ।
क्रिया-कलाप क फल-परिणामहिँ अनुमिति बुझिअ प्रशस्य ॥
सहसा ज्वालामुखी अनल विस्फोटहि हो अनुमान ।
अग्निगर्भ अन्तर गरमायल छल शीतल हिमवान ॥६२

....

ओहिना प्रातः रवि उदित, ओहिना जीवन व्यस्त ।
रन-वन जनपद नगर पथ, व्यावृत लोक समस्त ॥६३

द्वन्द्व हेतु एखनहु सजग, दुहु दलबल अछि व्यग्र ।
युद्ध चूत जय हित लगा' जीवन दाव समग्र ॥६४

किन्तु प्रभातहि घोषणा भेल कुमार क पक्ष ।
दिन तीन क हित स्थगित अछि हमरा दिस रण-कक्ष ॥६५

आबि तुलायल पर्व ई, शिवरात्रि क सविशेष ।
महाकाल-पद पुजओ जन, उज्जयिनि क अशेष ॥६६

शिव-बियाह मंगल क हो, घर-घर लीला गान ।
रण कारण बाधित न हो, अनुष्ठान-संस्थान ॥६७

स्थगन-घोषणा सह फहर, शान्ति-पताका शुभ्र ।
घन गर्जन वर्षण सकहि, प्रथमहि पावस अभ्र ॥६८

पावस घन वर्षणहिँ हो, आक-जवास निपत्र ।
स्थगन घोषणहि भटगणहु, सहजहिँ भेल निरस्त्र ॥६९

शिशिर शीर्ण वन मे जेना, विकसित नवल वसन्त ।
रक्त-कीर्ण रण मे तेना, घोषित शान्ति-उदन्त ॥७०

ओम्हर कर्मसेन क शिविर, विस्मय मिश्रित भाव ।
एहन भाव यदि शत्रुतहु, मैत्रि क केहन प्रभाव ॥७१

कर्मसेनहु क मन क अछि, धुपछांहि क किछु रंग ।
छन प्रकाश-उल्लास, छन विस्मय संशय संग ॥७२

लोक समाज उदस्त जे, पर्व गर्व उर हर्ष ।
भरल, पुरल अंतःपुरहु, कुमर क यश-उत्कर्ष ॥७३

रानि क मन आश्वस्त किछु, सखि गन चित विश्वस्त ।
कुमरि क मति गति के कहय, खनहि उदय खन अस्त ॥७४

जनिक हेतु रण - रंग ई कयल सकल बदरंग ।
पारिजातहि क कारणहिँ नन्दन वनहु क भंग ॥७५

जे सिनेह - सागर तनिक दुर्वह बाडव ज्वाल ।
समर शमित होइतहिँ सम्मुख उच्छल शशी रसाल ॥७६

अशन वसन मज्जन रसन, रण-कारण जत अल्प ।
मुक्त पर्व परिसर प्रसर, पुर-जनपदहु अनल्प ॥७७

जनु दिगंत बिस्तृत सागर बिच चलइत तरणी चंचल ।
झंझा झोँट झटक अन्हड़ पड़ि डगमग डबडुब अंचल ॥
सहसा समय शुभ्र रवि उदित देखि तट निकट पहुँचइछ ।
तखन जेहन आरोहि क मन पुरजनहु क तेहने लगइछ ॥७८

षोडश सर्ग

१

पर्व शिवरात्रि क विदित दिन भरि बिहित शिव दर्शने ।
अछि विशेष प्रदोष – पूजन व्रत क उद्यापन मने ॥
नगर भरि उत्सव – उछाह प्रवाह आनन्द क प्रबल ।
बहा देलक जत जमल मन युद्ध - भय - आतंक मल ॥

२

महाकाल क मन्दिर क परिसर महासागर – नुमा ।
नगर – वीथी लोक – लहरी सरित सागर संगमा ॥
कतहु रुद्र-स्नपन रुद्राध्याय पढ़ि-पढ़ि श्रुति–विदित ।
कतहु पाठ पुराण शिव ओ स्कन्द लिङ्ग क विधि-बिहित ॥

३

मन्त्र मृत्युञ्जय महान क जप निरत छल द्विज कते ।
राजकीय समाजकीय कतोक वैयक्तिक हिते ॥
कतहु पार्थिव, कतहु नार्मद, कतहु प्रतिमा पूजने ।
लिङ्ग कहुँ उद्दिष्ट पूजहु, भिन्न रुचि क जने-जने ॥

४

कतहु लीला-कथा पुनि कहुँ नाम-धुनि, कहुँ कीर्तने ।
कहुँ नचारी नाच – गीत, महेशवानी धुनि भने ॥
लास्य – ताण्डव नृत्य कहुँ गौरी – दिगंबर स्वयंवर ।
नाट्य-अभिनय त्रिपुरवध छल शिव विवाह क तिथि प्रसर ॥

५

व्रत महाशिवरात्रि केर, शिव-दर्शन क तिथि-एकतेँ।
अतुल जन-संमर्द जन-रव गर्द भू-नभ एक तेँ॥
उत्सव क अछि रूप कत, सात्त्विक तथा राजस रति क।
तामसी प्रकृतिहु छनै छल आइ, मानुस मद-मति क॥

६

जते जे छल योग-भोग क रुद्ध रण-वातावरण।
लेल मुक्त चुकाय, टुटितहिँ बंध रुकय न जल स्रवण॥
बुझि न पड़इछ पूर्व दिन छल एतय युद्धातंक किछु।
सभ मगन मन उत्सव क छन निरातंक; सशंक किछु॥

....

७

महाकाल क शिवालय-परिसर विशाल क सामने।
पार्वती-मन्दिर रुचिर निर्मित कलामय, दृष्टि कने॥
अछि ओतय महिला महाव्रक इन्तिजामो राजसी।
जुटलि नागरिका अवंति क रूपसी जनु उर्वसी॥

८

केश श्यामल घन-घटा, बिजुरी छटा जनु दृग चमक।
भाल अध-विधु, भौंह मदन कमान तानल कान तक॥
चमर पुच्छल लम्ब कबरी पीठ स्मर शर वीठ जनु।
अलक भ्रमरी पिबय मुख-पंकज क मधु रस मीठ मनु॥

९

संव-संचहि चंचु शुक शुचि अधर बिम्ब क लालिमा।
दंत दाडिम बीज व्यंजित अधर मधुरी मधुरिमा॥
जडित कंचन वसन तन भूषन रतन-मनि मंडिता।
अंग-रंगहि धनि-जनि क रुचि चंपक क अछि खंड़िता॥

१०

पहिरि पट परिधान रंग-विरंग बन टिकुली फुदक।
गगन आङन बिच नखत-बाला जेना झकझक झलक॥
कंठ कोकिल कलित रसना माधुरी स्वर-व्यंजना।
वाद्य विनु नव भास धनि-जनि भजन गबइछ रंजना॥

....

११

पूजन क क्रम दुइ दिवस सँ छल अनवरत चालिते।
बुझि पड़य जनु विरस बसिआयल फल क रस गालिते॥
उत्सव क सरवत समय-जल अधिकतेँ पनिसोह सन।
पिबि अघायल पर्व-रस जत नृत्य-गीत क स्वाद घन॥

१२

कयल दर्शन पद-स्पर्शन फूल पान प्रसाद लय।
चलल नागर-नागरी जन प्रभातहि जनु नखत-चय॥
व्रती जे जन जगरना कर, कबुलि धरना पर पड़ल।
नियमबन्ल महन्त पंडित पुरहितहु मठ पर अड़ल॥

१३

शेष जे उत्सव क दर्शक रसिक मेलक सह-जना।
सर-जना पाहुन-परक ओ एकजना जे घरजना॥
सबजना घर छोड़ि आयल जे चहय किछु अनमना।
जा रहल घररोहि लागल क्रमहि पुरजन-परिजना॥

१४

क्रमहि सागर शान्त, कोलाहल लहरि नहि शेष अछि।
नागरिक जन फिरल मठ-परिसर न लोक बिशेष अछि॥
निशि निशीथ क समय कतहु न लोकपथ गति लेश अछि।
बुझि पड़य अनहड़-विहाड़ि क बाद नभ-परिवेश अछि॥

× × × ×

१५

रजनिकर-वंचित दिशा, नीरव निशा एकान्त अछि ।
अछि निशीथ क समय संयत, नगर सगरो शान्त अछि ॥
लोक मुदित-नयान घरहि शयान जे श्रम श्रान्त अछि ।
यदि कतहु हलचल कने मठ-मन्दिर क गृह प्रान्त अछि ॥

१६

गगन पथ संचर तरल तारक पथिक लघु व्यस्त सन ।
छपित छथि कहुँ पार क्षितिज क अदृश शशधर अस्त सन ॥
अछि जगत अज्ञात तिमिरहि आवृतहु निशि निवृतहु ।
दूर एखनहु उषा-अरुण भविष्णु सङ्गम संवृतहु ॥

१७

यदपि नभ मे चान दृश्य न, कैरविनि विरहिनि डुबलि ।
प्रेम आकर्षण दुहु क बिच रश्मि रेशमि अछि तनलि ॥
भावना अछि तीव्र मिलन क मेटि दूर क बाधना ।
असम्भव कें करब सम्भव कहय तकरहि साधना ॥

....

१८

पूर्व-विन्तित योजना-अनुकूल रचित सुरंग-पथ ।
दुर्ग दुगम बिच प्रवेशल कुमर अव्यथ प्रेम-रथ ॥
नगर निर्जन छल तखन किछु मात्र पहरू छल कतहु ।
सेहो मातल कोनहु मद रस पूर्व योजित क्रम ततहु ॥

१९

भेल कोनहु कण्ठ सँ कलकण्ठ पिक ध्वनि हू-बहू ।
बुझल साधारण जनहु जे कतहु कर कोकिल कुहू ॥
पाबि स्वर संकेत पहिनहिँ छपित इत उत हटि-सहटि ।
भेल एकत एकमत पुनि चलल छिटफुट विपथ बँटि ॥

२०

गेल किछु अन्दर महल किछु नगर - चत्वर दिस सुभट ।
क्यौ अभट फाटक क मुह धय बान्हि मातल पहरु झट ॥
नशा टूटल जखन, दौवारिकहु बन्धन बन्हल छल ।
कहल किछु गोंगिआय गेल [redacted] क्यौ किछु मदिर जल ॥

२१

किछु बढ़ल मठ - मन्दिर क दिस, जतय पहिनहु पहुँच छल ।
जतय केन्द्रित छल सकल घटना क मौलिक मंच छल ॥
जतय चान क प्रिय चकोरी, मयूरी घन - श्यामहु क ।
कमलिनी दिनमणि क, जय - लक्ष्मी जेना संग्रामहु क ॥

२२

वन्य दुष्यन्त क एलहि क्यौ राजकीय शकुन्तला ।
बद्ध अनिरुद्ध क अनन्या उषा चित्र - स्वयंवरा ॥
आइ रुक्मिणि हरण करबा हित विदर्भ क परिसरे ।
कृष्ण प्रेम सतृष्ण आयल कपट - पटु अन्तःपुरे ॥

२३

आइ उदयन शिकारी पुनि अवन्ती - कानन बिहरि ।
कोनहु प्रद्योत क सुता हरण क प्रयासी छथि सम्हरि ॥
आइ अवधकुमार दत्त - मृगांक वङ्किम गति चलित ।
रोहिणी कें सङ्गिनी करबा क हित छथि उद्बलित ॥

२४

तकर सम किछु योजना पूर्वहि प्रवर्तित सङ्कलित ।
आइ विनु रण विजयलक्ष्मी वरण सङ्कल्पित कलित ॥
पूजि गिरिजा - गौरि नृपजा गोरि घर फिरती जखन ।
तखन विनु रण, विनु वरण विधि वर क, कन्याहि क वरण ॥

२५

चलि स-दलबल कुमर मठ दिस विजन पथ बिच बिचरइते ।
जखन देखल, लोक सभ ससरल घर क दिस संकलित ॥
सुरहिँ चलि पथ नियत, नियमित सचर सहचर परीक्षित ।
कतहु निकटहि अप्रकट रहि समय समुचित प्रतीक्षित ॥

× × × ×

२६

विरल जन मठ - परिसरहु पथ–चत्वरहु नहि जन सघन ।
नगर सागर शान्त; अन्हड़ - लहरि उद्धत गत जखन ॥
किन्तु तखनहु कतहु धनि-जनि 'गीत-गोसउँनि' गबैत छथि ।
बुझल; राजकुमारि गिरिजा - मठहि गौरि पुजैत छथि ॥

२७

फूल लाल अड़हूल नैने हृदय प्रतिमा प्रति प्रमा ।
पुरातनि गिरिजा पुजथि क्यों नूतना आने उमा ॥
आन ने उपमेय, ने उपमान, उपमेयोपमा ।
जेना आत्मा केँ स्वयं आतमे निरखबा मे क्षमा ॥

२८

जनम-जनम क प्रीति–दीक्षा हित सती बनि पार्वती ।
आब पुनि नव संस्करण हुनि थिकि शशांकवती व्रती ॥
जेना शंकर पति वरण लय तपलि गिरिजे, आन की ?
जेना अवधकिशोर वर लय याचिका भेल जानकी ॥

२९

जेना निषध - नरेश नल लय कत तपल दमयन्तिका ।
तेना अवधकुमार कारण तपथि कुमरि अवन्तिका ॥
वयन गद्गद नयन जल कर जोड़ि माथ झुकाय पद ।
कयल बहुल गोहारि राजकुमारि स्तुतिमुखि गीत-पद ॥

३०

भगवती करुणावती ! जनितहि अहाँ छी मन क गति ।
युग-युग क जे प्रेमघन मन - प्राण धन, मम होथु पति ॥
शिव - शिवा क विवाह - तिथि क उछाह दत्तवती वरओ ।
अवध - उज्जयिनी क रण - रौरव प्रणय - गौरव बनओ ॥

३१

भव - भवानी मृड - मृडानी दम्पती युग - युग जेना ।
हो मृगांक - शशांक पद - पर्याय दत्त - वती तेना ॥
उमा उज्जयिनी क जीवन अवध केर शंकर क कर ।
अवन्ती-जनपद क सीता वरण करु अवध क कुमर ॥

३२

हृदय - मन्दिर मे स्वरित जे कामना चिर - संचिता ।
आइ शुभ तिथि शुभ मुहूर्तहि देव - मन्दिर व्यंजिता ॥
सर्व-दिग् जनि दृग - श्रवण, जे सर्वतोमुख श्रुति-गदित ।
शर्व - शर्वाणी सुनल से अन्तर क वाणी विहित ॥

३३

ककर छल ई कहल, जे वर्षा प्रथम पुनि मेघ धुनि ।
फल फड़ल पहिनहिँ तखन मज्जर क ई अद्भुत सरणि ।
गोसाउनि पद - मूल चढ़ल अढूल अंचल जा' खसय ।
तावतहि क्यौ कर ग्रहण कय माल्य अर्पल सप्रणय ॥

३४

परस-मिठि दिठि उठा देखल कुमरि एक-टक कुमर मुख ।
चातकी स्वाती - घन क दिस, चकोरी चान क समुख ॥
मित्र मालविका क, पुरुरव उर्वसी क समक्ष छल ।
अभिज्ञान शकुन्तला केर पौरवहु प्रत्यक्ष छल ॥

३५

चौंकि चमकि अकामिके सुधि-बुधि बिसरि आवेग में।
हर्ष-मूर्छित भेलि सहसा कुमरि भावावेश मे॥
बुझि सकलि एतबे कि दैवत ज्योति-लहरी मे बहलि।
जा रहल छी कोनहु दिव्यात्मा क द्वीपहि दिस बढ़लि॥

३६

विद्युदुद्योतहि विभासित कोनहुँ ज्योतिर्धाम मे।
उड़लि, अथवा डुबलि छी जनु कोनहु अमृत-निपान मे॥
स्वप्न ने, जागरण ने, निद्रा न वा, तन्द्रा न वा।
ने सुषुप्ति, समाधि, प्रेम-उपाधि कोनो नव-नवा॥

३७

मोह भय आवरण तमस न, रजस चंचल-कामिका।
सतहु एतहु विवेचिता नहि, थिक कोनहु मधु-भूमिका॥
के कतय कहँ, अचिन्ह हम-अहँ, सबहि ज्योति क बिंदु कन।
बहि रहल अछि कोनहु आकर्षण विवश रस सिन्धु घन॥

३८

छलि अचेतनि सचेतनि की ? किछु बुझा पड़इअ न हुनि !
जेना तृन बहइछ प्रवाहहिं तेहन सन तन-मन चलनि॥
देवता पद चढ़लि जे नवमल्लिका माला कलित।
लेल माथ चढ़ाय जनु निर्माल्य क्यौ पूजक बलित॥

३९

परसि कर पुनि तडिद्-वेगेँ अंक अंग लगाय जनु।
कुमर लय चल कुमरि केँ अलि अलिनि संग रमाय मनु॥
मलय-मारुत वाटिका केर गन्ध कुसुम-पराग लय।
बहि वलय जनु, ध्वनि-तरंगहु ललित धुनि सुर राग लय॥

४०

देखल क्यौ, देखिते रहल क्यौ, देखिओ नहि सफल किछु ।
विद्युत क विलसित जेना घटना, न पुनि देखबा क किछु ।।
पवन उद्धत शान्त सहजहिँ शमित सागरहु क लहरि ।
स्वयं अपनहि पाल तानल सहज चलइछ प्रणय-तरि ।।

४१

स्वयं-चालित अभिलषित-गति पुष्पक क अभियान जनु ।
उड़ि चलय लय गरुड लक्ष्मी सहित हरि-भगवान जनु ।।
चढ़ि तुरंग सुरंग पथ धय युग्म अग्नि-शिखोपमा ।
प्रकृति-पुरुष प्रभा, प्रभाकर-किरण छवि-छाया समा ।।

४२

कुमारि क रथ रिक्त हाँकल क्यौ रथी अगुआय जे ।
सखी-सहचरि छलि पहिनहि गेलि गति अगुताय जे ।।
किछु छले रक्षक ततय सहसा पड़ल से बन्धने ।
मन्दिर क परिचारकहु किछु गेल पकड़ल वंचने ।।

४३

छनहि पूर्वहि जे अतर्कित घटित घटना शेष से ।
रण क कारण विजय-पण परिणय हरण परिशेष से ।।
नवल अवध-कुमार, नवला अवन्ती क कुमारिका ।
वर-वधू क स्वयंवरण हित सफल साधक-साधिका ।।

●

सप्तदश सर्ग

(उज्जयिनी क वातावरण : वर-वरण क भूमिका)

रजनी क तिमिर आवरण क्रमहि हटि रहले ।
अरुणिम प्रकाश क्षितिज क रस-रस बहरयले ॥
जे धृत्त अतर्कित, घटना घटित अकामिक ।
से क्रमहि दृष्टि-गोचर होइछ अधिकाधिक ॥ १

अज्ञात दिशा नीरव निशा क वातायन ।
प्राची क रुचिर पबइत संकेत रसायन ॥
सहसा सुमुखी साहसिका उषा कुमारी ।
अरुण क कर-अंचल पकड़ि चलल सुकुमारी ॥ २

देखइत छथि दूरहि सँ जे मुहँ बिचका कय ।
से कतय नुकाय छपित तारक-चय जा' कय ॥
की शक्ति अन्धकार क कनिओ चलि सकले ।
ज्योति क रेखा ज्योतिर्मय मण्डल मिलले ॥ ३

....

होइतहिँ प्रभात नभ-पट मे किछु नव रंजन ।
धरती क प्रकृतियहु मे नूतन अभि-व्यंजन ॥
छल किन्तु अवंती मे अद्भुत उद्वर्तन ।
सृष्टि क संवर्तन वा दृष्टि क परिवर्तन ॥ ४

छल दुर्ग-रोध जत दुर्घट रण संहारे ।
तत देखी जन-पथ मुक्त लोक संचारे ॥
छल प्रथम याम यामिनी सुभट दल वेष्टित ।
तत चरम पहर नहि लोक-चिह्न कहुँ चेष्टित ॥ ५

अन्हरोपे क्यौ भय-भावहिँ देखल बाहर।
नहि छल कुमर क छावनी—सैनिक क ठाहर॥
भय गेल सोर भोरहिँ किसान दल जागल।
पूछल सरिपहुँ? की भयें भेल छह पागल? ६

छल किछु छन पहिने जतय झाँट ओ झंझा।
लड़बै छल बाघ-सिंह गज-ग्राहहु पंजा॥
तत चरय उछिन मृग कृष्णसार रसगंधी।
ई गप्प तेहने अछि! सरिपहुँ छह दृग-अंधी॥ ७

कहितहुँ, पुनि भयेँ सहमितहुँ जा' कय आँचल।
देखल नयनेँ रण-रोष लेश नहि बाँचल॥
आश्वस्त हृदय, विश्वस्त खेत-खरिहान क।
कत दिन पर सुधि सब लेल अपन ओ आन क॥ ८

छल जन-जनपद मे शान्ति, क्रान्ति टरि गेने।
आक्रमण क किछु प्रक्रिया-भ्रान्ति हटि गेने॥
बसि गेल छनहि मन मे, उजड़ल संसारो।
शिशिर क पतझर मे लगले पल्लव लालो॥ ९

....

छल भिन्न हाल रनिवास क ओ रजबाड़ क।
आतंक-शोक, उन्मत्त रोष दरबार क॥
सब चौंकि-चमकि बुझइछ, पुछइछ किछु सहमल!
की भेल कुमारि क? के छल? कत छल बिलमल॥१०

हलचल अछि सगरो मचल! लोक अभिचंके!
सब पर सबहु क संशय, अपराध क शंके!!
रक्षक जत तक्षक! संगिनि सभ शुभ-भंगिनि!
नहि जे कुमारि केँ बचा सकल, छल-छद्मिनि॥११

छल रानी बनलि बताहि, आहि हुनि दुर्दह ।
परिवार – कुटुम्बिनि बिच क्रन्दन ध्वनि दुर्वह ॥
नहि छल ककरहु से स्थैर्य धैर्य जे बँधवय ।
डुबइत कें बचबय जाय स्वयं कें डुबबय ॥१२

राजा कें छल, जे राज - तेज अपमानित ।
छल पिता-हृदय आहत, जे सुता प्रतारित ॥
कर्महु क भेल छी छोट, सेनहु क दुर्बल ।
तें कर्मसेन नामहु अछि विफल अनर्गल ॥१३

जे सचिव सुहृद सामंत सुभट सेनानी ।
जे सचर गुप्तचर संवादिक सन्धानी ॥
से छुटल वेग सँ टुटल बान्ह जनु धारा ।
पटइत पथ - विपथ ग्राम - पुर रन - वन बाड़ा ॥१४

क्यौ तर्क करथि, अन्तर्गृह धरि न अवंचे ।
घरहि क भेदिये क्यौ रचलक गुप्त प्रपंचे ॥
तें निशि-निशीथ मे गेली गिरिजा पूजय ।
ई राजकुमरि; के बात व्यक्त नहि बूझय ॥१५

क्यौ कहल, राज – रजपूत क ई व्यवहारे ।
कय हरण करथि कन्या क वरण अधिकारे ॥
तें नहि चिन्ता क विषय – अवसर अवशेषे ।
ई छल तटस्थ केर सम्मति प्रसर विशेषे ॥१६

एहि विधि उज्जयिनि क वातावरण तरंगित ।
बुझि पड़य न, की रुखि लेत आन्तरिक इंगित ॥
छथि छटपट करइत कर्मसेन उर आहत ।
ई उषम उमस जनु घन-घमण्ड कर संहत ॥१७

तावतहि सुषेण कुमार संग उद्भट-भट ।
पुर आबि पहुँचला विषय-सूत्र बुझि-सुझि झट ॥
छल जुटल जतय राजा मन्त्री दरबारो ।
अन्तर्भवनहि, धनि-जनिहुँ क छल सचारो ॥१८

कहलन्हि—हे तात! मात हे! पुर-परिवारो!
अछि समय तनुक, कनिओ अविचार प्रचारो ॥
टूटत तरु-लतिका, उजड़त मधु-उद्याने ।
जत ऋतु-वसन्त, तत ग्रीष्म क दृश्य भयाने ॥१९

तेँ समय-परिस्थिति विषय-अवस्थिति तूले ।
देश क हित व्यक्ति-समाज क नहि प्रतिकूले ॥
धर्म क मर्म क रक्षा करइत विधि-मूले ।
निर्णय शीघ्रहि कर्तव्य रुचि क अनुकूले ॥२०

की संग्राम क छल रूप! न अछि अज्ञाते ।
दुर्ग क रोध क प्रतिरोध कोन अनुपाते!!
कत रक्तपात! नागरिक युवक संहारे!
ने तदपि पहुँचि सकलहुँ रण-सागर पारे ॥२१

बिनु राज्यशक्ति-साधनहुँ, वनहुँ रहि जे जन ।
कय सकल मित्रबल सैन्य सुभट रंजित रन ॥
तनि नीति-साहस क—उत्साह क—नहि सीमा ।
अवध क कुमार सुकुमारहु छथि बल-भीमा ॥२२

जनि वरण क हित प्रेषित छल पुरहित-नापित ।
उज्जयिनि क जे प्रिय विदित स्नातकहि ज्ञापित ॥
की बिसरि सकैछ कुमार क क्रीडा-कौतुक ?
पुनि कूटनीतिहु क रचना परिणय हेतु क ॥२३

की क्षात्र धर्म व्यवहार न हरण स्वयंवर ?
रुक्मिणी – सुभद्रा हरण कथा के बिस्मर ?
तेहि अभिमानें भिन्नविश्व सन्तति क भविष्ये ।
अन्विष्य वरे वरइछ कन्या, शुभ · दृश्ये ॥२४

सुनि नीति-रीति व्यवहार - प्रीति सँ पूरित ।
बहिनि क भविष्य प्रति भाइ क हृदय उदीरित ॥
जननी - जनक क मौलायल मन सरसाओल ।
जनु घन - गर्जन मयूर कें छनहिं नचाओल ॥२५

पल मे पलटल पछवा - पुरिवा क प्रवाते ।
सिहकय लागल दक्षिण मलय क मधु - बाते ॥
जे छल अभिजन तनि मन क कली खुलि गेले ।
शिशिर क जडता छुटि मधु - वसंत बसि गेले ॥२६

× × × ×

तखनहिं पहुँचल सांवादिक-दल गुप्तचर क अचिरागत ।
लय खबरि कुमरि-कुमरक जेत, अबधक गति-विधिहुक अधिगत ॥
कय विनय - सहित अभिवादन, संकेत पाबि भूपाल क ।
कटु कथ्यहु तथ्य निवेदल; मिथ्या प्रिय नहि हितकारक ॥२८

छमबे जे किछु हम कहबे, यदि होय न श्रुति सुखदायक ।
वास्तव संवाद घटित जे, विवरण तकरहि परिचायक ॥२९

सृष्टिहि सँ जानिअ स्रष्टा, कृतिए कर्ता परिचायक ।
संघटनहि घटना मापित, रचनहि कविभाव क वाहक ॥३०

तें जे अछि वस्तु यथायत, से अछि समस्त द्रुत वेदित ।
करु जतबे ग्रहण अपेक्षित; हंसहि सँ क्षीर विवेचित ॥३१

अवध क कुमार सँ घोषित, जे भेल शान्ति अस्थायी ।
शिवपर्व क अवसर संगत, से छल विचारिते स्थायी ।।३२

प्रणय क—परिणय क—विसंगत, रण - रंग क हिंसा जारी ।
रक्त क पंकिल पथ पर नहि, चलइछ अनुराग क गाड़ी ।।३३

ने हिंसक सिंह क हाथें, जाइछ प्रसून दल लोढ़ल ।
ने हेमंत क हिम-पातें, कमल क मुह जाइछ खोलल ।।३४

तें कोमल परिणय - प्रणय क, जें बन्द द्वारि अभिमानें ।
तें कोनहु प्रकारें पहुँचब, विहिते सुरंग अभियानें ।।३५

कौशल-किशोर कौशल सँ पहुँचल गढ़ बिच बिनु द्वन्द्वें ।
कय हरण कुमारि क फिरला वन-पथ गति-वेग अमन्दें ।।३६

अछि अवध - विन्ध्य दुहु देशक, सीमा पर खीमा कुमर क ।
दुहु दिशक खबरि पयबा हित, जत गति विधि एम्हरक ओम्हरक ।।

....

युद्ध स्थगन क जहिये छल, घोषणा कुमार-शिविर मे ।
सैनिक दल बहुतो निर्गत, वन - जनपद पुर - परिसर मे ।।३८

दुइ दिशा सैनिक क धारा, किछु अवध क पथ किछु विंध्य क ।
किछु नगर निवास निबन्धक, किछु वन प्रवास अनुबन्धक ।।३९

सब छल सतर्क कहुँ हो नहि, गतिरोध बाट - घाटहु कहुँ ।
तें चर - संचार क संगहिँ रण - संभार क ठाटहु बहु ।।४०

बूझल रहस्य अवध क जे, सचिव क—स-सुत क—तैयारी ।
विधृति क उज्जयिनि क अतरा, जे लड़ि-हरि बरब कुमारी ।।४१

पुनि विमति बनाओल वंदी, परिवार - सहित अवधेश्वर ।
अभियानी विन्ध्य प्रदेश क, कुमर क घात क हित सत्वर ।।४२

दुहु बाप – पूत दुष्कर्मी, एक जाड़े, दोसर गर्मी ।
एक अथ – पिशाच अधर्मी, दोसर कामी बेशर्मी ॥४३

दुहु दुर्मतिया दुहु भासल, दुहु दुर्भाग्यहि क गरासल ।
छल बेटा-रूप-पियासल, बापो अधिकार - तरासल ॥४४

सुनितहिँ क्रोधानल पजरल, जत कुमर-पक्ष छल यौद्धिक ।
सन्नद्ध शत्रु-वध हेतुक, जनतहु विपक्ष जत बौद्धिक ॥४५

तावत उज्जयिनी उन्मुख, अभियानी विधृति क सेना ।
पहुँचल बीचहि पथ उद्धत, निर्वातहु अन्वड़ जेना ॥४६

ललकारल — पथ हटि भागहिँ ! नहि तँ यमपुर-पथ आगहिँ ।
दुहु दल दुहु केँ फटकारल, ढारल घी क्रोध क आगिहि ॥४७

पहिने हुनि गारा - गारी, पुनि दुहु दल मारा - मारी ।
भिड़ि गेल युधायुध - धारी, पुनि मचल युद्ध संहारी ॥४८

ता' समर क रूप भयंकर, ता' भीमपराक्रम असि कर ।
निर्द्वन्द्व द्वन्द्व मे बन्दी कय शत्रु, समापल संगर ॥४९

अछि खबरि, विमतिहु क दुर्गति विंध्य क परिसर जे भेले ।
वनचर · गिरिचरहिं क हाथेँ सहजहिँ बन्धन पड़ि गेले ॥५०

पहिने अपनहि सैनिक मे मत - भेद भेल प्रासंगिक ।
पुनि क्रमहि रूप विद्रोह क अति उग्र हिंस्र सांग्रामिक ॥५१

गतिविधि उत्तेजित देखल, तेँ छोड़ि छावनी सैनिक ।
पहुँचल पड़ाय वनपल्ली — भिल्ल क समाज, दुर्दैनिक ॥५२

छल बुझल सबहु केँ अवध क, के दुष्ट सचिव छलछंदी ।
कुमर क सन तरुण क बाधक, चिन्हितहिँ हुनि कयलक बंदी ॥५३

....

दुहु पिता - पुत्र बन्धन-गत, दुर्गत सहइत अपमाने ।
कटु कथा सभ क सुन काने, अपराधि क बधे विधाने ॥५४

दुहु दिस सँ, दुहु रण - क्षेत्र क, बलिपशु रणचंडि क निहुछल ।
लय आयल भटदल भटकल, जत कुमर शिविर मध्यस्थल ॥५५

क्यौ कहय—कंटक क दाहे, क्यौ भनय—डुबाउ प्रवाहे ।
क्यौ सुनबय—तिल - तिल खंडित, कय गाड़ब डाबर खाहे ॥५६

जत क्षुब्ध - क्रुद्ध लोकानल, उत्तेजित ज्वाल अधीरे ।
सभ केँ प्रबोधि प्रियदर्शन, जनु पावस सजल समीरे ॥५७

कहलन्हि कुमार—बंदी दुहु, छथि दंडनीय नीति क मत ।
हो किन्तु दण्ड - अधिकारी, घटना - क्षेत्रहि क सुसंगत ॥५८

अभियानी विधृति क निग्रह, अछि उज्जयिनि क सीमा मे ।
बिमतिहु बन्दी छथि अवध क, राज्य क सैनिक खीमा मे ॥५९

विधृति क दण्ड क निर्णेता, तेँ होथु मालव क नाथे ।
निग्रह - अनुग्रहो विमति क, हो अवधेश्वरहि क हाथे ॥६०

सुनि चर-मुख कुमर क चरितहु, बल-बुद्धि-नीतिहु क घटना ।
उत्तरित प्रश्न, जनु युद्ध क कांडोत्तर उत्तर रचना ॥६२

....

छनहि पूर्व छल धर - पकड़ क; रण - रगड़ क चर्चा ।
ततय प्रवर्तित स्वागत - सत्कार क मधु अर्चा ॥
जतय कुमारि क उद्धार क हित प्राण क बाजी ।
ततहि सविधि बरणीय बिवाह क हित सभ राजी ॥६३

आन - शान - टेढ़ी जत, तत सम्मान सरलता ।
जत छल घृणा विरोध, ततय उमड़ल वत्सलता ॥
कुमर - कुमरि छबि - युगल कलित मन अंकन करइल ।
नगर नागरिक नर - नारी आरती सजबइत ॥६४



अष्टादश सर्ग

१

दूर सघन घन; दूर पंक पथ, दुर्दिन सङ्गहि दूर ।
पूर सरोवर; पूर सरोजहु, सुरभि परागहु पूर ॥
दिनकर-किरणहु निखर, शीतकर-रश्मि अधिक चिकनाय ।
निशा-दिवसहु संतुलित, सांध्य सुषमा अशेष रसदाय ॥

२

शंकिल पंकिल राजनीति-पथ क्रमहि परिष्कृत भेल ।
सामाजिक जत बाट-घाट सभ सुगम संक्रमित भेल ॥
घर-चौचर मे कास हास, सर-सरि मे कमल विकास ।
बाध-बनहु मे हरित-भरित सब बरि शुचि शालि सुवास ॥

३

हंस जतहु छल दूर प्रवासी, सरि तट देखल जाय ।
जतय तमिस्रा अमा मलिन, तत राका रजनि फुलाय ॥
मशक दंशहु क लेश न, उषमा जडिमा दुहु रहु दूर ।
पाँक न टाँट न पंथ जीवन क गति अति सुलभ सुदूर ॥

४

हस्त गता रमणीय सुचित्रा स्वाती प्रेम क पूर ।
चिर-विपासु चातकी-चातकहु तृपित भैल भरिपूर ॥
महालयहु गत चिन्तना पितृ क पक्ष देवियहु रक्ष ।
विजया शक्ति जागरित गृह लक्ष्मी आवाहन लक्ष्य ॥

५

घर - घर सुख-राति क जोगार अछि ज्योति · पर्व अभिराम ।
अन्नपूर्णा श्यामा अपनहिँ अयली स्नेह क धाम ॥
एते अवधि धरि निद्रा - मुद्रित भाग्य देव उत्थान ।
पुनिम चान केर दधिक छाँछ लय सामा करय चुमान ॥

....

६

ओम्हर अवन्ती नगरी सजइछ डाला पान - मखान ।
एम्हर अवधपुर मे भिन्ने शुभ शुभ संचित दुभि - धान ॥
विन्ध्य - परिसर क सखा पत्रधर केर विजयोत्सव रङ्ग ।
सङ्गहि कुमर - कुमरि केर सङ्गत परिणय हेतु उमङ्ग ॥

७

भागीरथी त्रिपथगा जनु त्रिभुवन हित पुण्य प्रमाण ।
तहिना वन प्रदेश रहि कुमर अवध उज्जयिनि क प्राण ॥
कर्मसेन नृप स्वयं सुषेणकुमार पठाओल साजि ।
वैर - बन्ध कें शुभ - विवाह सम्बन्ध क हेतु समाजि ॥

८

तिलक मांगलिक जत भूषण - परिधान अनेक विधान ।
लय चलला परिजन - पुरजन संङ वर कुमर क संधान ॥
उज्जयिनि क नागरिक प्रतीक्षा करइछ उत्सव संग ।
अवध - कुमार अवन्ति - कुमारि क गठबन्धन क प्रसंग ॥

९

ओम्हर अवध मे राजचक्रगति परिवर्तित पुनि भेल ।
सचिवायत्त शासन क आसन अधिगत नृपति क लेल ।

सैनिक विद्रोह क समाद जखनहि पहुँचल साकेत ।
बन्दी नृप कें स्वयं छोड़ाओल प्रजा-पूत समवेत ॥

१०

तावत कुमर क चर-सैनिक पहुँचय लय शुभ संवाद ।
रोध मालव क, शौर्य कुमारि क, ससुत सचिव केर वाध ॥
कोना विधूति ओ विमत क दुर्गति, कोना कुमार क जीति ।
भिल्ल-किरात-नाम-सहयोग क सुनल कथा अति प्रीति ॥

११

अमरदत्त भूपति क नयन सँ दहोबहो छल नोर ।
दुष्ट क वचनें भाग्य बिघटनें सुत निर्वासन घोर ॥
तकरहि फल भोगल, भरि जीवन रहते मन क मलाल ।
अपनहि हाथें फेकि गमाओल जीवन सर्वस लाल ॥

१२

जन्म-जन्म सञ्चित पाप क सङ्गहि पुण्यहु क वितान ।
तें तँ ओहन गमाय रत्न पुनि पौलहुँ भाग्य विधान !!
रनिवासहु जननी निर्जीवहु भेल प्राण संचार ।
जनी जाति हिम-हत नलिनी जनु पाओल मधु संभार ॥

१३

परिजन-पुरजन मन वन मे वसन्त सुषमा भरि गेल ।
अवध नगर बजड़ल सन सगरो हरित-पल्लवित भेल ॥
सभ क हृदय हुलसित उत्कण्ठित कुमर क दर्शन प्यास ।
पुनिम पव जे राहु गरासल कखन होयत उगरास ॥

× × × ×

१४

उज्जयिनी मे चर्च विवाह क, अवधहु स्वागत-अर्च ।
किन्तु विन्ध्य परिसर क पवन अछि बहि बहि उत्सव चर्च ॥

बन्धु प्रवास क भिल्ल-किरात-नाग नायक अनुषंग।
वनचर गिरिचन चर-चौचर जनपद क समाज सुधंग॥

१५

सभ अछि मगन नगन अनु नाचय शिशु गन आङन-द्वार।
कुमर-कुमरि कें घेरि रिझाबय गबइत गीत धमार॥
डिमिक-डिमिक मादल, डफरा ढिप-ढिप, खन-खन कर झालि।
उछलि-कूदि किछु हाथ-पैर चमकाबथ नाच क चालि॥

१६

पुनि वन-भोज ओज नहि-करइछ कंद मूल फल आनि।
किछु पुनि मीन-हरिन-खग आमिष चखइछ स्वाद बखानि॥
रचि रसपान मदिर बासल फल-जल जत तार खजूर।
महुआ-धाधाफूल अन्नहु क मदिरहु मे न उजूर॥

१७

पात क पूड़ा प्याला-चषक, परोड़हि आमिष खंड।
परसय बन्य नवौना पानि सुबरना प्यास अखंड॥
सरस कलश पल्लव दय भौंपल भमय भमर झंकारि।
पयौ ने एहन तरुन बौंचल जे जुटल न सकबि हकारि॥

१८

इतिआयत छल जखन उछाही भोज क धुनि उतरोल।
क्यौ नहि सुनइत छल घोल क बिच लगहु क ककरहु बोल॥
कयल चार वनचर क्यौ घोषित उज्जयिनी क कुमार।
अबइछ दल-बल सहित संग चतुरंग सैन्य संभार॥

१९

सुनितहिँ तखपल भाला लय क्यौ, झड़पल कर धनु-तीर।
लाठी-सोंठा पैना-बाना लय क्यौ कुदल अधीर॥

कहइत किन्नहु घुरय न देबनि करबनि चकनाचूर।
ककर दर्प जे कुमर-कुमरि केर उपर दृष्टि कर क्रूर॥

२०

छल बुझइत सभ कुमरि क हरणें उज्जयिनि क आक्रोश।
दूर खेहार कयल अछि उद्धत! बुझल न जोश बेहोश॥
पता छलै नहि, जे ई नै थिक क्रोध विरोध प्रवात।
तुहिनपात उतर ई आयल दछिन क मलय-बसात॥

२१

भट-उद्भट उत्तान, दशहु सचिव क रनहि क अनुमान।
कुमर क मुख मुसुकान, श्रुतधि मन लागल छल किछु ध्यान॥
कहल, प्रमाण जानबै सब, ई थिक नहि रण-अभियान।
कर्मसेन-नृप पुत्र पठौलन्हि वर-कुमर क संधान॥

२२

बहिनि-बहिन्वै के कुमार अपनहि आनथु अरियाति।
उज्जयिनि क पुर-परिसर कें करु शोभित वर-बरियाति॥
थिक तकरहि प्रबंध, संबंधि क मन-अनुबंधन कारि।
करु तकरहि तैयारी सभ जैन एखनहि, बुझिअ विचारि॥

२३

सुनितहिं सलजि सचिन्त अचिन्तहु अवंती क सुकुमारि।
प्रणय-परिणय क हठयोग क ई राज-योग उपचारि॥
निशि-निशीथ केर हरण बरण, पुनि उषा-अरुण संयोग।
कोनो भाग्य-भानु क उदयाचल-संक्रमणहि क प्रयोग॥

२४

रुचि-विरुचिहु ककरहु शुचि-अशुचिहु बुझि पड़ विषय प्रसंग।
पद तुकांत अतुकांत अपन रुचि-मत रचना केर ढंग॥

किन्तु सभ क उत्सुकता भावित कुमर क मुख दिस दृष्टि ।
कहल मौन लखि घन-गभीर ध्वनि जनु निर्वात क वृष्टि ॥

२५

आर्य श्रुतधि ! अछि तथ्य अहँक ई कहब अनुभव क भाव ।
उज्जयिनि क, अवध क ओ विन्ध्य क सभ क उचित सद्भाव ॥
किन्तु विहित विधिएँ यदि होय अनुष्ठित क्रिया प्रयोग ।
व्यक्ति - समाज जाति - देश क हित कर्मयोग विनियोग ॥

२६

प्रणय यदि च परिणत परिणय मे, हो नयहि क अनुसार ।
कन्यादानी पिता वर क बाप क लय स्वीकृति सार ॥
बन्धु - बान्धवोहु क अभिमत संबंध - सुखद संसार ।
सामाजिक रचना क प्रमुख थिक वैवाहिक आधार ॥

२७

तेँ थिक प्रथम विषय निर्धारण अवधेश्वर क समक्ष ।
जाथु कर्मसेन क प्रतिनिधि आत्मज सुषेण प्रत्यक्ष ॥
जैतहुँ हमहुँ किन्तु निर्वासित छी, बिनु पितु-आदेश ।
अवध प्रवेश न विहित हमर हित, एतबे विषय विशेष ॥

२८

मन-वचन क रचना सुनि-गुनि विस्मित-स्मित जत सभ्य ।
कहल, एहन त्यागी - अनुरागी नायक विश्व अलभ्य ॥
कहि 'जय जीव' अजीब जोश सँ कयल समर्थन जोर ।
दूर स्वजन-शिविरहु मे भेल प्रतिध्वनि भाव-विभोर ॥

....

२९

उज्जयिनी क शिविर सहमत जे अवध क अनुमति युक्त ।
दूत कुमार क रुचि आलोक लोक-परलोक प्रयुक्त ॥

अवध क दरबारहु में चर्चा चलइछ, एहन विचार ।
कय सकइछ के ? रामहि अथवा दत्तहि अवध-कुमार ॥

३०

चलल एम्हर कन्यादानी उज्जैनि क राजकुमार ।
ओम्हर पुत्रदर्शन - लालस अवधेश्वर सह - परिवार ॥
साकेत क पथ बिचहि दुहु क भय गेल मिलन संयोग ।
रिक्तहु शनैश्चरहु मिलितहिँ जनु सुविदित सिद्धि क योग ॥

३१

तुल्य उभय अनुरक्त, असंक्त विषय हित दुहु संयुक्त ।
कन्यागत वरागत क बिच अछि उत्तर पद सम युक्त ॥
सम्प्रयुक्त दुहु एकत संगत, तीर्थ प्रयाग क तीर ।
गंगा - यमुना संगम-रंगम मिलित सितासित नीर ॥

३२

अछि कर्तव्य प्रवाह विवाह क दुहू धार समतूल ।
प्राण मिलन दुइ तन क एक मन; दुहु कुल दुहू कूल ॥
अयोध्या क सरयू गंगा बनि, उछलय बलित तरंग ।
शिप्रा उज्जयिनी क क्षिप्र गति कालिन्दीहि क अंग ॥

३३

दुहु दल संगम तीर्थराज अवगाहन कय अविलंब ।
संगहि प्रस्थित, विषय व्यवस्थित एक बिन्दु अवलंब ॥
सुतमुख देख' क, वधू परेख क, छल पिता क अभिषंग ।
वहिनि प्रबोधब, पुनि बहिन्वै संबोधब भाव उमंग ॥

३४

मन पहिलहि चलि देल तदनु तन चढ़इछ लघु जनु तूल ।
उभय समाज जहाज चलल सागर क वायु अनुकूल ॥

लक्ष्य कुमार शिविर तट सहजहिं पहुँचल दल अविलम्ब ।
कोण बिन्दुगत संगत होइछ जनु दुइ रेखा लंब ॥

३५

करइछ खोज प्रवासी राम क जनक संदेह विदेह ।
एम्हर ससेन भरत आगत जनु उमड़ल सिन्धु सिनेह ॥
अवधकिशोर विभोर, न सुधि-बुधि रहल, गहल पद जाय ।
बहल नोर जे दुहुक नयन से तन-मन देल बहाय ॥

३६

पिता - पुत्र दंडक - दंडितं अन्वेषी वा अन्विष्य ।
वत्सल - वत्स प्राप्य - प्रापक किं वा के भूत - भविष्य ॥
किछु नहि बुझि पड़इछ ककरहु, वा रहल न बूझ क काज ।
भाव प्रभावी मौन उत्तरे जतय मिलन निर्व्याज ॥

३७

ध्याता ध्येय दुहुक विलय हो ध्यानहि द्वैत क अंत ।
वचन अगोचर अंतर - प्रांतर सुख - संबोध अनंत ॥
छन भरि वा युग भरि, किछु कहल न जाय, काल कत बीत ।
वर्तमान सीमा मे समटल मेल भविष्य - अतीत ॥

३८

जनु समाधि व्युत्थित योगी केँ कालेँ लौकिक बोध ।
अंबरमणि उगइछ जनु घन - लंबित क्षितिज क अतिरोध ॥
सम्हरि उठाओल पिता पुत्र केँ, पुत्रहु पिता प्रबोध ।
दुहु दुहु केँ संबोधय बोधय, युगल गलित - अनुरोध ॥

३९

दीर्घ - दीर्घ विरहक - लघु लघु संयोग अंत अजगूत ।
कतबहु सघन तामसी निशि, छन अरुण किरण अभिभूत ॥
परिजन - पुरजन छल विमुग्ध लखि आत्म - मिलन निर्द्वंद्व ।
छने विलमि समुदाय क दिस उन्मुख अपनाय अमंद ॥

४०

पुनि कुमार सुकुमार हूपेण मित्र दिस बढ़ल उमंग।
वक्ष लगाओल, जनु बसात कँ परसय तरु भरि अंग॥
तन पुलकित हुलसित मन लहुलहु बहइत गप क तरंग।
शत - शत उत्कंठा मुकुलित उर विकसित मिलन प्रसंग॥

४१

कृत भावना उमड़ि नयनहिं मे बिन्दु - बिन्दु बहि गेल।
गद्गद स्वर नहि वचन उचारित, बिनु कहनहि कहि देल॥
मौन - मौन संभाषण, पुलक - पुलक आलिंगन अंग।
बिनु पुछनहुँ प्रश्नोत्तर पूरित, अद्भुत प्रेम प्रसङ्ग॥

वैवाहिक प्रसंग : मणि-काञ्चन योग

४२

परिजन - पुरजन जे जत छल से देखि - देखि सौजन्य।
अन्योन्यहि अनन्य मानल सम्बन्ध - बन्ध शुचि धन्य॥
मिलि जुलि पुनि कयलन्हि प्रस्तावित उभय पक्ष हित वस्तु।
हरण स्वयंवर विरोचित पुनि परिणय परिणत अस्तु॥

४३

मेल समर्थन अनुमोदन समुदित कहि कहि शुभ साधु।
के न चहैछ योग मणि - काञ्चन समुचित रुचि आराधु॥
कोशल - मालव जन - जनपद हित सामाजिक सद्भाव।
अवध - अवन्ती दुहु रजधानि क नैतिक बढ़ओ प्रभाव॥

४४

सगःसमाज क हर्ष - प्रकर्ष लोक - व्यापित उल्लास।
मौहूर्तिक गणना अनुकूल सगुन, शुभ मनहु हुलास॥
अवधेश क आदेश, मालव क कुमर क शुभ अनुरोध।
जन - गण मन उत्सुकता - संकुल प्रस्थान क संबोध॥

४५

पहिने कन्या - पक्ष सदल - बल चलल सहज अगुआय।
मन मे छल सभ कें झट पहुँची, दी शुभ कथा सुनाय॥
पवन क वेगें, किरण क डेगें, गरुड़ उड़ानें जाय।
वैवाहिक विधि उज्जयिनी मे जहि सँ त्वरित तुलाय॥

४६

वर क पक्ष पाछाँ पहुँचओ, अरिआतओ कन्या - पक्ष।
लक्ष्य एक सिद्धान्त, दुहु क पृथकहु पूर्वोत्तर पक्ष॥
बरियोती चलबा क चतुर्दिक् उत्साहित छल लोक।
सभ जयबा क उपक्रम मे अछि नहिं ककरहु कहुँ रोक॥

४७

सजि धजि क्यौ, जहिना तहिना क्यौ, मगन अधनगन दौड़ि।
क्यौ उनटे - पुनटे पहिरन - ओढ़न लय हर्षें बौड़ि॥
क्यौ रथ पर, क्यौ पैदल पथ पर, चलि देलक अविलंब।
क्यौ मतंग पर, क्यौ तुरंग पर, वाहन बाजन लंब॥

४८

क्यौ करैछ यात्रोचित मंगल ऋचा पाठ स्वर बद्ध।
क्यौ पौराणिक स्तोत्र - स्तवक, क्यौ श्लोकहु छंद निबद्ध॥
ककरहु कंठ उचारय वर - कन्या कुल गौरव गद्य।
क्यौ वंदी - मागध विरुदावलि पढ़य पद्य अनवद्य॥

४९

क्यौ लगबय नारा कहि कहि किछु समयोचित व्यवहार।
क्यौ सोझे जयकार उचारय, क्यौ स्वर भरय उदार॥
क्यो गबैछ सुर - धुनि सँ, क्यौ मिलबैछ दैत करताल।
क्यौ बजबय बाजा, क्यौ पीटय ढोल झाँझ - षट्ताल॥

५०

कहल न जाय उमंग - तरंगित नदी वेग बरिसाती।
चलल जाय रथ मनोरथ क चढ़ि पथ-बढ़ि वर - बरियात॥

आज्ञा - पान अभ्युदयि मातृक - पूजन शास्त्र विधान ।
एम्हर सुवासिनि घेरल परिछन वर क सरस सह - गान ॥

६२

वेदी दिस पुरहित - नापित विधिकर विधिकारी निदान ।
गोत्र - प्रवर अध्याय पुरस्सर चलइछ कन्यादान ॥
विष्टर मधुपर्कादिक पूर्वक अग्निस्थापन कर्म ।
कंकण कामस्तुति गोमोक्षण हवन प्रदक्षिण धर्म ॥

६३

वर - कन्या निरीक्षितहु पूर्वहु, पुनर्निरीक्षण नव्य ।
अनुप्रास हित वर्ण क पुनरावृत्ति यथाविधि भव्य ॥
रूप - रम्यता नित - नवीन, पुरनाय न प्रेम क तथ्य ।
पूर्णात् पूर्णम् तृप्तमतृप्तम् दुहु थिक एकहि कथ्य ॥

६४

वैदिक लौकिक विधि - व्यवहार सकार सात अनुकूल ।
पूर्णाहुति दूर्वाक्षत सह वर - वधू चुमाओन तूल ॥
दुइ हृदय क ई मिलन सहज मन ऐकिक युग्म शरीर ।
एकहि धार प्रवाहित होइछ यदपि बद्ध दुइ तीर ॥

६५

रानी माय, पिता राजा ओ सोदर राजकुमार ।
आनन्दोदधि मे निमग्न छथि सुधि - बुधि किछु न सम्हार ॥
बन्धु - बान्धवहि संचालित, परिचालित गृह्य विभाग ।
राजस धन, सामाजिक साधन, परिवार क रुचि जाग ॥

६६

अवधपति क मान्यता, मालवेश क वदान्यता जन्य ।
दत्त - वती वर - वधू दम्पती, अवसर विभव अनन्य ॥
विधि - विधान उत्सव क पूर्णता तदनुरूप सम्पन्न ।
युगयुगीन सम्बन्ध - बन्ध विधि कवि क निबन्ध प्रपन्न ॥

६७

तदनु चतुर्थी मधु - रजनी महुअक दहनहि विधि तूल ।
कुमर - कुमरि नव नागर - नागरि वर - वधू क रुचिमूल ॥
नोत - हकार पता - आमन्त्रण तते आम ओ खास ।
चलल सिलसिला भोज - भात सप्ताह, पक्ष ओ मास ॥

योग-वियोग

६८

पुनि शुभ दिन मे बिदा हेतु जखने निर्णीत मुहूर्त ।
योग - वियोग क मार्मिक अवसर प्रेम - नेम केर पूर्ति ॥
वर - बिदाइ यौतुक - कौतुक छल प्रेम - विभव नवनव्य ।
बुझि पर थिक सर्वस्वदक्षिणा यज्ञ - योजना भव्य ॥

६९

भार - दोर डाला - मञ्जूषा दान - दहेज असंख्य ।
मणि - माणिक्य, कनक - हीरक, की की नहि ? शक्य न अक्य ॥
कामगवी चिन्तामणि कल्पतरु क जे जत नहि देय ।
तत दुर्लभ यौतुक मे सजलन्हि, नहि किछु रहल अदेय ॥

७०

आ - शैशव गुरुजन क स्नेह सँ लालित - पालित धन्य ।
सखी सहचरी जे रस - कौतुक भरइत छलो अनन्य ॥
घर - आङन बाड़ी - झाड़ी शुक मृग जत जीवन अंग ।
नैहर संग छुटल उबडुब मन विरह - बाढ़ि दृग गंग ॥

७१

धीरोन्नतहु पिता हिमगिरि उर द्रवित - गलित छथि भेल ।
अश्रु - सागरे माय बनलि छथि दुहिता - विरह क लेल ॥
सखी - सहचरी दृग निर्झर, सरिता बन्धुता अथाह ।
पाबि पावसी बिदा कुमरि कादम्बिनि झरी - प्रवाह ॥

७२

पद छुकि साश्रु प्रणम्य क करइत, स्वजन क विनय - गोहारि ।
सखी - संगिनी अंग लगबइत, शिशु जत नेह दुलारि ॥
प्रेम - आदर क कथा विलपि कत कहइत नाम उचारि ।
कनइत कना रहलि, पुनि सुनि गुनि रहलि कुमरि सुकुमारि ॥

७३

पति - पद निरत रहब, शुश्रूषब सासु - ससुर कें नित्य ।
परिवार क प्रति नेह निबाहब साधब जत गृह - कृत्य ॥
गुरु - अतिथि क आदर, शिशु पालन, धर्म कर्म व्यवहार ।
स्वास्थ्य - स्वच्छता कला - शिल्प सम्मिलित नीति परिवार ॥

७४

दृग मे नोर, हृदय मे योग - वियोग धैर्य अवलम्ब ।
चलित अवन्ती सँ नवदम्पति सदल अवध अविलम्ब ॥
निरवधि सुषमा विभव अनुपमा पुरी अयोध्या आज ।
चिर - उत्सुक जन - जन मन स्वागत समुचित संचित साज ॥

७५

सादर नमन, स्नेह - अभिनन्दन, शुभ आशिष बरिसैत ।
नर - नारी क नयन गोचर नव चन्द्र - चन्द्रिका हैछ ॥
मातृवर्ग केर प्रेमोल्लास - कथा से वर्नि सकैछ ।
सिन्धु क थाहब, गगन क नापब जकरा पार लगैछ ॥

७६

गिरिजा - गिरिश चन्द्रिका - चन्दिर रमा - रमेश विदित उपमान ।
दत्त - वती उपमा पूजित हो श्रद्धा - विश्वास क प्रतिमान ॥
स्मृति संगत वेद क विधान जनु, प्रतिभा सह अभ्यास महान ।
शक्ति युक्त पुरुषार्थ प्रथित जनु, कल्पना कलित वस्तु-विधान ॥

—*—


दत्त-वती
श्री सुरेन्द्र झा सुमन